

तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको सामाजिक, आर्थिक तथा
सांस्कृतिक अवस्थाको एक अध्ययन
(चतुराले गा.वि.स., नुवाकोट)

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र अध्ययन संस्थान अन्तर्गत
त्रि.वि., कीर्तिपुर, समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र केन्द्रीय विभागमा समाजशास्त्र
विषयको स्नातकोत्तर उपाधिको आंशिक आवश्यकता पूरा गर्नको लागि
प्रस्तुत गरिएको
शोध-पत्र

प्रस्तुतकर्ता
सुभद्रा कुमारी तामाङ्ग
२०६५

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र केन्द्रीय विभाग
सिफारिस पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र अध्ययन संस्थान अन्तर्गत त्रि.वि., कीर्तिपुर क्याम्पस समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र केन्द्रीय विभागबाट समाजशास्त्र विषयको स्नातकोत्तर उपाधिको आंशिक आवश्यकता पूरा गर्नको लागि समाजशास्त्र विषयका छात्रा सुभद्रा कुमारी तामाङ्गले मेरो निर्देशन र सुपरिवेक्षमा “तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्थाको एक अध्ययन: (चतुराले गा.वि.स. वडा नं ६, नुवाकोट)” विषयको शोधपत्र तयार पार्नु भएको हो । म उहाँको कार्यप्रति सन्तुष्ट छु र प्रस्तुत यस शोधपत्रलाई आवश्यक मूल्याङ्कन र स्वीकृतिको लागि सिफारिस गर्दछु ।

.....
प्रा.डा. डिल्लीराम दाहाल
समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र केन्द्रीय विभाग
त्रि.वि., कीर्तिपुर
मिति २०६५/११/२०

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र केन्द्रीय विभाग

स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र अध्ययन संस्थान अन्तर्गत त्रि.वि., कीर्तिपुर क्याम्पस समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र केन्द्रीय विभागबाट समाजशास्त्र विषयको स्नातकोत्तर उपाधिको आंशिक आवश्यकता पूरा गर्नको लागि समाजशास्त्र विषयका छात्रा सुभद्रा कुमारी तामाङ्गले तयार पार्नु भएको “तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्थाको एक अध्ययन (चतुराले गा.वि.स. वडा नं ६, नुवाकोट)” विषयको शोधपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

शोधपत्र मूल्याङ्कन समिति

.....

(१) डा. ओम प्रसाद गुरुङ

विभागीय प्रमुख

समाजशास्त्र/मानवशास्त्र

केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर ।

.....

(२) प्रा.डा. डिल्लीराम दाहाल

शोध निर्देशक

.....

(३) डा. ओम प्रसाद गुरुङ

वाच्य परीक्षक

२०६५/११/२०

प्राक्कथन

यो शोधपत्र तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्था (चतुराले गा.वि.स.वडा नं ६, नुवाकोट) विषयमा त्रि.वि.वि. बाट समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विषयमा स्नातकोत्तर तहको आंशिक आवश्यकता परिपूर्ति गर्नको लागि तयार पारिएको हो । यो शोधपत्र तयार पार्न शोध निर्देशक गरी सहयोग गर्नु हुने आदरनीय प्रा. डा. डिल्लीराम दाहालज्यूप्रति म आभारी छु । यो शोधपत्र तयार गर्नका लागि उहाँले व्यस्तताको बावजुद पनि जुन अमूल्य समय, ज्ञान र अनुभव प्रदान गरि मूर्त रूपमा पुऱ्याइ दिनुभयो त्यसको लागि म उहाँप्रति सदा सदा आभारी छु । अन्यथा यो शोधपत्र तयार हुने सम्भव थिएन । यस्तै समाजशास्त्र/मानवशास्त्र विभागका विभागीय प्रमुख डा. ओम प्रसाद गुरुडज्यूबाट शोधपत्र स्वीकृति गरिदिनु भयो । त्यसको लागि म उहाँप्रति हार्दिक आभार व्यक्त गर्दछु ।

यस शोधपत्रका लागि आवश्यक पर्ने तथ्याङ्कहरु संकलनमा सहयोग गर्नु हुने मेरी प्यारी बहिनी शान्ति तामाङ्ग, क्याप्टन महिला मामा र उहाँको सपरिवार, आइतराम दाइ, शेर बहादुर दाइ, सम्भना बहिनी, इन्द्रमाया बहिनी, रुपा दिदी, मैया दिदी, मेरी जानुका बहिनी, बिमला बहिनी तथा सम्पूर्ण उत्तरदाताहरु साथै मलाई विशेष सहयोग गर्ने डा. गोविन्द सुवेदी, मधुर गिरी र डिल्ली तिमिलिसनालाई म मुरी मुरी धन्यवाद दिन चाहन्छु । साथै द्वितीय श्रोत समाग्री उपलब्ध गराई दिने विभिन्न संघ, संस्था तथा विद्वानहरु र कम्प्युटर टाइपिङ्ग गरी शोधपत्रलाई मूर्त रूप बनाइ दिने कार्यमा सहयोग गर्नु हुने सम्पूर्ण मित्रहरुलाई म धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

सुभद्रा कुमारी तामाङ्ग

त्रि.वि., कीर्तिपुर

समाजशास्त्र/मानवशास्त्र

केन्द्रीय विभाग

२०६५

विषयसूची

| | |
|---|----------|
| सिफारिस पत्र | i |
| स्वीकृत पत्र | ii |
| प्राक्कथन | iii |
| विषय सूची | iv-vi |
| तालिका सूची | vii-viii |
| अध्याय १ | १ |
| परिचय | १ |
| १.१. पृष्ठभूमि | १ |
| १.२. समस्याको कथन | ९ |
| १.३. अध्ययनको उद्देश्यहरु | ११ |
| १.४. अध्ययनको महत्व | ११ |
| १.५. अध्ययनको संगठन | २३ |
| अध्याय २ | १२ |
| साहित्य सन्दर्भ | १२ |
| अध्याय ३ | १६ |
| अनुसन्धान विधि | १६ |
| ३.१. अध्ययन क्षेत्रको छनौट | १६ |
| ३.२. तथ्याङ्कको प्रकृति | १७ |
| ३.३. तथ्याङ्क संकलन विधि | १७ |
| ३.४. अन्तरवार्ता | १७ |
| ३.५. अवलोकन विधि | १८ |
| ३.६. अध्ययनको समग्रता | १८ |
| ३.७. जानकार व्यक्तिहरुसंगको अन्तरवार्ता | १८ |
| ३.८. अनुसन्धानको ढाँचा | १८ |

| | |
|--|----|
| अध्याय ४..... | २५ |
| अध्ययन क्षेत्रको परिचय | २५ |
| ४.१ भौगोलिक अवस्थिति र परिचय..... | २५ |
| ४.२ चतुराले ग.वि.स.को घरको बनावट..... | २६ |
| ४.३ धर्म र भाषा..... | २७ |
| ४.४ सामाजिक संघ-संस्थाहरु | २८ |
| ४.५ स्वास्थ्य सेवा | २९ |
| ४.६ यातयात सेवा | ३० |
| ४.७ सिंचाई, कृषि र व्यापार..... | ३० |
| अध्याय ५ | ३१ |
| तामाङ्ग समाजको सामाजिक तथा आर्थिक अवस्था | ३१ |
| ५.१ सामाजिक अवस्था | ३१ |
| ५.१.१ जनसंख्या | ३१ |
| ५.१.२ पारिवारिक बनावट | ३३ |
| ५.१.३ वैवाहिक पद्धति तथा स्थिति..... | ३५ |
| ५.१.४ उत्तरदाताको छोरा र छोरीको विवाह तथा शिक्षा सम्बन्धी धारणा..... | ३९ |
| ५.१.५ साधारण शैक्षिक अवस्था तथा बालबालिकाको शिक्षा | ४१ |
| ५.१.६ स्वास्थ्य | ४५ |
| ५.२ आर्थिक अवस्था | ४७ |
| ५.२.१ प्रमुख पेशा | ४७ |
| ५.२.२ खाद्यन्नको पर्याप्तता..... | ४९ |
| ५.२.३ ज्याला..... | ४९ |
| अध्याय ६ | ५१ |
| तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको आर्थिक अवस्था | ५१ |
| ६.१ महिलाहरुको जग्गाजमिनमा स्वामित्व | ५१ |
| ६.२ महिलाको घरायसी सम्पति (पशुपालन-पेवापात) मा स्वामित्व..... | ५२ |
| ६.३ महिलाका गरगहनामा स्वामित्व..... | ५३ |
| ६.४ महिलाहरुको आयमुलक काममा संलग्नता | ५३ |
| ६.५ उत्तरदाताको परिवारको आम्दानीमा पहुँच | ५४ |
| ६.६ पारिवारिक निर्णय प्रक्रियामा महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति | ५५ |

| | |
|--|-----|
| ६.७ लैङ्गिक श्रम विभाजन बारे..... | ५७ |
| अध्याय ७..... | ६१ |
| तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको राजनीतिक चेतना तथा सहभागिता..... | ६१ |
| ७.१ मतदानमा सहभागिता र निर्णय स्वतन्त्रता | ६२ |
| ७.२ महिलाहरुको घुमफिर गर्ने तथा विभिन्न कार्यलयको प्रयोग गर्ने आत्मविश्वास तथा सक्षमता | ६४ |
| ७.३ महिलाहरुको सञ्चार साधनको पहुँच तथा सम्पर्क | ६६ |
| ७.४ महिलाको हिडडुल गर्ने स्वतन्त्रता बारे उनीहरुको धारणा | ६७ |
| ७.५ महिलाहरुको कानुनी सचेतता..... | ७० |
| अध्याय ८..... | ७५ |
| तामाङ्ग जातिको संस्कृति र महिलाहरुको भूमिका | ७५ |
| ८.१ सांस्कृतिक अवस्था | ७५ |
| ८.२ संस्कारहरु..... | ७८ |
| ८.२.१ जन्म संस्कार..... | ७८ |
| ८.२.२ कर्म संस्कार..... | ७९ |
| ८.२.३ मृत्यू/दाहसंस्कार र घेवा | ८९ |
| ८.२.४ चाडपर्व..... | ९४ |
| ८.३ तीन पुस्ताका महिलाहरुमा आएको सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा कानुनी परिवर्तन..... | ९९ |
| अध्याय ९..... | १०३ |
| सारांश र निष्कर्ष..... | १०३ |
| ९.१ सारांश | १०३ |
| ९.२ निष्कर्ष..... | १०७ |
| सन्दर्भसूची | |
| अनुसूची १ : प्रश्नावली | |
| अनुसूची २ : अध्ययन क्षेत्रका जिल्ला (नुवाकोट) को नक्सा | |
| अनुसूची ३ : अध्ययन क्षेत्रका गा.वि.स.(चतुराले) को नक्सा | |

तालिका सूचि

| तालिका नं. | तालिकाको नाम | पेज नं. |
|------------|---|---------|
| १.१ | तामाङ्गहरु बढी भएको जिल्लागत जनसंख्या, २०५८ | ३ |
| ३.१ | चतुराले गा.वि.स.को जनसंख्याको जातिगत विवरण (२०५८) | १६ |
| | जीवन अध्ययन नं.१ : धर्म र संस्कारले पारेको असर | २८ |
| ५.१ | उमेर र लैङ्गिक आधारमा उत्तरदाताको विवरण | ३२ |
| ५.२ | परिवारको किसिम | ३४ |
| ५.३ | मामाचेली फुपूचेला साइनोमा विवाह | ३६ |
| ५.४ | उत्तरदाताहरुको वैवाहिक स्थिति | ३७ |
| ५.५ | विवाहको उमेर अनुसार उत्तरदाताहरुको विवरण | ३७ |
| ५.६ | विवाहको प्रकार | ३९ |
| ५.७ | लैङ्गिक आधारमा घरपरिवारको शैक्षिक स्तर | ४१ |
| ५.८ | तीन पुस्ता महिलाहरुमा तुलनात्मक शैक्षिक स्तर | ४२ |
| ५.९ | विद्यालय भर्ना हुने बालबालिकाहरुको विवरण | ४३ |
| ५.१० | (६-२४) वर्षभित्रका केटाकेटीहरुको स्कुल जाने र स्कुल छाड्ने स्थितिको विवरण | ४३ |
| ५.११ | पढ्दा पढ्दै विद्यालय छाड्ने बालबालिकको संख्या | ४४ |
| ५.१२ | उत्तरदाताको स्वास्थ्य सेवा प्रयोग विवरण | ४५ |
| ५.१३ | उरदाताहरुको चुरोट पिउने आदतको स्थितिको विवरण | ४७ |
| ५.१४ | पेशा र लिङ्गको आधारमा जनसंख्या विवरण | ४८ |
| ५.१५ | वर्षभरी खाद्यन्न नपुग्ने परिवारले खाद्यन्न परिपूर्तिका लागि अपनाइएका विभिन्न सहायक पेशाका आधारमा परिवारको विवरण | ४९ |
| ५.१६ | ज्यालामा लैङ्गिक भेदभाव | ५० |
| ६.१ | सर्वेक्षण गरिएका घरधुरीको जग्गाको विवरण | ५१ |
| ६.२ | लैङ्गिक आधारमा जग्गाजमिनको स्वामित्व | ५२ |

| | | |
|------|---|----|
| ६.३ | घरमा पालिएका पशुधनको संख्या र स्वामित्वको विवरण | ५२ |
| ६.४ | उत्तरदाता महिलाहरूसँग भएको गरगहनाको मूल्यको विवरण | ५३ |
| ६.५ | आयमुलक कार्यमा महिलाहरूको संलग्नताको विवरण | ५४ |
| ६.६ | परिवारमा आम्दानी कसले राख्छ भन्ने सवालको विवरण | ५५ |
| ६.७ | महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति बारे | ५६ |
| ६.८ | विवाहिता महिलालाई उनीहरूको श्रीमानले घरायसी काममा सहयोग गर्छन् कि गर्दैनन् भन्ने सवालको विवरण | ५७ |
| ६.९ | महिला र पुरुषको कामको बोझको फरक पर्ने बारे महिलाहरूको धारणा | ५९ |
| ६.१० | उत्तरदाताहरूको काम गर्ने औषत समय | ६० |
| | जीवन अध्ययन नं.२ : राजनीतिकमा सहभागि एक महिला | ६१ |
| ७.१ | उत्तरदाताको राजनीतिक सचेतना बारे | ६२ |
| | जीवन अध्ययन नं.३ : गरिबी, अशिक्षाका कारण | |
| | “जसले पैसा बढी दिन्छ उसैलाई भोट दिन्छु” | ६३ |
| ७.२ | उत्तरदाताको विभिन्न विषयमा रहेको आत्मविश्वास | ६५ |
| ७.३ | सञ्चार सम्पर्क अनुसार उत्तरदाताको विवरण | ६६ |
| ७.४ | महिला स्वतन्त्रताको बारे उनीहरूको धारणाको विवरण | ६७ |
| | जीवन अध्ययन नं.४ : धर्म परिवर्तन र बाहिरी संसार | ६९ |
| ७.५ | महिलाहरूमा कानुनी सचेतताको बारे विवरण | ७२ |
| | जीवन अध्ययन नं.५ : कानुनी असचेतना र महिला हिंसा | ७२ |
| ७.६ | छोरीको विवाह र दाइजो सम्बन्धी उत्तरदाताहरूको धारणाको विवरण | ७३ |
| ८.१ | धर्म अनुसार उत्तरदाताहरूको विवरण | ७५ |
| | जीवन अध्ययन नं. तीन पुस्ताका महिलाहरूमा आएको सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा कानुनी परिवर्तन | ९९ |

अध्याय १

परिचय

१.१. पृष्ठभूमि

नेपालको अन्तरिम संविधान २०६३ अनुसार नेपाल एक बहुजातीय, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक धर्मनिरपेक्ष विशेषता बोकेको मुलुक हो । यो देश आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक विविधताले भरिएको छ । २०४८ सालको जनगणना अनुसार ६० वटा जातजातिको उल्लेख गरिए तापनि जनजाति विकास समितिले ५९ वटा जातजातिहरु विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रमा बसोबास गरेका छन् भनी उल्लेख गरिएको पाइन्छ । त्यस्तै २०५८ सालको जनगणना अनुसार नेपालमा १०० जातजाति समूह र अन्य केही अपरिभाषित जात समूह बसोबास गर्दछन् भन्ने तथ्याङ्क उल्लेख गरिएको छ ।

नेपालमा विशेष गरेर मंगोल र आर्यन मूलका दुई समूहका जातिहरुको बसोबास पाइन्छ । नेपालमा पूर्वउत्तरबाट मंगोलियनहरु र दक्षिणपश्चिमतर्फबाट आर्यनहरुको आगमन भएको अनुमान गरिन्छ । मंगोलियन मूलका जातिहरुमा तामाङ्ग पनि एक प्राचीन मुख्य जातिका रुपमा पर्दछ । लिच्छविकालीन अभिलेखहरुमा थुप्रै गैर-संस्कृत शब्दहरु छन् । ती किराँत परिवारका शब्दहरु हुन (तामाङ्ग २०५१, साभार वज्रचार्य २०३०, शर्मा १९८३) ।

पूरातत्वविद डा. एनातोली थाकावलेभ शेन्टेन्कोले २०३४ सालमा बूढानिलकण्ठको पूर्व दक्षिण तिरको धोबी खोलामा पूरातात्विक अवशेषहरुको खोजी गर्दा इसापूर्व ३० हजार वर्षभन्दा अगाडिको ढुङ्गे हतियारहरु फेला परेको तथ्यले काठमाण्डौं उपत्याकामा मंगोलियन जातिका मानिसहरु उत्तरतिबाट आएर आबद्ध भएको कुरा पुष्टि हुन्छ । यसले मंगोल मूलका तामाङ्गहरुको इतिहास अत्यन्तै प्राचीन हुन सक्ने कुरा इङ्कित गर्दछ (तामाङ्ग, २०४५) ।

तामाङ्ग जातिको उद्गम स्थलको बारेमा एकिनसाथ भन्न नसके तापनि तामाङ्ग जाति मंगोल मूलका चिनियाँ भोट वर्मेली भाषा परिवारका सदस्य हुन भन्ने कुरामा सबै विद्वानहरु सहमत छन् । हेगनका अनुसार नेपालमा तामाङ्गको सबभन्दा पुरानो थलो पश्चिम नेपालको त्रिशुली र बूढी गण्डकी नदी बीचको गणेश हिमालको दक्षिणपट्टि हो जहाँ संस्कृति आजसम्म पनि संरक्षित छ (तामाङ्ग २०४५) । तामाङ्गहरु बौद्धमार्गी भए तापनि हिन्दूधर्मबाट प्रभावित भएको पाइन्छ । २०४८ सालको जनगणना अनुसार तामाङ्गहरु ८८.८% आफ्नै भाषा (जनगणना, २०४८) बोल्ने कुरा देखाइएको छ भने २०५८

सालको जनगणनाले ९२% बोल्ने कुरा देखाइएको छ (यादव, २००३) । पोखेलद्वारा तामाङ्ग भाषालाई पूर्वी तामाङ्गी र पश्चिमी तामाङ्गी भनी दुई भागमा विभाजन गरिएको छ (तामाङ्ग, २०५१) ।

तामाङ्गहरूको आफ्नै भाषा लिपि रहेको छ । जसलाई संभोटा लिपि (लामा लिपि) वा तिब्बति लिपि पनि भनिन्छ । यो तामाङ्ग भाषा तिनै तिब्बती महावंशको भोट वर्मेली परिवार अन्तर्गतको एक हिमाली भाषा हो (तामाङ्ग २०५१) । अन्य भोट वर्मेली भाषाको तुलनामा तामाङ्ग भाषाको सहजातीय सम्बन्ध गुरुङ्ग, मनाङ्ग, थकालीसँग नजिक रहेको देखिन्छ (तामाङ्ग, २०५१) ।

यस जातिको ७ वटा जिल्लामा जिल्लागत बाहुल्यता रहेको पाईन्छ । रसुवा, धादिङ्ग, नुवाकोट, काभ्रे, सिन्धुपाल्चोक, मकवानपुर र सिन्धुली जिल्लामा तामाङ्ग जनसंख्या बढी रहेको छ । राष्ट्रिय जनगणना २०५८ अनुसार तामाङ्ग जातिको जनसंख्या १२,८२,३०४ रहेको छ । जसमा महिलाको संख्या ६,४०,९४३ र पुरुषको संख्या ६,४१,३६१ रहेको छ । जसले राष्ट्रिय जनसंख्या ५.६४% भूभाग ओगटेको छ (Dahal, 2003) । विशेष गरी तामाङ्ग जातिहरू काठमाण्डौं उपत्यका र माथि उल्लेखित जिल्लाहरूमा बढी भए तापनि पूर्व मेचीदेखि पश्चिम महाकालीसम्म छिटपुट रूपमा फैलिएको पाईन्छ । यिनीहरूको शारीरिक बनोट तथा भाषा शेर्पा तथा भोटेसँग मिल्दोजुल्दो हुन्छ (तथ्याङ्क विभाग, २०५८) ।

तालिका नं. १.१ तामाङ्गहरु बढी भएको जिल्लागत जनसंख्या २०५८

| क्र.सं. | जिल्लाहरु | तामाङ्ग समुदायको जनसंख्या | जिल्लाको जनसंख्यामा तामाङ्ग समुदायको प्रतिशत | नेपालको जम्मा तामाङ्गको जनसंख्या मध्येको प्रतिशत (१२,८२,३०४) |
|---------|----------------|---------------------------|--|--|
| १. | मकवानपुर | १८५८७४ | ४७.३ | १४.५ |
| २ | काभ्रेपलाञ्चोक | १३०२६१ | ३३.८ | १०.२ |
| ३ | नुवाकोट | १११११२ | ३८.५ | ८.७ |
| ४ | सिन्धुपाल्चोक | ९४६१४ | ३९.५ | ७.४ |
| ५ | काठमाण्डौं | ९२३७८ | ८.५ | ७.२ |
| ६ | धादिङ | ७२७४६ | २१.५ | ५.७ |
| ७ | सिन्धुली | ७०९६८ | २५.६ | ५.५ |
| ८ | रामेछाप | ४३६६९ | २०.६ | ३.४ |
| ९ | ललितपुर | ४००५९ | ११.९ | ३.१ |
| १० | चितवन | ३४७३७ | ७.४ | २.७ |
| ११ | रसुवा | २८५१५ | ६३.७ | २.२ |
| १२ | दोलखा | २७६१९ | १५.७ | २.२ |
| १३ | भक्तपुर | १४७२८ | ६.५ | १.१ |
| | | | | ७३.९ |

Source: Central Bureau of Statistics and United Nations Population Fund, 2003

नेपालमा परापूर्वकालदेखि नै मंगोलोइड, इन्डो आर्यन, ड्राभिडियन (Dravidian) र अष्ट्रो एसियाटिक (Austro Asiatic) समूहका मानिसहरु बस्दै आएका छन् भन्ने कुरामा विद्वानहरु सहमत देखिन्छन् ।

तामाङ्ग जाति नेपालको एक प्राचीन जाति हुँदा हुँदै पनि यस जातिको बारेमा जति अध्ययन तथा अनुसन्धान हुनु पर्ने हो त्यति हुन सकेको देखिदैन ।

राष्ट्रिय जनगणना अनुसार जातजाति नेपालमा जनजातिहरु जनसंख्या ६५,७२,२६५ रहेको छ । जस अनुसार हिमाली क्षेत्रमा ०.७% , पहाडी क्षेत्रमा २५.१% र तराई क्षेत्रमा ७.९% रहेको छ । त्यस्तै भित्री मधेसमा १.१% रहेकोछ (तथ्याङ्क विभाग, २००१) ।

नेपाल दुई बेग्ला बेग्लै भौगोलिक र सांस्कृतिक परम्परा भएका देशहरुबीचमा अवस्थित छ । परापूर्वकालदेखि उत्तर र दक्षिणतर्फबाट अनेक जातजातिका मानिसहरु सदैँ यहाँ बसोबास गर्न आएको पाईन्छ । यसरी विभिन्न क्षेत्रबाट विभिन्न समयमा अनेक जातजातिका मानिसहरु विभिन्न क्षेत्रमा आएर बसोबास गर्ने क्रममा संस्कृति समिश्रण भई जातिय र सांस्कृतिक बाहुल्यतालाई फस्टाउन मलजल पुऱ्याएको पाईन्छ । नेपाल आगमन पूर्व मंगोलियनहरुको पूऱ्यौली थलो सोचुवान र युयानका पहाडी भागहरुमा तथा आर्यनहरुको मध्य सुख्खा भूमिमा बसोबास गरेका थिए भनिन्छ । मंगोलिनहरु सर्वप्रथम २००० वि.सी. तिर उत्तर वर्मा, आसाम, भुटान, सिक्किम तथा पूर्वी नेपाल हुदै हिमालको दक्षिण भागतिर फैलिए ।

आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान ऐन २०५८ अनुसार 'आदिवासी जनजाति' भन्नाले आफ्नो मातृभाषा र परम्परागत रीतिरिवाज, छुट्टै सांस्कृतिक पहिचान, छुट्टै सामाजिक संरचना र लिखित वा अलिखित इतिहास भएको अनुसूची बमोजिमको जाति वा समुदाय सम्भन्नु पर्छ । यस परिभाषा अनुसार निम्न जनजातिहरु सूचिकृत गरिएको छ ।

(क) हिमाली क्षेत्रमा:- भोटे, शेर्पा, थकाली, बाह्रगाउँले, व्यांसी, छैरोतान, डोल्पो, लोर्के, ल्होपा, ल्हामी(सिङसावा), मार्फाली थकाली, मुगाली, ताडवे, थुदुम, तीनगाउँले थकाली, ताप्केगोला, सियार, वालुङ्ग (१८)

(ख)पहाडी क्षेत्रमा:- भुजेल, चेपाङ (प्रजा), दुरा, गुरुङ, हायू, जिरेल, लेप्चा, लिम्बु, मगर, नेवार, सुनुवार, तामाङ्ग(लामा), थामी, राई, वनकरिया, बरामो, छन्त्याल, फ्रि, ह्याल्मो (Hyolmo),कुशभाडिया, कुसुण्डा, पहरी, सुरेल, याक्खा (२४)

(ग) भित्री मधेस:- बोटे, राजी, राउटे, दनुवार, कुमाल, दराई, माभी (७)

(घ) तराई क्षेत्र :- भांगड(उराउ), किसान, मेचे(बोडो), राजवंशी(कोच), सतार(सन्थाल), थारु, धानुक, धिमाल, गनगाई, ताजपुरिया (१०)

इ.सं. १९५० पछि खुल्ला नीति अवलम्बन गरेपछि मात्र मानवशास्त्री तथा समाजशास्त्रीहरुबाट नेपाल जातजाति, भाषा, संस्कृति बारेमा खोज अनुसन्धान, अध्ययन भएका छन् । अबै पनि जाति जनजातिका सूक्ष्म अध्ययन भएको पाइदैन ।

तामाङ्गहरुलाई परम्परागत रूपमा १२ र १८ थरमा विभाजन गरेको पाइन्छ । १२ थरका तामाङ्गहरु शुद्ध र लामा हुन र उनीहरु शिवका सन्तान हुन भन्ने दावा पनि गरिन्छ (तामाङ्ग २०४८,पृ.४९-५१) ।

यिनीहरु १२ र १८ थरमा विभाजित छन् । तर कुन थर १२ मा र कुन थर १८ मा पर्दछन् भन्ने स्पष्ट छैन । किनभने दुबै वर्गमा प्राय एकै किसिमको थरहरु पाइन्छ । १२ जात तामाङ्ग भर्सा र १८ जात तामाङ्ग ठेम्मर^१ हुन भन्ने कसै कसैको धारणा छ । वंशीटार्टले भने जस्तै पूर्वमा अठार जात निश्चित रूपमा भारतीय नेपाली (हिन्दुजात) सँग मिश्रित भएको देखिन्छ (तामाङ्ग, २०५१, साभार वंशीटार्ट १९८९) । तामाङ्ग जातिको उत्पतिको सम्बन्धमा एउटा कथन छ । त्यो कथनको आधारमा ब्राह्मणको छोरा विश्वकर्मा भए । विश्वकर्माको छोरा मय, मयको छोरा तामाङ्ग भए र तामाङ्गका सन्तान आजका तामाङ्गहरु हुन (जोगी २०३८:४५) ।

वास्तवमा महेश्वर अनार्य थिए भन्ने कुरामा सबै सहमत छन् (शर्मा, २०३९) ।

David H Holmberg ले आफ्नो पुस्तक "Order in Paradox: Myth, Ritual and Exchange Among Nepal's Tamang, (1989) मा गर्नु भएको कथा यस प्रकारको छ । एक पटक एउटी गाईको ४ भाइ छोराहरु थिए । मर्ने बेलामा गाईले ४ भाइ छोराहरुलाई डाकेर भने, “मेरो मर्ने बेला भयो । अब म मर्छु । म मरे भने मेरो शरीर काग तथा गिद्धलाई नदिनु ! जनावरलाई पनि नदिनु । ४ भाइले खानु ।” एक दिन आमा गाईको मृत्यू भयो । आमा गाईको आज्ञा अनुसार ४ भाइले मृत गाईलाई काटकुट पारे । सबैले एक भाईलाई आन्द्रा, भूँडी तथा फोक्सो धुन नदीमा पठायो । बाँकी तीन भाइले पखाल्नु-धुन नपर्ने कलेजो मुटु तथा फल मासुहरु काटकुट गरेर पकाए । पाकेपछि जेठोले सूप चाख्यो । अर्को त्यसमा उसको आमाको गन्ध थियो । उसले भन्यो, “कसरी खाने ? यस्मा अर्को आमाको मासु नै छ । यसलाई अरु कसैलाई देऊ !” तीनै जनाले यो कुरामा सहमति जनाए र आ-आफ्नो भाग रुखको फेदमा लुकाए । जब नदीमा गएको भाइ नदीबाट आन्द्रा, भूँडी धोएर सफा गरेर फर्क्यो । सबैले एउटै स्वरमा भने, तिमी धेरै ढिला भयो । हामीले हाम्रो भाग खायौं । तिम्रो भाग त्यहाँ छ खाऊ । नभन्दै त्यो कुरा पत्याएर उसले आफ्नो भाग लिएर खान थाल्यो । पहिलो भाग खाइसकेपछि उसलाई फेरि तीन चोटी पनि थपि दियो । जब उसले चौथो पटक थपेर खाँदै थियो, तीन जना दाजु-भाइहरु कराए, “भयो ! भयो ! तिमिले हाम्रो भाग पनि खायौं ।” उसले भन्यो “अरु खोई त !” त्यसपछि तीनै जनाले आफूले लुकाएर राखेको भागहरु देखाएर भने, “तिमी आमाको मासु खाने मानिस हो ! अब तिमी हामीबाट अलग भयो !” यो छलकपट देखेर उसलाई खूब रिस उठ्यो । उसले क्रुर भएर भन्यो, “हिजोसम्म हामी सबै बराबर थियौं । एकै ठाउँ बस्थ्यौं । सँगसँगै खान्थ्यौं । आज तिमिले छलकपट गर्नुभयो ।” उसले रिसको भोकले आन्द्रा उठायो र त्यसैले एउटालाई हिकार्यो । त्यो आन्द्रा भान्सेको कुममा बेरिएर भुण्डियो ।

आफ्नो काँधमा आन्द्रा भुण्डिएको पाएर भान्से खूब खुशी भयो र भन्यो, “यो मैले आमाबाट पाएको पवित्र धागो (जनै) हो । अब म बाहुन भएँ ।” उसले फेरि भूँडी उठायो र अर्को भाइलाई भटारो हान्यो । त्यो गएर अर्को भाइको टाउकोमा ठोकियो । उ त्यो पाएर खुशी भयो र भन्यो, “मैले फेटा पाएँ । म ठकुरी भएँ । म अब राजा भएँ ।” उसले विचार गन्यो के गर्ने यत्तिकैमा उसले देख्यो एउटा भाइ छाला र सिङ हेरिरहेको थियो । उसले हातले त्यही उठायो र भोकले हान्यो । त्यो पाएर त्यो भाइ पनि खुशी भयो । उसको लागि सिङ हावा फुक्ने ढुङ्गो र छाला होत्रो भयो । त्यो लिएर उसले भन्यो, “म विश्वकर्मा भएँ ।” यसरी त्यहाँ सयपत्रे बाहेक सबै कुरा सिद्धियो । त्यसपछि उसले त्यहाँ उपस्थित तीनै भाइलाई डाक्यो र भन्यो, “यहाँ अब सयपत्रे मात्र छ । यसलाई वेदको रूपमा बाँड्नु पर्छ ।” उनीहरूले सयपत्रेलाई चार भाग लगाएर बाँडेर आ-आफ्नो भाग लिएर चारै जनाले निधो गरे “सबैले बाह्र वर्षसम्म कठोर तपस्या गर्ने । कसैले लोभ नगर्ने, कसैले नढाँट्ने र नछक्याउने ।” यति भनेर ती सबै छुट्टिएर आ-आफ्नो ठाउँमा लागे । यसै बीचमा बाहुनले खोलामा नुहाउन जाँदा बाटोमा वेद हराएछ । त्यो पछि गाईले भेटेर खाएछ । वेद खाएको कारणले बाहुनले गाई खान छोड्यो । ठाकुरीको वेद पनि आगोमा परेर जलेछ । कामी (विश्वकर्मा) ले आगोले जल्ला भनेर आफ्नो वेद बाकसमा राखेको थियो । एक दिन कामी आरानमा बसेर काम गरिरहेको बेला बाहुनले वेद चोरेर लगेछ । त्यो कुरा कामीलाई थाहा भएन ।

पहिलेको सल्लाह अनुसार सबै दाजुभाइ तपस्याको फल कस्तो भयो होला भनेर भेट्ने निधो गरे । सबभन्दा पहिले अरु दाजुभाइले कामीलाई सोधे, “के भयो ? कामी चुप लागेर बस्यो । तीन पटक सोधेपछि मात्र कामीले भन्यो, “मैले कठोर तपस्या त गर्ने । तर मेरो वेद हरायो ।” उसलाई तीन पटक सोध्दा पनि नभनेको हुँदा सबैले भने, “आजदेखि तिम्रो हाम्रो समूहबाट बाहिर भयो । अब तिम्रो हातको पानी खाँदैनौं । तिम्रो हातको भात खाँदैनौं ।” आफूले चोरेको वेद फेरि कामीले चोर्ला भनेर बाहुनले भन्यो, “सानो जातले वेद छुनु र सुन्नु पनि हुँदैन । सुनेमा बहुलाउँछ ।” यसरी गाईको मासु खाने तामाङ्ग भयो । अब वेद तामाङ्ग र बाहुनसँग मात्र बाँकी रह्यो ।

गाईको मासु खाए वापत नै तामाङ्गलाई हिन्दु समाजबाट बाहिर निकालियो भन्ने महत्वपूर्ण निष्कर्ष Holmberg ले आफ्नो पुस्तक "Order in Paradox: Myth, Ritual and Exchange Among Nepal's Tamang, (1989) " मा गर्नु भएको छ । तर हमवर्गले बताउँनु भएको पात्र ४ जना थिए भने मुर्मी (तामाङ्ग) ले आफ्नो विषयमा भन्ने गरेको प्रसिद्ध कथाको सारमा भने ब्रम्ह, विष्णु र महेश्वर नाम गरेका

३ दाजुभाइ मात्र थिए । एक दिन तिनीहरू शिकार खेल्न गएका थिए तर दिनभर जङ्गलमा घुमे पनि कुनै किसिमको शिकार फेला नपारेपछि एउटा निल गाई मारेर पकाए । महेश्वर कान्छो भाइ आन्द्रा भूँडी धुन गाएको बेला ब्रम्ह र विष्णुले आफ्नो भाग गाईको मासु खाइसकेको भनी ढाँटेर महेश्वरलाई मात्र गाईको मासु खान दिएको कथा छ । साथै गाईको मासु खाएकोले महेश्वर तामाङ्गहरूको मुख्य ईश्वर मान्दछन् (तामाङ्ग, २०५१) । त्यसैले महेश्वर अरु दाजुभाइभन्दा तल्लो जातको भएको कुरा गरिएको छ । यस कथामा ३ जना पात्र मात्र उल्लेख गरेकोले विश्वकर्मा भाइको कथा छुटेको पाइन्छ । अठारौँ शताब्दीको प्रथम दशकतिर तामाङ्ग आइपुगेको र नेवारहरूले उपत्यकाबाट धपाएपछि नेपाल र तिब्बतको सिमाना क्षेत्रमा बसोबास शुरु गरेका थिए । होफरको विचारमा तामाङ्गको पूख्यौली थलो तिब्बतको केरुङ क्षेत्र हो । त्यहिबाट तामाङ्गहरू भोटेकोशी त्रिशुली हुँदै धादिङ्गतिर भरेका हुन (तामाङ्ग, २०५५) ।

कसै कसैले तामाङ्गलाई मुर्मी पनि भन्दछन् । जसको अर्थ मुर्= सिमान, मी= मानिस, सिमानको बासिन्दा हुन्छ । तामाङ्ग शब्दले घोडा व्यापारी अर्थ पनि बुझाउँछ । ता=घोडा, माङ्ग=व्यापारी । तामाङ्गहरूको उत्पतिको र थर प्राप्त बारे पनि विभिन्न कथनहरू प्रचलित छ । संसारका सञ्चालनका लागि अहिबुद्धले ३ भिक्षुहरू र भिक्षुहरूको सहायताको लागि दोर्जे ग्याडमबाट डोल्मा, टासी, टुकु नाम गरेकी ३ कन्याहरू यौवनावस्थामा पुगेपछि तिनीहरूलाई बाँदरसँग विवाह गरिदिए । डोल्मा र बाँदरको योगबाट ७ थर तामाङ्गहरू (छिरिङ, बल, थोकर, थिङ, डयासुर, ग्लान र रुम्वा), टासी र बाँदरको संसर्गबाट ६ थर तामाङ्गहरू (ट्योञ्जन, बोम्जन, दोङ, डेके, स्याडवो, जिम्वा), र टुकु र बाँदरको संसर्गबाट १८ थर तामाङ्गहरूको उत्पति भयो (तामाङ्ग, २०५१) ।

तामाङ्गहरूको मुख्य पेशा कृषि हो कृषि बाहेक पशुपालन र कम मात्रमा नोकरी र राजनैतिक क्षेत्रमा पनि छन् । यसमा पनि महिलाको संख्या भन्दा न्यून रूपमा पाइन्छ । कृषि बाहेक पशुपालन जस्तै गाई भैसी, कुखुरा, बाखा पाल्ने गर्दछन् । साथै राडी-पाखी बुन्ने काम पनि गर्दछन् । जसमा बढी महिलाहरू संलग्न हुन्छन् । यिनीहरूको परम्परागत भेषभूषा पुरुषहरूले बाक्लो कपडा (खागी) को दौरा सुरुवाल, टोपी पटुकी बाँधेर कम्मरमा खुकुरी भिर्ने र राडीपाखीको लुकुनी लगाउने भए तापनि आजभोलि आधुनिक लुगा कपडा पनि प्रशस्त लगाउन थालेका छन् । महिलाहरूले फरिया चोली, स्यामा सहित पछ्यौरा, गर-गहनामा कानमा चेप्टे सुन, नाकमा बुलाकी र ठूलो फुली साथै गलामा मुगा र सुनका गरगहना, फरियामा पछिल्लिर पाङ्गदेन पनि लगाउँछन् ।

यिनीहरुको संस्कृतिमा डम्फू नाच, देवता नाच, सरस्वति नाच र गीतहरुमा भोटेसेलो, फावर गीत, देवता गीत आदि छन् । भोज भत्तेर हुँदा गीत गाएर नाच्ने चलन छ । धार्मिक जात्रामा हवाई गीत, देवता गीत, सरस्वति नाच, डम्फूनाच नाचुको साथै गीत पनि गाइन्छ । साइत नपरेमा मरेको लाश

३-४ दिनसम्म पनि लगिदैन । मरेको मान्छेको नाममा “म्हाने” हरु बनाई दिएर मन्त्र सहितको ध्वजा फहराइन्छ । यस्तै गरी तामाङ्ग समुदायमा पनि सुत्केरी, नामाकरण, अन्नप्राशन, छेवर, विवाह र मृत्यूको बेलामा थुप्रै विधिविधानहरु पूरा गर्नु पर्ने हुन्छ । जसलाई संस्कार भन्दछन् (तामाङ्ग, २०५१) ।

आधुनिकीकरणसँगै भित्रिएको पश्चिमीकरणले आफ्नो मौलिक संस्कृति तथा परम्परा ह्रास हुँदै गइरहेको छ । उनीहरुको यस स्थिति आउनमा विगतका शताब्दी भएको अध्याधिक शोषणको कारणले गर्दा आजसम्म पनि यिनीहरु सामाजिक, आर्थिक अवस्था दयानीय नै छ । चेतना र आर्थिक रुपमा सबल नभएको कारणले शैक्षिक क्षेत्रमा पनि पछि परेका छन् ।

आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति अन्य जातिको तुलनामा धेरै नै पिछ्छिएको छ । त्यसमा पनि पुरुषको तुलनामा जुन सुकै जातिका महिलाहरु सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदि हरेक क्षेत्रमा पछि परेको कारणले गर्दा यी असमानतालाई लैङ्गिक दृष्टिकोणले हेर्न जरुरी छ । समाजको अस्तित्व कायम गर्न महिला र पुरुषको समान भूमिका भए तापनि यी दुईबीच थुप्रै असमानता र विभेद पाईन्छ । एउटा राष्ट्रको विकासमा पुरुष जतिकै देन महिलाको पनि रहने हुँदा महिला र पुरुषबीचको असमानताको खाडाल पुर्न जरुरी छ । तर आज पितृसत्तात्मक समाजमा महिलाहरुमाथि दमन र शोषण भईरहेको छ । जसले विकसित समाज निर्माण प्रक्रियामा बाधा उत्पन्न भईरहेको छ । समाजमा विद्वमान सामाजिक, सांस्कृतिक संस्कारहरु पुरुषलाई उच्च र महिलालाई निम्न देखाउने किसिमको पाईन्छ । यसरी समाजमा महिला र पुरुषबीच भएको असमानता तामाङ्ग जातिका महिला पुरुषबीच के कस्तो रहेको छ भन्ने सन्दर्भमा यो शोधपत्र उन्मुख छ । मंगोलियन अनुहारका होचा तर अलि मोटो शरीर भएका तामाङ्ग महिला सिधासाधा खालका हुन्छन् । शिक्षा, स्वास्थ्य क्षेत्रमा निकै पछि परेका यी जातिका महिलाहरुमा चेतनाको अभाव देखिन्छ ।

आर्यन जातिका महिलाका तुलनामा यी जातिका महिला र पुरुषबीच असमानता कम भए तापनि पितृसत्तात्मक समाज र हिन्दुधर्मबाट प्रभावित भएको हुँदा महिला र पुरुषबीच केही असमानताहरु भेट्न सकिन्छ ।

तामाङ्ग जातिमा फुपूचेला मामाचेली विवाह पद्धति पाईन्छ । छोरीको विवाह अन्तिम टुङ्गो गर्ने हक आमामा हुनु, स्वास्नी मानिसको थरमा विवाह पश्चात पनि परिवर्तन नआउनु, कुटुम्ब शब्दावलीमा पनि समान अर्थबोधक हुनु, मर्यादाक्रममा लिने पक्ष भन्दा दिने पक्ष उच्च हुनु, लिने पक्षले श्रम तथा सेवा जस्ता दायित्व पुरा गर्नुपर्ने यी सम्पूर्ण संस्कारगत परम्परालाई हेर्दा आर्यन जातिका महिलाका तुलनामा तामाङ्ग जातिका महिलाका स्थान र भूमिका उच्च रहेको भन्न सकिन्छ ।

तामाङ्गहरु आफ्नो तामाङ्ग सेलो थालनी गर्दा “आम्मैले होई आम्मैले”भन्ने मातृ वन्दनाबाट शुरु गर्छन् । यसले प्राचीन समाज मातृसत्तात्मक थियो भन्ने संकेत दिन्छ । आजसम्म पनि सामुहिक कार्य सम्पन्न गर्दा तामाङ्ग समाजमा स्वास्नी मानिसको स्थान पुरुष सरह र कतिपय घरेलु मामिलामा पुरुष भन्दा पनि निर्णायक रहेको देखिन्छ (तामाङ्ग, २०५१) । तामाङ्ग जातिभित्र जातप्रथा देखिदैन । आमा र दिदीबहिनीहरुका बीचमा आमा र शिशुको सम्बन्ध भएदेखि तेस्रो पुस्तापछि वैवाहिक सम्बन्ध गाँस्न सकिन्छ । तर त्यस्तो अवस्थामा केटा र केटी दुबैका आमाहरुका थर एउटै र समान पुस्ता परेमा विवाह स्वीकारिदैन । सासु बुहारी एउटै थर पर्ने भएमा फुपू-भदैंनीको साइनो लगाएर मात्र विवाह गराउने चलन छ (तामाङ्ग, २०५१) ।

यी सम्पूर्ण कुरा संस्कारगत परम्परा भए तापनि अभ्यासमा यी चलनचल्ती कतिसम्म जीवित रहन सफल छन् भन्ने सन्दर्भमा पनि यो शोधपत्र खोज तथा अनुसन्धान गर्न उन्मुख छ ।

१.२ समस्याको कथन

शताब्दीदेखि एक आदिवासीको रूपमा बसोबास गर्दै आएका विभिन्न जनजाति मध्ये तामाङ्ग पनि एक हो । जनसंख्याको हिसाबले पाँचौं स्थानमा रहेका यी जातिहरु आदिकालबाट नै काठमाण्डौं उपत्यका वरिपरि बसेका भए तापनि नत प्रष्ट रूपमा इतिहास लिखोट छ, नत लिपि, धर्म, संस्कृतिको सम्बर्द्धन भएको छ । नत शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सरकारी क्षेत्रमा अन्य जातिको सरह पुग्न सकेका छन् । तामाङ्ग जातिको सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्थाको बारेमा समाजशास्त्री तथा मानवशास्त्री दृष्टिकोणले अध्ययन गरेको भए तापनि लैङ्गिक सम्बन्धमा भने कम मात्रमा अध्ययन भएको पाईन्छ ।

हरेक समाज सञ्चालनको लागि महिला र पुरुषको भूमिका समान रहने भए तापनि महिलाको भूमिकालाई महत्वपूर्ण रूपमा हेरेको पाईदैन । समाजले जैविकीय रूपमा एउटा केटा वा केटी भएकै

आधारमा उनीहरूको भूमिका निर्धारण गरेको पाइन्छ । जैविकीय भिन्नता बाहेक सम्पूर्ण भिन्नताहरू समाजले नै बनाएका हुन् । यसरी समाजले महिला र पुरुषको भूमिकालाई छुट्याएर महिलालाई विभिन्न अवसरबाट बञ्चित गरिएकोले समाज जुन रूपले अगाडि बढ्नु पर्ने हो, त्यस रूपमा अगाडि बढ्न सकिरहेको छैन । महिला र पुरुषबीच असमानता किन छ भन्ने विषयमा विभिन्न धारणाहरू छन् । त्यस मध्ये लैङ्गिक समानताको धारणा अनुसार पुरुषले महिलामाथि रजाई गर्ने अभिप्रायले आफ्नो अनुकूल महिलाप्रतिको धारणा विकास गरिएको हो भन्ने छ । जनसंख्याको आधा हिस्सा ओगटेको महिला वर्गको उत्थान विना समग्र विकासको कल्पना पनि गर्न सकिन्न । जसको लागि सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाहरू लागी पर्दा पनि यो एउटा जटिल समस्याको रूपमा रहेको पाइन्छ । महिलाहरू प्राय घरभित्रका काममा मात्र सीमित छन् । घर बाहिरका काम जस्तै व्यापार, स्कूल जाने, जागिर गर्ने जस्ता महत्वपूर्ण भूमिकामा महिलाहरूको अत्यन्तै कम पहुँच रहेको अवस्था छ । जसले गर्दा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक दृष्टिकोणबाट महिला र पुरुषबीचमा विभेद छ ।

लैङ्गिक भेदभावका कारणले महिला अझै अगाडि बढ्न सकिराखेका छैनन् । तसर्थ यो अध्ययन तामाङ्ग महिलाहरूको सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति के कस्तो रहेको छ ? भन्ने बारेमा केन्द्रित रहेकोछ । यस अध्ययनका अन्य विशिष्ट प्रश्नहरू निम्न प्रकारका छन् ।

- । तामाङ्ग महिलाहरूको आर्थिक आधार र अवस्था के कस्तो रहेको छ ?
- । तामाङ्ग महिलाहरूमा शैक्षिक अवस्था कस्तो छ ?
- । पुरुष र महिलाबीचको सम्बन्ध कस्तो रहेको छ ?
- । तामाङ्ग जातिका महिलाहरूका घरायसी निर्णय गर्ने क्षमता कस्तो छ ?
- । चाडपर्व र संस्कारहरूमा उनीहरूको के कस्तो स्थान र भूमिका रहेको हुन्छ ?
- । तामाङ्ग महिलाहरूबीच एक पुस्ता र अर्को पुस्ताबीचमा लैङ्गिक धारणा तथा चेतना सम्बन्धी के कस्तो भिन्नता छ ?
- । अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग महिला र पुरुषको श्रम विभाजनमा के कस्तो भिन्नता रहेको छ ?

१.३ अध्ययनको उद्देश्यहरु

यस अध्ययनको मुख्य उद्देश्य नुवाकोट जिल्ला चतुराले गा.वि.स.मा रहेका तामाङ्ग समुदायको सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा लैङ्गिक सम्बन्धको अध्ययन गर्नु रहेकोछ ।

यस अध्ययनका विशिष्ट उद्देश्यहरु निम्न छन् ।

- १) तामाङ्ग समाजमा स्रोत र साधनमाथिको महिला र पुरुषको अवस्थाको बारेमा विश्लेषण गर्नु रहेको छ ।
- २) तामाङ्ग जातिमा भएको परम्परागत सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्कारहरुले महिला र पुरुषबीच के कस्तो विभेदीकरण रहेकोछ भन्ने विषयमा प्रकाश पार्नु रहेको छ ।
- ३) तामाङ्ग महिलाहरुको सम्पत्तिमा अधिकार बारे प्रष्ट पार्नु रहेको छ ।
- ४) तामाङ्ग महिलाहरुका एक पुस्ता र अर्को पुस्ताबीचमा उनीहरुको लैङ्गिक अवधारणा तथा घरायसी निर्णय गर्ने क्षमताको चेतनाको तुलनात्मक अध्ययन गर्नु रहेको छ ।

१.४. अध्ययनको महत्व

यस अध्ययनको महत्वलाई निम्न बुंदामा राखेर हेर्न सकिन्छ ।

- १) तामाङ्ग महिलाहरुको जनजीवनको बारेमा बढी भन्दा बढी जानकारी लिनु नै यस अध्ययनको महत्वको रूपमा रहेकोछ ।
- २) यस अध्ययनले भविष्यमा यही विषयसँग सम्बन्धित अध्ययन गर्न चाहने अनुसन्धानकर्तालाई सन्दर्भ सूची प्राप्त हुन सक्छ ।
- ३) यस अध्ययनले महिलाहरुको अवस्था बारेमा अध्ययन गर्ने भएकोले महिलावादी संघसंस्थाहरु, विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी संघ संस्थाहरुलाई महिला शसक्तिकरणको अभियानमा थप बल प्रदान गर्न सहयोग गर्छ भन्ने आशा लिएकी छु ।

अध्याय २

साहित्य सन्दर्भ

नेपालमा विभिन्न जाति तथा जनजातिहरू उच्च पहाडी, मध्ये पहाडी र तराईका भू-भागमा बसोबास गरेका छन् । हरेकको आफ्नो मौलिक भाषा, धर्म र संस्कृति भएको हुँदा नेपाल बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक, बहुभाषिक, बहुजातीय देशको रूपमा रहेको छ (गुरुङ्ग, १९९६) ।

काठमाण्डौं उपत्यकामा महाचीनबाट आफ्ना शिष्यहरूका साथ आएका मञ्जुश्रीले चोभार डांडा काटी उपत्यकाको पानी बाहिर पठाई बस्ती बसाएको कुरा वंशावलीमा पाईन्छ । यो कथनलाई एशियाका पुरातत्वविद डा.एनातोली याकोब्लेभले शेतेन्कोले २०३४ सालमा बूढानिलकण्ठको पूर्व-दक्षिणतिरको धोबीखोलामा पुरातात्विक अवशेषहरूको खोजी गर्दा इशापूर्व ३०,००० (तीस हजार) वर्षभन्दा अगाडिका मंगोलियन गोवि नमुनाका दुई हतियारहरू फेला पारेका तथ्यले काठमाण्डौं उपत्यकामा मंगोल जातिका मानिसहरू उत्तरतिरबाट आएर आवद्ध भएको कुरा पुष्टि हुन्छ । यसले मंगोल मूलका तामाङ्गहरूको इतिहास अत्यन्त प्राचीन हुन सक्ने कुरा इङ्कित गर्दछ (तामाङ्ग, २०५५) । सन १९३२ मा तत्कालीन राजा त्रिभुवन तथा प्रधानमन्त्री भीम सम्शेरको आदेशले 'भोटे' वा 'लामा'को सट्टामा तामाङ्ग लेख्नु, लेखाउँनु भनेकोले 'तामाङ्ग' लेख्न थालेको हुन भनी हमवर्ग (१९८९)ले बताएका छन् ।

तामाङ्ग प्रायः नेपालको उत्तर-पूर्वी पहाडी भागमा बस्ने एक जाति हो (प्रतिष्ठान, २०५२) । तामाङ्गहरू सामुहिक रूपमा बौद्ध धर्म मान्दछन् । यिनीहरूले मान्ने गरेको बौद्ध धर्म तिब्बतमा चलेको निडमापा सम्प्रदायमा आधारित धर्म हो (शर्मा, २०३९) । खानपानमा पनि उनीहरूको आफ्नै किसिमको धारणा हुन्छ । उनीहरू पाएसम्म कोदो, मकै, गहुँ, जौको पिठो उपभोग गर्न मन पराउँनुको साथै मासु पनि बढी मन पराउँछन् । यिनीहरू मद्य प्रेमी हुन्छन् । यिनीहरूको कार्य मद्य(जाडरक्सी) विना सम्भव सम्पन्न हुँदैन (शर्मा, २०३९) । तामाङ्ग थरको विभाजन यति नै छन् भनेर किटान गर्न सकिएको छैन । तामाङ्गमा १२ थर १८ थर विभाजन भए पनि थरमा खास अन्तर देखिदैन ।

तामाङ्ग परम्परा, रीतिस्थिति र नैतिक सिद्धान्तहरू (धार्मिक बाहेक) मौखिक परम्परामा जीवित छन् । तामाङ्ग समाजमा यस्ता परम्पराहरूको अभिलेख नभए पनि पुरानो पुस्ताले नयाँ पुस्तालाई मौखिक र व्यवहारिक रूपमा हस्तान्तरण गर्दै आएकोले यस्तो नियमको पालना अद्यावधि हुँदैछ, तापनि जीविकाका मूल थलो छोडि परदेश, विदेश वा अन्य मिश्रण समाजमा बस्न जाने प्रवृत्तिले गर्दा नयाँ पुस्ताका

तामाङ्गहरूले पुरानो संस्कृति रीतिथिति भुल्न थालेको पनि पाइन्छ (तामाङ्ग, २०५१) । तामाङ्गको १३४ थरहरूसम्म पनि हुन्छन् (तामाङ्ग, २०५५) । तामाङ्गहरू विभिन्न संस्कार पनि गर्ने गर्दछन् । तामाङ्गहरूले सम्पन्न गर्ने मुख्य संस्कारहरूलाई ३ भागमा विभाजन गरिन्छ ।

) जन्म संस्कार

) कर्म संस्कार (पास्नी, छेवर, विवाह संस्कार)

) मृत्यू संस्कार (दाहा संस्कार) हुन ।

दाहासंस्कारको लागि लामाले साइत निकाल्नुपर्छ । मुर्दालाई जलाउने गर्दछन् भने ठूला लामा, अविवाहित केटा वा केटी मरेमा गाड्ने चलन पनि पाइन्छ । ३ दिनसम्म जुठो बार्ने, नून, तेल नखाने, कपाल खौरने गर्दछन् (तामाङ्ग, २०५५) ।

राणाकालमा तामाङ्गहरूले दरबार बनाउने, बाटो खन्ने, भारी बोक्ने, डाला बोक्ने, हुलाक बोक्ने काम गर्दथे । यस बाहेक दरबारभित्र डोके, हुक्के, छाते, बैठके, द्वारे जस्ता पदहरू तामाङ्गहरूको हुन्थ्यो भने तामाङ्गनीहरू नानी, सुसारे र धाईआमा बन्ने गर्दथे (तामाङ्ग, २०५५) ।

तामाङ्गहरू आफ्नो लोकगीत (तामाङ्ग सेलो) को थालनी गर्दा “आम्मैले होई आम्मैले” भन्ने मातृ वन्दनाबाट शुरु गर्छन् । यसले प्राचीन तामाङ्ग समाज मातृसत्तात्मक अर्थात् मातृ प्रधान थियो भन्ने संकेत दिन्छ । आजसम्म पनि सामुहिक कार्य सम्पन्न गर्दा तामाङ्ग समाजमा स्वास्नी मानिसको स्थान पुरुष सरह र कतिपय घरेलु मामिलामा पुरुषकोभन्दा पनि निर्णायक रहेको देखिन्छ (तामाङ्ग, २०५१) । हिन्दु आर्य समाजमा विवाह अघि कन्याको जात थर बाबुको हुने र विवाहपश्चात् लोग्नेको जात थरमा बदलिन्छ । तर तामाङ्ग समाजमा विवाह सम्बन्धद्वारा स्वास्नीमानिसको थर फेरिदैन, उसको बाबुको थर नै रहन्छ (March,1983, Tamang, 2051) । तामाङ्ग महिलाहरू बुनाइको काम पनि गर्दथे । आफ्नै हातले बुनेका कपडाहरू लगाउँथे साथै यो उपहार स्वरूप दाजुभाइलाई दिन्थे । यसरी आफ्ना हातले बुनेका कपडाहरू दिएर विवाह भएर माइतीबाट छुट्टिएर गएका चेलीहरूले माइतीसँग अगाढ सम्बन्ध स्थापित गर्न चाहन्छन् भने पुरुषहरू लेखाइका मार्फत बुद्ध धर्मका ग्रन्थ पढेर लामा बन्न चाहन्छन् । बुनाइसँग सम्बन्धित प्रतीक कपडा र लेखाइसँग सम्बन्धित प्रतीक पुस्तक दुवै महत्वपूर्ण वस्तुहरू हुन । यी प्रतीकहरू लैङ्गिक भिन्नताको बारेमा मात्र नभइकन दुई लिङ्गहरूबीचको आपसी सम्बन्धलाई प्रष्ट पार्दछ । पुरुषको लेखाईले वंश तथा जातिको स्थिरता देखाउँछ भने महिलाको बुनाइले पुस्ता पुस्तामा सिप

निरन्तरता दिनुको साथै यस जातिका महिलाहरु माइती र घरसँग सम्बन्ध सदा समुधुर राख्न सिपालु हुन्छन् भन्ने क्याथ्रिन मार्क (१९८३) को भनाइ रहेको छ ।

तामाङ्ग महिलाहरु उच्च जातीय हिन्दु महिलाहरुले भन्दा बढी स्वतन्त्रता र शक्ति उपभोग गर्दै आएका छन् भनी Devid Holmberg ले Order in Paradox.... (1989) मा बताएका छन् । तामाङ्ग जातिमा पितृसतात्मक समाज भए पनि महिलाहरुको भूमिका गहन भएको कुरा Fricke ले Himalayan Household (1986) मा उल्लेख गर्नु भएको छ ।

स्वास्नीमानिसको थर परिवर्तन नहुँने हुँनाले स्वास्नी मानिसको मृत्यू भएमा त्यसको दाह संस्कार गर्नको लागि उनको माइतिको उपस्थिति अनिवार्य मानिन्छ । उपस्थिति नगराएमा आफ्नो चेलीको लाश खोज्ने हक माइतीमा सुरक्षित रहेको मानिन्छ भने मृत्यू उपरान्त खरानी समेत पनि माइती खलकलाई बुझाउनु पर्ने रीतिथिति अद्यवधि पाईन्छ (तामाङ्ग, २०५१) । निश्चित परिवार तथा कुटुम्बबाट स्वास्नी ल्याएकै कारणले गर्दा लोग्ने मानिसमा ऋणको दायित्व उत्पन्न हुन्छ । त्यसैले विशेष कर्मकाण्डका अवस्थाका साथ साथै ऋतु अनुसारको श्रम तथा सेवा प्रदान गर्नु पर्छ । अझ आस्याड स्याडबोको घरपरिवारका सदस्यको शिब्दा भोर्सी (लास उठाउने) दाहासंस्कार तथा घेवा (अन्त्येष्टि) कार्यमा अनिवार्य ठानिन्छ । यहि चेली साटासाट विवाह सम्बन्ध भएमा यस्तो श्रम सेवा र दायित्व पारस्परिक (reciprocal) हुन जान्छ (तामाङ्ग, २०५१) ।

वैवाहिक सम्बन्धपछि एउटी तामाङ्ग महिलाले दोहोरो भूमिका निर्वाह गर्दछन् । आफ्नो माइतीपक्षबाट दाजुभाइसँग र वैवाहिक सम्बन्धबाट श्रीमानसँग दोहोरो भूमिका निभाउँछन् । यसरी तामाङ्ग जातिमा वैवाहिक सम्बन्धपछि पनि महिलाले आफ्नो थर लेख्न पाउने, मृत्यू संस्कारमा माइतीपक्षको उपस्थिति अनिवार्य हुने, ज्वाँइले ससुरालीपट्टि एउटा असल अभिभावकको भूमिका निर्वाह गर्नु पर्ने हुन्छ । यसरी तामाङ्ग महिलाको स्थान दुबै परिवारको बीचमा रहेर मध्यस्थकर्ता र सूचना वाहकको भूमिका खेल्दछन् (Holmberg, 1989) ।

तामाङ्गहरुको भौगोलिक अवस्थिति, वातावरण र संस्कृति, जनसंख्या र घरेलु संरचनामा पारेको प्रभावलाई अध्ययन गर्दा, तामाङ्ग महिलाहरुको घरायसी खानपानमा ठूलो र प्रभावशाली भूमिका रहेको छ । तामाङ्गहरुको जीवनमा सबैभन्दा महत्वपूर्ण भूमिका वैवाहिक सम्बन्धले खेलेको हुन्छ । तामाङ्ग बस्तिमा छोरा होस भन्ने चाहना भएता पनि छोरा र छोरीमा ठूलो भेदभाव रहेको पाइदैन (Fricke, 1993) ।

यसरी माथि समेटिएका अध्ययनहरुमा तामाङ्ग जातिहरुको अध्ययनको आधारलाई केलाउँदा तामाङ्ग जातिका बारेमा लेखक तथा अनुसन्धानकर्ताहरुले धेरै पुस्तक तथा लेखमा प्रस्तुत गरिएका संस्कृति तथा संस्कार अभै पनि यस गाउँका तामाङ्ग जातिले व्यवहारमा लागु भइरहेका छन् । तामाङ्ग जातिले आफ्नो संस्कार तथा संस्कृतिलाई पुरानो पुस्ताले नयाँ पुस्तामा मौखिक र व्यवहारिक रुपमा हस्तान्तरण गर्दै आएको हुनाले अद्यावधि जीवित रहेको पाइन्छ । कति चलनचल्तीहरु लोप भएर गए भने कति चलनचल्तीहरु विधिको रुपमा भए पनि मनाउँदै आइरहेका छन् । यसरी अनुसन्धान कर्ताहरुले तामाङ्ग जातिको अध्ययनमा सांस्कृतिक, भौगोलिक, वातावरणीय, महिलाको स्थान जस्ता कुराहरुलाई समेट्न विभिन्न सिद्धान्त (Theory) र अवधारण (Approach) प्रयोग गरेका भए तापनि आजका आधुनिक युगको परिवर्तित समयमा शिक्षा, सञ्चार, राजनैतिक व्यवस्था, विभिन्न जातजातिको सम्पर्कबाट यी जातिका महिलाहरुका पुस्ता अन्तरमा पर्ने सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक साथै निर्णय प्रक्रियाको प्रभावको बारेमा पर्याप्त अध्ययन नभएको स्थितिमा मेरो अध्ययनले यी कुराहरुलाई समेट्न खोजिएको छ ।

अध्याय ३ अनुसन्धान विधि

३.१. अध्ययन क्षेत्रको छनौट(Selection of Research Sites)

नुवाकोट जिल्लामा ६१ गा.वि.स. र १ नगरपालिका छन् । यस जिल्लाको जम्मा २८८,४७८ जनसंख्या मध्ये तामाङ्गको जनसंख्या १,११,११२ छ अर्थात जिल्लाको ३८.५% तामाङ्ग जातिको बसोबास छ । त्यस मध्ये चतुराले गा.वि.स.एक हो । चतुराले गा.वि.स. कुल जनसंख्या ३६१३ रहेको छ त्यसमा तामाङ्ग जातिको संख्या १७१७ रहेको छ ।

तालिका ३.१. चतुराले गा.वि.स.को जनसंख्याको जातिगत विवरण (२०५८)

| जाति | संख्या | प्रतिशत |
|----------|--------|---------|
| बाम्हण | ७६७ | २१.२ |
| क्षेत्री | ३१९ | ८.८ |
| तामाङ्ग | १७१७ | ४७.५ |
| नेवार | ४९४ | १३.७ |
| कामी | १५१ | ४.२ |
| दमाई | १०७ | ३.० |
| अन्य | ५८ | १.६ |
| जम्मा | ३६१३ | १००.० |

Source: Population Census 2001 (VDC/Municipality Level Data)

यो अध्ययन गर्नको लागि नुवाकोट जिल्लामा रहेको चतुराले गा.वि.स. को बडा नं. ६ लाई छानिएको थियो । उक्त वडामा तामाङ्ग जातिको मात्र बस्ति छ । यो गा.वि.स. नुवाकोट जिल्लाको विदुर सदरमुकानबाट अन्दाजी २० कि.मी.पूर्वमा छ । रानीपौवाबाट ९ कि.मी. उत्तर-पश्चिममा अवस्थित छ । यो जिल्ला काठमाण्डौं जिल्लासँगै जोडिएको छ । त्यसमा पनि चतुराले गा.वि.स. राजधानीबाट भण्डै ३० कि.मी. मात्र टाढा रहेको भएता पनि यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य र यातयात आदि जस्ता कुरा आशातित रूपमा विकसित हुन सकेको छैन । यसमा पनि तामाङ्ग समुदायका महिलाहरुको अवस्था भने अन्य आर्यन जातिका महिलाहरुको तुलनामा बाहिरी क्षेत्रको सक्रियतामा अलि न्यून देखिन्छ ।

विभिन्न ठाउँमा विभिन्न जातिका महिलाहरुको अध्ययन अनुसन्धान भएका छन् । तर राजधानीको नजिक भएर पनि यस ठाउँका महिलाहरु आर्यन जातिका महिलाका तुलनामा कम टाढाबाटै छन् । यसरी यस समाजका महिलाहरु सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक रूपमा पछाडि परेको र

हालसम्म यहाँका महिलाको बारेमा अनुसन्धान नभएको देखिन्छ । अनुसन्धानकर्ता स्वयं आफै यसै ठाउँमा जन्मिएको तामाङ्ग महिला नै भएको हुँदा बाल्यकालदेखि नै यस क्षेत्रसँग परिचित भएकोले तथ्याङ्क संकलन गर्न सुविधा हुने हुँदा यस ठाउँलाई अध्ययन गर्न छानिएको थियो ।

३.२. तथ्याङ्कको प्रकृति (Nature of Data)

यस अध्ययनको लागि निर्धारित गरिएको उद्देश्यहरू परिपूर्ति गर्नका लागि विभिन्न प्रकारका तथ्याङ्कहरूको संकलन गरिएको छ । विशेष गरेर यस अध्ययनमा प्राथमिक तथा द्वितीय दुवै प्रकारका तथ्याङ्कहरू संकलन गरिएको छ । प्राथमिक तथ्याङ्कहरू कार्य क्षेत्र सर्वेक्षणबाट लिईएको छ भने द्वितीय तथ्याङ्क सम्बन्धित विभिन्न शोधपत्र, पुस्तक, लेखरचना एवं पत्रपत्रिकाहरूको माध्यमबाट उपलब्ध गरि अध्ययन गरिएको छ ।

३.३. तथ्याङ्क संकलन विधि (Procedure of Collection of Data)

यस अध्ययन अनुसन्धान गर्नको लागि प्राथमिक तथा द्वितीय तथ्याङ्क विधि अपनाइएको छ । प्राथमिक तथ्याङ्क संकलन विधि अन्तर्गत उत्तरदाताहरूसँगको अन्तरवार्ता, अवलोकन तथा जानकार व्यक्तिहरू जस्तै ताम्बा(इतिहासकार) र गाम्बा(बूढापाका)सँगको अन्तरवार्ता समावेश गरिएको छ । त्यस्तै गरी द्वितीय तथ्याङ्क संकलन अन्तर्गत सम्बन्धित विभिन्न शोधपत्रहरू, पुस्तक, लेखरचना, एवं पत्रपत्रिकाहरूको माध्यमबाट उपलब्ध गरी अध्ययन गरिएको छ ।

३.४. अन्तरवार्ता (Interview)

यस पद्धति मार्फत उत्तरदाताहरूसँग अर्धसंरचित अन्तरवार्ता, प्रश्नसूची माध्यमबाट सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पक्षसँग सम्बन्धित तथ्याङ्क जस्तै (१) जनसांख्यिक स्थिति (२) तामाङ्ग जातिका महिलाहरूको आर्थिक स्थिति (३) सामाजिक स्थिति (४) राजनीतिक चेतनाको स्थिति (५) महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति (६) कानुनी चेतना बारे र (७) समुदायको जानकार व्यक्तिहरूसँगको अन्तरवार्ता आदि विशेष शीर्षकहरूमा आधारित भएर प्रश्नावलीहरू समावेश थिए । (हेर्नुहोस, अनुसूची १ प्रश्नवली)

सामाजिक पक्ष अन्तर्गत तामाङ्ग समाजको जनसंख्या, परिवारको बनावट, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, सञ्चार, स्रोत र साधनमाथिको पहुँच, महिला स्वतन्त्रता, निर्णय प्रक्रियामा महिला र पुरुषको सहभागीता सम्मान आदिका बारेमा उत्तरदाताहरूसँग अन्तरवार्ता लिई तथ्याङ्क

संकलन गरिएको थियो । आर्थिक पक्ष अन्तर्गत पेशा, परिवारको भूस्वाभित्व, भूमिदत्ता, खाद्यन्नको पर्याप्तता, ज्याला, कामको बोझ आदिको बारेमा उत्तरदाताहरूसँग अन्तरवार्ता लिई तथ्याङ्क संकलन गरिएको थियो ।

३.५. अवलोकन विधि (Observation)

सहभागी अवलोकन विधिमाफत तथ्याङ्क संकलन गर्दा गाउँ बस्तिमा प्रत्यक्ष देखिने सूचनाहरू जस्तै: उनीहरूको रहनसहन, भेषभूषा, सरसफाई, खानपान, घरको बनावट आदिको बारेमा जानकारी लिइएको छ । यस विधिबाट अनुसन्धानकर्ताको अनुभव र सूचनाहरू संकलनबाट निष्कर्ष लेखनमा ठूलो सहयोग पुगेको थियो ।

३.६. अध्ययनको समग्रता (Universe of the Study)

अध्ययन क्षेत्र चतुराले गा.वि.स. वडा नं. ६ मा ६० घर तामाङ्गहरूको मात्र बस्ति छ । सबै तामाङ्ग घरधुरी अध्ययनको समग्रतामा समेटिएको छ । लैङ्गिक सम्बन्धी चेतना तथा धारणामा महिलाहरू समेतमा पनि एक पुस्ता र अर्को पुस्ताबीचमा फरक पर्छ कि पर्दैन भन्ने जानकारी लिन सासु वा बुहारी र आमा वा छोरीसँग अन्तरवार्ता लिइएको थियो ।

३.७. जानकार व्यक्तिहरूसँगको अन्तरवार्ता (Key Informant Interview)

यस तथ्याङ्क संकलन विधि माफत तथ्याङ्क संकलन गर्न जाँदा यस समुदायसँग सम्बन्धित सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष जस्तै संस्कारहरू, रीतिरिवाज, चाडपर्वहरू एवं परम्परादेखि चल्दै आएका चालचलनहरूको बारेमा जानकार व्यक्तिलाई विशेष अन्तरवार्ता लिई यस सम्बन्धी तथ्याङ्क संकलन गरिएको थियो ।

३.८ अनुसन्धानको ढाँचा (Research Design)

यस अध्ययनमा अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजका महिलाहरूको सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक अवस्था बारेमा जानकारी प्राप्त गर्नको लागि प्राप्त तथ्याङ्कलाई व्याख्या गर्न अन्वेषणात्मक तथा विवरणात्मक ढाँचा प्रयोग गरिएको थियो । अनुसन्धान क्षेत्रमा अनुसन्धानकर्ता आफै उपस्थित भई उक्त समाजका महिलाहरूको सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक अवस्थाका बारेमा जानकारी हासिल

गरिएको थियो र उक्त जानकारीलाई अझ बुझ्न सजिलो होस भन्ने उद्देश्यले तालिकाको माध्यमबाट व्याख्या गरिएकोछ ।

३.९. जीवन अध्ययन(Case Study)

यस अध्ययनमा तीन पुस्ता तामाङ्ग महिलाहरुको जीवनमा अध्ययनलाई प्रस्तुत गरिएको छ । जसमा उनीहरुको सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षिक अवस्थामा साथसाथै निर्णय प्रक्रियामा कसरी परिवर्तन आएको छ भन्ने विषयमा उनीहरुको जीवन अध्ययन (Case Study) गरिएको छ ।

३.१०. अध्ययनको सिमा (Limitation of the Study)

हरेक अध्ययन अनुसन्धानहरु आ-आफ्नै किसिमका सिमाहरुले बाँधिएका हुन्छन् । त्यसैक्रममा यस अध्ययनका पनि केही सिमाहरु रहेका छन् । यो अध्ययन स्नातकोत्तर उपाधिका लागि गरिएको शोधपत्र भएकोले यसमा समय, श्रोत्र र आर्थिक अभावका कारण अध्ययन क्षेत्रका सम्पूर्ण श्रोत्र व्यक्तिसँग सम्पर्क गर्न सकिएको छैन । यो अध्ययन चतुराले गा. वि. स. स. को माँझगाउँमा मात्र गरिएकोले नेपालका अन्यत्र ठाउँमा बसोबास गर्ने तामाङ्ग समाजको लागि लागु नहुन पनि सक्छ ।

अध्ययनका क्रममा बटुलिएका अनुभव

अध्ययनका क्रममा अध्ययन क्षेत्रमा स्थलगत भ्रमणबाट विभिन्न अनुभवहरु बटुलिएका छन् । शिक्षित जनसंख्या ज्यादै न्यून भएको कारण प्रश्न सोध्ने क्रममा निकै कठिनाई भोग्नु परेको थियो । कतिपय गोप्यकुरा अरुले थाहा पाउँछ भन्ने डरले साधरण प्रश्न गर्दा पनि उत्तर दिन गाह्रो मानेका थिए । विशेष गरेर महिलाहरुको सम्पति र पेवापातका बारेमा गोप्य राख्न चाहे । आफूले कमाएका सम्पतिका बारेमा भनेमा गाउँका अन्य मानिसहरुले थाहा पाउँछ भन्ने त्रासले सम्पतिका बारेमा खुलस्त भन्न नचाहेको स्थिति पनि भेटियो । कतिपय ठाउँमा नचिनेर आजभोलिका NGO तथा INGO ले गरेको अनुसन्धानले मागी खाने भाँडो भनी ठानेर रिसाएर उत्तर दिन नमानेको स्थिति पनि आयो । एक दिन म दिउँसो खाना खाएर प्रश्नावली भर्न गएकी थिएँ । एउटी महिलासँग प्रश्न गरिरहेको बेला एकजना केटाले मसँग सोध्यो “दिदी यो कागजमा भरेर तपाइ के गर्नु हुन्छ ?” मैले भने यो मेरो पढाइको लागि हो । मैले यसबाट सानो एउटा किताब लेख्नु पर्छ । यसो भन्दा उसले भन्यो यस बापत तपाईंले कति पैसा

कमाउनुहुन्छ । हामीलाई भने सित्तैमा सोध्नुहुन्छ । तपाईं चाहि काठमाण्डौंमा लगेर पैसा कमाउनुहुन्छ भनी नमीठो वचन लगाए । मैले भने,“ भाइ हेर यो पढाइ सम्बन्धी कुरा हो । विश्वविद्यालयको पढाइ सकिने बेला प्राय सबैले यस्तो प्रश्नावली भरेर सानो किताब तयार पार्नु पर्दछ । यो हाम्रो व्यक्तिगत हुनाले पैसा केही आउँदैन । वरु हाम्रै खर्च गर्नु पर्ने हुन्छ । यसबाट सफल भएमा मार्कसिट पाइन्छ । अनि मात्र हाम्रो पढाइ पुरा हुन्छ । आफ्नो माइती गाउँमा आफ्नो ठानेर आएकी चेलीलाई दाजुभाइले सहयोग गर्नुपर्ने ठाउँमा यसरी अविश्वासले वचन लाउनु के राम्रो हो र !” भनेपछि त्यो केटा नरम भएर भन्यो, “दिदी हामी नपढेको मान्छेलाई यस्ता कुरा के थाहा छ र ! भविष्यमा छोराछोरीले पढे भने थाहा पाइएला नि !” भन्दै माफी मागेर आफ्ना बाटो लाग्यो ।

कतिपय ठाउँमा जहाँ आफूलाई चिन्दैनथे । त्यहाँ सधैं आफ्नो बाबुको नामबाट परिचय दिदै आफू विद्यार्थी भएको र आफ्नो अध्ययन पुरा गर्नको लागि अनुसन्धान गर्न आएको कुरा राम्ररी बताएपछि मात्र खुलस्त बोल्न मानेको थिए । यसरी आफ्नो अनुसन्धानको सिलसिलामा शोध कार्यको महत्वलाई दर्शाउँदै ज्यादै कुशलतापूर्वक उत्तरहरु दिन अभिप्रेरित गराई उनीहरुका मनका कुराहरुलाई फुकाएर आफ्नो जिज्ञासा पूर्ण गर्ने कार्यमा सक्षम भएँ ।

स्थलगत भ्रमणका पहिलो दिन म आफ्नो शोधपत्रको लागि म बसेको अलि माथितिर हिंडेको थिएँ । त्यहाँ एक जना बूढो अन्दाजी ६०-६५ वर्षका मान्छे, खूब जँगिदै कराइरहेको थियो । किन यसरी कराइरहेको होला भन्ने कुरा सोध्दा मेरो हातमा प्रश्नावली देखेर यस्ता मान्छे त कति आउँछन् केही गर्ने होइन भन्दै पो जङ्गिरहेको रहेछ । त्यो बूढो मान्छेले अलि अलि रक्सी पनि खाएको रहेछ । हाम्रो हातमा प्रश्नावली देखेर मलाई र मेरी सहयोगी बहिनीलाई खूब गाली गन्यो । हामी हाँसी मात्र रह्यौँ । बूढाले भन्यो, “यस्ता कागज हातमा लिएर भर्न आउने यहाँ धेरै आए । तर गाउँमा केही विकास भएकै हैन । आफ्नो दुःख आफैसँग छ । बेकारमा के सोध्नुहुन्छ ? हामीले आफ्नो कुरा भनेर के पाउँछौ र ! बेकारमा अल्मलाएर मात्र राख्नुहुन्छ ।” भन्दै गनगन गरिरह्यो । हामी चुपचाप सुनिरह्यौ । धेरै बेरपछि बूढाले सोध्यो, “ए नानी पोहोर पनि एउटी कुमाइकी नातिनी र नातिनी ज्वाँइले यस्तै भरेर लगेको थियो के भयो थाहा छ ? नानी ! कुमाइकी नातिनी ज्वाँइको घर काठमाण्डौंमा छ रे ! त्यो नानी त हाम्रो बहिनी पर्छ उसको र हाम्रो एउटै थर हो । हामी पनि थिङ्ग हो त्यो बहिनी पनि थिङ्ग हो ।” मैले भने “दाइ मलाई चिन्नु भएन ?” बूढाले भन्यो, “अँ हँ !” मैले भने, “पोहोर आउने मैत होनि ।” त्यसपछि बूढाले राम्ररी हेरेर भन्यो, “ओ हो ! बहिनी पो रहेछ । धेरै गाली गरें । रिसाउनु भयो होला । माफ गर्नुस

नानी चिनिन । यस्तै भर्ने कति आउँछन् । त्यस्तै होला भनेर गाली गरेको त बहिनी पो रहेछ । अनि उसले नम्र भएर सोध्यो, “के कामको लागि हो? मैले भने यो मेरो आफ्नो पढाइको लागि हो । अन्त नचिनेको गाउँमाभन्दा आफ्नो गाउँमा सजिलो हुने हुनाले यहाँ आएको कुरा भनेपछि बहिनी राम्रो गरेछौ । तामाझको छोरी भएर पनि पढेछौ । यहाँ तिमी जति पढेको कोही छैन । यो गाउँको इज्जत राख है ।” भन्दै उनकी बुहारीलाई प्रश्नावली भर्ने भनेर बोलायो । यसरी धेरै ठाउँमा समस्या र चुनौतिको सामना गर्नु परेको घटनाहरु अझै पनि भेरो मस्तिष्कमा स्मरण भइरहन्छ ।

मिति २०६४/७/२० मेरी सहयोगी बहिनी र म प्रश्नावली भर्ने भनेर एउटा किराना पसलमा गएका थियौं । त्यहाँ एक जना महिला बसिरहेकी थिइन । हाम्रो हातमा प्रश्नावली देख्ने वित्तिकै उनी त्यहाँबाट उठेर हिडिन । मैले आफ्नो पढाइको लागि यस गाउँको बारे एउटा सानो किताब लेख्नुछु । त्यसैले तपाइहरुसँग केही कुरा सोध्नुं भनेर आएकी हुँ भनें । उनले भनिन, “मलाई केही आउँदैन, तपाईंलाई मन लागेको लेखेर लैजानुस । मत नपढेको मान्छे, केही पनि जान्दैन” भनेर रुठो जवाफ दिइ अन्य कामतर्फ लागिन । धेरै पटकसम्म बोल्न खोज्दा पनि कुरा टारी रहिन । धेरै बेरसम्म उनी बोल्छिनकी भनी प्रतिक्षा गरिरहें । काममा अल्मलिएको जस्ता बहाना गर्दै यताउति हिडिरहिन । तर मेरो प्रतिक्षाको वास्ता गरेन । घरका अरु सदस्यले पनि केही बोल्न नचाहेपछि मैले धेरै बेरसम्म उहाँसँग घरायसी गफ गरिरहें । धेरै कुराले भुलाएँ । पसल हुनाले चिया विस्कुट पनि खाएँ । विस्तारै गफगाफ गर्दा गर्दै प्रश्नावली नलिइ यतिकै मेरा सम्बन्धित प्रश्न गफ गफमा नै सोधें । उनले पनि विस्तारै जवाफ दिदै गइन । उसले भनिन, “केही समय अगाडि पसलमा भएका मानिसहरु हामीलाई राम्रो चिन्ने गाउँका मानिसहरु हुन ।” तिनीहरुका अगाडि आफ्नो सम्पति र आमदानी बारे भन्न र मनको कुरा खोल्न नचाहेकोले कुरा टारेको पनि बताइन । मैले भने, “ठिकै हो हामी तपाईंलाई पखन्छौं । अब तपाईंले हामी चिनेको मानिससँग पनि किन शंका र संकोच मान्नुहुन्छ ? हामीबाट त तपाईंको केही कुरा पनि बाहिर जाँदैन । हामी त टाढाबाट घरको सबै काम छाडेर पढाइको लागि भनेर यहाँसम्म धाएर आएकी हुँ । के गर्नु हाम्रो पनि आफ्नै समस्या छ । हुनत तपाइको पनि समस्या त रहेछ । तैपनि हामी यति टाढाबाट आएको हुनाले सहयोग गरिदिनु प्योनि !” भनी हाँसी हाँसी आफ्नो दुःखसो पोखेपछि उनले भनिन, “तपाइले भनेको ठीकै हो आफू त नपढेको मान्छे कुरा बुझ्दैन । त्यसैले यस्तो के गर्न आएको होला भनेर डर लाग्छ । के भन्न हुने, के भन्न नहुने भनेर अल्मलिएको हो । नरिसाउनोस् है !” भनेर भनिन । मैले भने, “हामी त रिसाउँदैनौं । तपाईंहरु पनि हामी आएकोमा झन्झट नमान्नुस । हामी सधैं तपाईंहरुलाई दुःख दिदैनौं

। तपाईंहरूको नानी पनि ठूला भएर विश्वविद्यालयमा पढ्ने भएपछि सबै कुरा बुझ्नु हुनेछ । त्यसैले नानीहरूलाई राम्रो पढाउनुहोस है ।” भनेर हामी त्यस पसल राखेको घरबाट हामी अर्को घरतर्फ लाग्यौं । यसरी कुनै कुनै घरमा त प्रश्नावली भर्न त ३-४ घण्टासम्म पनि लागेको थियो । गाउँका सिधासाधा मानिसलाई फट्टाहाहरूले विभिन्न समस्यामा पारेर तर्साएका हुनाले राम्रा र नराम्रा सबै मानिसदेखि शंकाले हेर्ने र बोल्न डराउँछन् ।

तेस्रो दिनको दिउँसोको कुरा हो । म र मेरी सहयोगी बहिनी प्रश्नावली भर्न बसेको घरबाट अलि तलतिर भ्रम्यौं । बाटोको घर नजिकै एउटी महिला झण्डै ३१-३२ वर्षकी थिइन । ती महिला सानो आकारको तर लामो खालको सुकुल बुनिरहेकी थिइन । उनलाई बहिनीले प्रश्नावली सोध्न जाँदा नबोली सुकुल बुन्न छाडेर उनी त्यहाँबाट सुकुल नै बोकेर अर्कै ठाउँमा गएर बुन्न थालिन । त्यहीं गएर बहिनीले कुरा गर्न खोज्दा त्यहाँबाट पनि हिडिन । यसरी हिडेपछि बहिनीले भनिन, “दिदी यो आइमाई त लोग्नेले पैसा कमाएकोले धेरै मात्तेकोछ । रानीपौवामा पनि घरेडी किनिसकेको छ ।” मैले हेरे ती महिला साच्चै अरु महिलाभन्दा अलि भिन्न थिइन । भेषभूषा, बोलीचाली, सरसफाई र गरगहनामा पनि सिक्री, झुम्का, औंठी लगाएकी थिइन । मैले आफैले उसको विचार जान्न खाजें । म उतिर विस्तारै गएँ र सोधें, “यो सुकुल केको लागि बुन्नु भएको ? कति राम्रो बुन्नुहुँदोरहेछ । हजुरको घर कहाँनेर हो नि ?” भनेर विस्तारै गफमा भुलाएँ । त्यसपछि ती महिला विस्तारै बोल्न थालिन । बोल्दै जाँदा मेरै थर पो रहेछ । मैले भने ओ हो ! हजुर त मेरो दिदीबहिनी साइनो पो पर्ने रहेछ भनेर कुराले पगालें । त्यसपछि उसले मलाई भन्यो, “दिदी तपाईं कस्को छोरी हुनुहुन्छ ? कहाँदेखि आउँनुभयो ? यो के कामको लागि हो ?” मैले पनि विस्तारै सबै प्रश्नको उत्तर दिदै गएपछि उनी खुशी हुँदै जवाफ दिन थालिन । उनले भनिन, “उनको ३ वटी छोरीहरूमा १ छोरी ९ वर्षभएपछि ७-८ महिना अघि मरेको बताउँदै दुःखी भइन । अरु २ छोरीहरू रानीपौवा भन्ने बजारको अंग्रेजी स्कूलमा त्यही बसेर पढ्छन् भनी बताइन । आफ्नो छोरी मात्र भएकोले श्रीमानले पनि हेला गर्ने र गाउँकाहरूले पनि कुरा काट्ने हुनाले आफू यी गाउँलेहरूसँग त्यति बोल्न नचाहेको पनि मसँग दुःखेसो पोखिन । प्रश्नावली भरिसकेपछि उनले भनिन, “दिदी घरमा गएर चिया खाएर जानुहोला भन्दै अनुरोध गरिन ।” तर अरु घरमा पनि जान पर्ने हुनाले फेरि फेरि आउँला बहिनी भन्दै त्यहाँबाट विदा भएर अर्को घरतर्फ लागें । यसरी आफ्ना दुःख नबुझेपछि, आफ्नो दुःख पोख्ने साथी नभेटेपछि मानिस कुण्ठित भइ साधरणभन्दा भिन्दै हुँदोरहेछ भन्ने कुरा यस घटनाबाट पुष्टि हुन्छ ।

मेरो व्यक्तिगत अनुभवबाट भविष्यमा स्थलगत अध्ययन गर्न आउँने विद्यार्थी वा शोधकर्ताले केही पाठ भने सिक्न सकिन्छ । कुनै पनि ठाउँका मानिसहरु बाहिरी मानिससँग हम्मेसी घुलमिल हुन चाहदैनन् । आफ्नो र आफ्नो समाजका आन्तरिक कुराहरुलाई शोधकर्ता वा बाहिरी मानिसले दुरुपयोग गर्ने कुरामा शंका गर्छन् । वास्तवमा भन्ने हो भने स्थलगत अध्ययन एकदमै व्यक्तिगत क्षमता, दक्षता र सीपमा निर्भर रहन्छ । त्यसभन्दा बढी त्यहाँको रहनसहन, भाषिक दक्षता र भौगोलिक बनावटसँगको पहिचानले शोधकार्यमा प्रभाव पार्दछन् । मौलिक संस्कृति र रहनसहन स्थानीय मानिसहरुको परिचयसँग जोडिएको हुन्छ । त्यसमा आँच नआउँने किसिमले कुशलतापूर्वक काम गर्नु पर्दछ । आफ्नो जातियता र भाषाले मानिसमा सजिलै प्रभाव पार्न सक्ने हुनाले त्यहाँको स्थानीय जाति र भाषालाई पहिलो प्राथमिकता दिनुपर्छ । समाजका हरेक मानिससँग उत्तिकै र समान तरिकाले सामाजिक ज्ञान प्रसार प्रचार भएको हुँदैन । यसकारण शोधकर्ताले उनीहरुको अध्ययनबाट उक्त गाउँ र व्यक्तिहरुको अध्ययनले सापेक्षित रूपमा फाइदा नै पुऱ्याउँछ भन्ने कुराहरुलाई सम्झाइ बुझाई गरी सहमतीमै प्रश्न सोधेमा वस्तुनिष्ठ र विश्वसनीय तथ्याङ्क तथा सूचना लिन सकिन्छ ।

३.११. अध्ययनको संगठन

यस अध्ययनलाई ९ अध्यायमा विभाजन गरिएको छ । पहिलो अध्यायमा अध्ययनको पृष्ठभूमि समस्याको कथन, अध्ययनको उद्देश्यहरु, अध्ययनको महत्व र अध्ययनको संगठन समावेश गरिएको छ । दोस्रो अध्यायमा तामाङ्ग समाजको उत्पति र साहित्य सन्दर्भहरुको विस्तृत विश्लेषण गरिएको छ । तेश्रो अध्यायमा यस अध्ययनको अनुसन्धान विधि अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्रको छनौट, तथ्याङ्कको प्रकृति, तथ्याङ्क संकलन विधि, तथा जानकार व्यक्तिहरुसँगको अन्तरवार्ता आदि समावेश गरिएको छ । त्यस्तै तथ्याङ्कको विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण, अध्ययनको सीमा तथा अध्ययनको क्रममा बढुलिएका अनुभवहरुलाई समावेश गरिएको छ । चौथो अध्यायमा अध्ययन क्षेत्रको परिचय अन्तर्गत भौगोलिक अवस्थिति र परिचय, क्षेत्रफल, हावापानी, भाषाभाषि, जनसंख्या, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, खानेपानी र सरसफाई, यातायात र सञ्चार सम्बन्धी समावेश गरिएको छ । त्यस्तै गरी पाँचौ अध्यायमा तामाङ्ग समाजको सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक अवस्थाको बारेमा विभिन्न शिर्षक अन्तर्गत रहेर उत्तरदाताहरुको आधारमा आएको जानकारीलाई समावेश गरिएको छ । जस अन्तर्गत तामाङ्ग समाजको जनसंख्या, पारिवारिक बनावट, वैवाहिक पद्धति तथा स्थिति, साधारण शैक्षिक अवस्था तथा

बालबालिकाको शिक्षास्वास्थ्य, सुविधाहरु तथा विकास, प्रमुख पेशा, खाद्यन्नको पर्याप्तता, ज्याला, आदिको बारेमा विश्लेषणात्मक जानकारी समावेश गरिएको छ । छैठौँ अध्यायमा तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको आर्थिक अवस्थाको बारेमा विभिन्न शिर्षक अन्तर्गत रहेर उत्तरदाताहरुको आधारमा आएको जानकारीलाई समावेश गरिएको छ । जस अन्तर्गत तामाङ्ग समाजको महिलाहरुको स्रोत्र र साधनमा पहुँच, महिलाहरुको जग्गाजमिनमा स्वामित्व, महिलाको घरायसी सम्पति (पशुपालन-पेवापात) मा स्वामित्व, महिलाका गरगहनामा स्वामित्व, महिलाहरुको आयमुलक काममा संलग्नता, उत्तरदाताको परिवारको आम्दानीमा पहुँच, पारिवारिक निर्णय प्रक्रियामा महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति, लैङ्गिक श्रम विभाजन बारे समावेश गरिएको छ । सातौँ अध्यायमा तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको राजनीतिक चेतना तथा सहभागिता अन्तर्गत मतदानमा सहभागिता र निर्णय स्वतन्त्रता, महिलाहरुको घुमफिर गर्ने तथा विभिन्न कार्यलयको प्रयोग गर्ने आत्मविश्वास तथा सक्षमता, महिलाहरुको सञ्चार साधनको पहुँच तथा सम्पर्क, महिलाको हिडडुल गर्ने स्वतन्त्रता बारे उनीहरुको धारणा, महिलाहरुको कानुनी सचेतता बारे विश्लेषण गरिएको छ । आठौँ अध्यायमा तामाङ्ग जातिका सांस्कृतिक अवस्था अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग जातिहरुका रहनसहन, घरको बनावट, भेषभूषा, खानपान, सरसफाई, संस्कारहरु (जन्म संस्कार, पास्नी, विवाह संस्कार, मृत्यू संस्कार) र चाडपर्व (ल्हो छार, माघे संक्रान्ति, चैते दशैं, कुल देवतापूजा,गोठ पूजा, नारा, दशैं, तिहार, भूमिपूजा) आदि समावेश गरिएको छ । त्यस्तै अन्तिम अध्याय ९ मा सारांशा र निष्कर्षको साथै तीन पुस्ताका महिलाहरुको सामाजिक, राजनैतिक शैक्षिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्थाको बारे विस्तृत रुपमा विश्लेषण गरिएको छ ।

अध्याय ४

अध्ययन क्षेत्रको परिचय

४.१ भौगोलिक अवस्थिति र परिचय

नुवाकोट जिल्ला नेपालको मध्यपहाडी भूभागमा पर्दछ । यो २७°४५' उत्तर अक्षांसदेखि २८° २०' उत्तरसम्म ८५° पूर्वी देशान्तरदेखि ८४° ४५' पूर्वी देशान्तरसम्म फैलिएकोछ । यस जिल्लाको क्षेत्रफल १,१२१ वर्ग कि.मी. छ भने यो जिल्ला समुन्द्र सतहदेखि ५४० मी. देखि ५,१४४ मी.सम्मको उचाईमा रहेकोछ । यसको हावापानी तल्लो भेगमा न्यानो र माथिल्लो भेगमा जाडो छ । यो जिल्लाको भौगोलिक वनावट ३ किसिमको पाइन्छ । (१) धेरै भिरालो (२) भिरालो र (३) समथर । यो जिल्लाको मुख्य ३ वटा नदीहरु छन् । (१) त्रिशुली (२) तादी र (३) लिखु । यी नदीहरु हिमालबाट झर्दछन् । यो जिल्लाको ४०% भूमि खेतीयोग्य रहेकोछ । यस जिल्लामा मनसुन जेठबाट सुरु भई साउनको अन्त्यसम्ममा सकिन्छ । यसको तापक्रम न्यूनतम ४.६ से. देखि अधिकतम ३५.५ से. रहन्छ भने औषत वार्षिक वर्षा १,५४४ मीलिलिटर हुन्छ । यस जिल्लासँग जोडिएको चार जिल्लाहरु छन् । यस जिल्लाको दक्षिण-पूर्वमा काठमाण्डौं, उत्तरतर्फ रसुवा, पूर्वतर्फ सिन्धुपाल्चोक र पश्चिमतर्फ धादिङ जिल्लाहरु पर्दछन् ।

सन २००१ को जनगणना अनुसार यस जिल्लाको जनसंख्या २,८८,४७८ थियो । जुन नेपालको जनसंख्याको १.२५ पर्न आउँछ । यस जिल्लामा जम्मा ५३,१६९ घरधुरी संख्या रहेका छन् भने यस जिल्लाको जनघनत्व २५७ व्यक्तिप्रति एक वर्ग किलोमिटरमा रहेको छ । यस जिल्लाको औषत परिवारको संख्या ५.४३ रहेको छ । यस जिल्लाको जम्मा जनसंख्या मध्ये सबैभन्दा बढी तामाङ जातिको संख्या रहेको छ । जिल्लाको जनसंख्यामध्ये तामाङहरु ३८.५%, बाम्हण १३.४%,क्षेत्री ७.६%,नेवार ५.५% र दलितको जनसंख्या ७.६% रहेकोछ । नुवाकोट जिल्लामा ६१ गा.वि.स. र १ नगरपालिका रहेकोछ । यस जिल्लाको चतुराले गा.वि.स. ६१ गा.वि.स. मध्ये एक हो । यो काठमाण्डौं उपत्यकाबाट झण्डै ३१ कि.मी. उत्तरपश्चिम र नुवाकोट जिल्लाको सदरमुकान विदुरबाट १० कि.मी. पूर्वमा पर्दछ । चतुराले गा.वि.स.को पूर्वमा थानसिङ गा.वि.स., दक्षिणमा ककनी गा.वि.स., पश्चिममा मदनपुर गा.वि.स. र उत्तरमा सूर्यमति गा.वि.स.हरु पर्दछन् । यो गा.वि.स.लाई २ वटा साना नदीहरुले घेरेको छ । दक्षिणतर्फ ढाँडेखोला र उत्तरतर्फ सिन्दुरे खोला पर्दछन् । यी नदीहरुले चतुराले गा.वि.स.को सिंचाई सुविधामा सहयोग पुऱ्याउँछ ।

यो गा.वि.स.लाई भौगेलिक बनावटको आधारमा ३ भागमा बाँड्न सकिन्छ । (१) बेंसी भाग (२) कछार र (३) लेक भाग पर्दछ । बेंसीमा प्रायजसो बाम्हण, क्षेत्री, नेवार, तामाङ्ग, राई (दनुवार) र दलितहरूको बसोबास पाइन्छ । कछार भागमा बाम्हण, क्षेत्री, नेवार, तामाङ्ग र दलित जातिहरूको बसोबास पाइन्छ । ढाँडे र सिन्दुरे खोलाको बीच भागलाई बेंसी भनिन्छ । यहाँ २ बाली धानको खेति गरिन्छ । यहाँको जमिन अन्य दुईको तुलनामा उर्वर रहेकोले प्रशस्त अन्न उत्पादन हुन्छ । चतुराले गा.वि.स.को दुई तिहाई भाग कछारमा पर्दछ । यहाँ धान, मकै, गहुँ, कोदो आदिको उत्पादन गरिन्छ । कछारमा डुम्रीचौर, चतुराली बजार, सिरुबारी जस्ता गाउँहरू पर्दछन् । कछारदेखि माथिल्लो भागलाई लेक भनिन्छ । यसमा माँझगाउँ र थर्पूगाउँ पर्दछ । लेक भागको वडा नं. १ थर्पूगाउँमा तामाङ्ग र बाहुनहरूको बस्ति पाइन्छ भने वडा नं. ६ माँझगाउँ मेरो अध्ययन क्षेत्रमा भने पुरै तामाङ्ग जातिहरूको बस्ति पाइन्छ । लेकका जमिन सुख्खा बालौटे भएता पनि यहाँ प्रशस्त मात्रमा मूला, अदुवा, बेसार, आलु, मकैको साथै थोरै मात्रमा भए पनि कोदोको उत्पादन हुन्छ । अध्ययन क्षेत्रको भाग भने लेकको तल्लो भाग भएकोले यहाँ धानको खेति पनि गरिन्छ ।

चतुराले गा.वि.स.को भौगोलिक बनावट र सामाजिक संरचनाबीच सामन्जस्यता भएको पाइन्छ । जस्तै थर्पूगाउँ र माँझगाउँ लेकभागमा पर्दछ र यी गाउँमा तामाङ्ग जातिको मात्र बस्ति छ । बेंसीमा प्राय नेवार र बाहुन क्षेत्रीको बस्ति छ ।

४.२ चतुराले गा.वि.स.को घरको बनावट

लेकतिर घरहरू होचा र एक तले वा दुई तले ढुङ्गाका छानाका हुन्छन् । यहाँ जाडो हुने हुनाले घरको तला सानो र भ्याल पनि कम मात्रमा राखिन्छ । बेंसीको घरको बनावट एक तला वा दुई तलाको छाना भने जस्ता तथा खरको हुन्छ भने भ्यालहरू अलि धेरै र तलाको उचाई पनि लेकको तुलनामा बढी हुन्छ । कछारतिर पनि बेंसीको जस्तै घरहरू पाइन्छ ।

प्रायजसो तामाङ्ग जातिका घरहरू जोडिएर वा नजिक नजिक भुरूप रहेको पाइन्छ । त्यस्तै मेरो अध्ययन क्षेत्र माँझगाउँमा पनि यी जातिहरूका घरहरू जोडिएको र एकदम नजिक नजिक रहेका छन् । यस्ता घरहरू प्रायश आफन्तहरू जस्तै दाजुभाइ, काका, जेठवा आदिका हुन्छन् । यहाँ गरीबहरूको घर भने प्राय एकतले हुने गरेको र गाईभैंसीको लागि सामान्य खर वा स्याउलाले छाएको पालिक हुन्छ भने बाखा, कुखुरा घरभित्रै भान्साको कोठामै सानो बार बारेर राख्ने चलन पनि छ । अलि आर्थिक स्थिति

राम्रो भएको मानिसहरुका घरहरु भने दुई तला, घरमा बार्दली राखिएको र भ्यालहरु पनि सामान्यहरुको तुलनामा बढी नै राखिएको पाइन्छ । साथै मानिस बस्ने घर र गाईभैँसी पाल्ने गोठ भिन्दै राखिएको हुन्छ । गोठको तल्लो भागमा गाईभैँसी पालिन्छ, भने माथिल्लो भागमा गाईभैँसीको खानेकुरा जस्तै मकैको खोस्टा, पराल, पिठो , धानको मसिनो ढुटो जस्ता विभिन्न प्रकारका सामान राख्नुको साथै जहान धेरै भएमा मानिसहरु सुत्ने पनि गरिन्छ । गोठ प्राय घर नजिक नै बनाइएको हुन्छ । कुखुरा र बाखाको खोर घरबाहिर तर घरसँग जोडिएर बनाइएको हुन्छ । बार्दलीमा लुगा भुण्ड्याएर राख्ने र मानिसहरु सुत्ने पनि गर्दछन् । यहाँ सबैलाई छुट्टाछुट्टै सुत्ने-बस्ने-कोठाको व्यवस्था हुँदैन । प्रायजसो एकतलाको सिङ्गै एउटा कोठा मात्र हुन्छ । खाना पकाउनु प्राय सबैले दाउरा नै प्रयोग गर्दछन् । हाल यस गाउँमा सुधारिएको चुल्होको प्रचलनले महिलाहरुलाई खाना पकाउन धेरै सजिलो भएको छ । यसबाट खाना पकाउँदा धुँवाले आँखा पिरो नहुनुको साथै दाउरा पनि कम खपत हुने हुँदा लेक जस्तो दाउराको कमी ठाउँमा यसको उपयोग तीव्र गतिले बढिरहेको छ ।

४.३ धर्म र भाषा

यहाँ मानिसहरु हिन्दु र बौद्ध धर्मालम्बी र केही क्रिस्चियन धर्मालम्बी पनि छन् । बाहुन, क्षेत्री, नेवार र दलित हिन्दुधर्मालम्बी हुन भने तामाङ्ग जातिहरु हिन्दु र बुद्ध धर्म दुबै मान्दछन् । यहाँ हिन्दु धर्म मान्ने १९५८, बुद्ध धर्म मान्ने १५९६, क्रिस्चियन धर्म ५ र नखुलेको ५४ छ । जस्तो लेकमा बसोबास गर्नेहरु प्राय बुद्ध धर्म मान्दछन् भने बैँसीतिर बस्नेहरु हिन्दु र बुद्ध धर्म दुबै मान्दछन् । तल बैँसी भेगमा बसोबास गर्नेहरु हिन्दु संस्कार जस्तै दशैं-तिहार, तीज, कृष्णाष्टमी, जनै पूर्णिमा जस्ता चाडहरु पनि मान्दछन् भने जन्म, विवाह, वर्तवन्ध, मृत्यू संस्कारमा लामा लाब्तावाको प्रयोग पनि गर्दछन् । यसरी तल्लो भेगमा बस्ने तामाङ्ग आफ्नो मातृभाषा बोल्दैनन् भने माथिल्लो भेगका तामाङ्गहरु आफ्नो मातृभाषा बोल्दछन् । यहाँ नेपाली भाषा बोल्ने १७५९, तामाङ्ग भाषा बोल्ने १५२०, नेवार भाषा बोल्ने २९२ छन् । यो गा.वि.स.मा हिन्दु धर्ममा आस्था राख्नेहरुका लागि शिवालय मन्दिर, बुद्ध धर्ममा आस्था राख्नेहरुका लागि सिरुवारीमा बुद्धका गुम्वा पनि छन् । यो गुम्वा र मन्दिरमा जान र पूजाआज गर्न सबैलाई छुट छ ।

जीवन अध्ययन नं.१ : धर्म र संस्कारले पारेको असर

शेर बहादुर तामाङ्ग(थीङ्ग) ५३ (थीङ्ग थरहरुको मूल लाव्तावा) र श्रीमती माइली (रुम्बा) ४९ वाट १७ जना छोराछोरी जन्मेका छन् । ती मध्ये ८ जना मात्र जीवित छन् । सबैभन्दा कान्छो बच्चा ३ वर्षको छ । जेठो र साइलो छोरा विवाह गरेर भिन्दै बसिसकेका छन् । १७ जना छोराछोरी जन्माएकोले गाउँलेहरु तथा अन्य मानिसहरुले किन यति धेरै सन्तानहरु जन्माएको भनेर सोध्दा हामी लाव्तावा भएर परिवार नियोजन गर्नु हुँदैन । परिवार नियोजन गरेपछि मानिस खसी भैं हुन्छन् । पूजाआजामा चल्दैन । जसरी खसी भगवानलाई चढ्दैन त्यसरी नै परिवार नियोजन गरेको मानिसले चढाएको भगवानलाई चढ्दैन । उ अपवित्र हुन्छ । त्यसैले हाम्रो धर्म र संस्कारमा मूल लाव्तावा भएपछि सन्तानलाई रोक्ने काम गर्नु हुँदैन । भगवानले दिए जति हात थापेर लिनु पर्छ भनेर जवाफ दिए । यति धेरै बच्चाहरु किन जन्माउनुभएको होला भनेर भन्दा उनी भन्छन्,“ के तिमीहरुले मेरो बच्चाहरु पाल्न परेको छ । मेरो बच्चाहरु मै आफै पालिहल्छु नि । भैंसीलाई आफ्नो सिङ्गको भारी हुँदैन बुभ्यौ ?”

यसरी धर्म र संस्कारले मानिसको जीवनमा नराम्ररी असर पारिरहेको छ । यी कारणले पनि सामाजिक, आर्थिक र शैक्षिक स्तर गठन नसकेको देखिन्छ ।

परशुराम तामाङ्गका अनुसार १८ थर तामाङ्गबाट पदोन्नति १३४ थरहरु मध्ये थीङ्ग पनि एक हो । केही विद्वानहरु जस्तै वंशीटार्ट र जनकलाल शर्मा आदिले १८ थर तामाङ्गहरु भर्रा होइन पनि भनेका छन् । तर यसलाई पुष्टि भने कसैले गर्न सकेका छैन । प्राय जसो उच्च जातिका हिन्दु संस्कृति नक्कल गर्ने प्रवृत्तिले गर्दा अन्य जातिहरुले पनि आफ्नो संस्कृतिमा हिन्दु संस्कृतिलाई आत्मसात गर्ने गरेको पाइन्छ । मेरो अध्ययन क्षेत्रका थीङ्गको लाव्तावाको संस्कारमा पनि वरवरका हिन्दु संस्कृति भएका स्थानीय बासिन्दाहरुको सरसंगतले हिन्दु धर्मको जस्तो सोचाइ र व्यवहार भएकोले यो हिन्दु धर्मबाटै प्रभावित भएको हुनुपर्छ भन्ने संकेत गर्दछ ।

४.४ सामाजिक संघ-संस्थाहरु

यस गा.वि.स.मा ७ वटा विद्यालयहरु छन् । ती मध्ये एक वटा उच्च मा.वि. र ६ वटा प्रा.वि.हरु छन् । यी सबै सरकारी विद्यालयहरु हुन् । प्रा.वि. मध्ये १ देखि ५ कक्षासम्म २ वटा विद्यालयमा पढाई सञ्चालन भइरहेछ भने ४ वटा विद्यालयमा १-३ कक्षासम्मको पठन पाठन हुन्छ । १-३ कक्षासम्म पठन पाठन हुने प्रा.वि.हरु शिलादेवि प्रा.वि, तुलसी डाँडामा भण्डै २०%, चककाली प्रा.वि. लच्याडमा भण्डै ९०%, मनकामना प्रा.वि. वलामीगाउँमा भण्डै १५%, देउराली प्रा.वि.थर्पूगाउँमा भण्डै ९०% तामाङ्ग

जातिका बालबालिकाहरु अध्ययन गर्दछन् । १ देखि ५ कक्षासम्मको पढाई हुने प्रा.वि.हरु ब्रम्हाणी प्रा.वि. माँभगाउँमा भण्डै ९०% र क्षेत्रपाल प्रा.वि.सिरुबारीमा भण्डै ५०% तामाङ्ग जातिका बालबालिकाहरु अध्ययन गर्दछन् भने चतुराले गा.वि.स.को महेन्द्र मा.वि.हुलाक डाँडामा अवस्थित छ । जहाँ १२ कक्षासम्मको पढाई हुन्छ । यहाँ स्कूल तहमा भण्डै ५०% र उच्च मा.वि.मा (१५-२०)% तामाङ्ग जातिका विद्यार्थीहरु अध्ययन गर्दछन् । यहाँ कक्षा १२ सम्मको पढाई सञ्चालन वि.सं २०६४ सालबाट सुरु भएको हो । दुरीको हिसाबले हरेक विद्यालय पुग्न विद्यार्थीहरुलाई ५-४० मिनेट जति समय लाग्दछ । विशेष गरेर थर्पूगाउँ, माँभगाउँ र लच्याङमा धेरै तामाङ्गहरुको बस्ति भएकोले यहाँका विद्यालयहरुमा तामाङ्ग जातिका बालबालिकाहरुको संख्या धेरै देखिन्छ । यसरी चतुराले गा.वि.स.को सबै विद्यालयहरुमा तामाङ्ग जातिका बालबालिकाहरु अध्ययन गर्दछन् ।

४.५ स्वास्थ्य सेवा

चतुराले गा.वि.स. मा २०४८ सालमा उपस्वास्थ्य चौकी स्थापना गरिएको थियो । यसलाई इलाकाचौकीको रूपमा २०५४ सालमा स्थापना गरियो । नुवाकोट जिल्लाको १० वटा इलाका स्वास्थ्य चौकीमध्ये चतुरालेको इलाका स्वास्थ्यचौकी पनि एक हो । यो चतुराले बजार र माँभगाउँको बीचमा पर्दछ । यस स्वास्थ्य चौकीले खासगरी चतुराले गा.वि.स.को सबै वडाहरु, सूर्यमति गा.वि.स.का १ र २ वडाहरु, मदनपुर गा.वि.स.का ७ र ८ वडाहरु र थानसिङ गा.वि.स.को वडा नं.८ का मानिसहरुलाई सेवा प्रदान गर्दछ । यसको आफ्नै भवन छ । यसमा जम्मा ६ जना स्वास्थ्य सेवक र कर्मचारीहरु छन् । एक जना स्वास्थ्य सहायक, एक जना A.H.W , एक जना A.N.M., एक जना V.H.W. दुई वटा प्रशासनिक कर्मचारीहरु रहेका छन् ।

यस गा.वि.स.मा स्वास्थ्यचौकी भए पनि मानिसहरुलाई उचित स्वास्थ्य सेवा पुऱ्याउन धेरै कठिनाई रहेको देखिन्छ । सेवा प्रदान गर्ने व्यक्तिहरुभन्दा सेवा लिने व्यक्तिहरुको अनुपात अत्यन्त बढी छ । जुन अनुपात १:३००० रहेको छ । त्यस्तै गरी पर्याप्त मात्रमा औषधिहरु पाईदैन । यो स्वास्थ्यचौकी कुनै कुनै गाउँबाट धेरै टाढा पर्ने हुनाले यसबाट सेवा लिन सक्दैनन् । यस स्वास्थ्यचौकीबाट कतिपय रोग टि.बी., हात्ती पाइले रोग, औलो ज्वरो, परिवार नियोजनको साधनहरु, आइरन चक्की, भिटामीन 'ए' निशुःलक पाइए तापनि भाडापखाला, निमोनिया, ज्वरो आदिका औषधिहरु किन्नु पर्ने हुन्छ ।

विद्यालय र स्वास्थ्य चौकी बाहेक यस गा.वि.स.मा हुलाक कार्यालय पनि छ । यो कार्यालय चतुराले बजारमा पर्दछ । गा.वि.स. भवन भने वि.सं २०५९ तिर द्वन्द्वको समयमा भत्किएकोले यहाँको सबै कामकाज जिल्लाको सदरमुकाम विदुरमै हुने गरिएको छ ।

४.६ यातयात सेवा

यस गा.वि.स.मा रानीपौवादेखि ढाँडेफेदीसम्मको कच्ची सडक बनेकोछ । यो सडक हिउँदमा मात्र सञ्चालन हुन्छ । यो सडक अन्दाजी १० कि.मी. जति छ । यस सडकको सुविधाले यहाँका किसानहरूले तरकारी, अन्न, अन्य सामानहरू ओसारपसार गर्न सजिलो भएकोछ । यो सडकको सुविधाले गर्दा यहाँका मानिसहरूले उत्पादित खाद्यन्न र तरकारी आदि चिजहरू उपभोग मात्र नगरी व्यापार गर्ने मनसायले पनि उत्पादन गरेको पाइन्छ । यहाँ झण्डै ३५-४० प्रतिशत घरमा विजुली सुविधा छैन । यहाँ २५ प्रतिशतको मात्र घरमा चर्पी छ । खानेपानी व्यवस्था पनि खासै सन्तोषजनक छैन । खानेपानीका पाइपहरू आफ्नै नीजि स्रोतबाट लगेको पाइन्छ ।

४.७ सिंचाई, कृषि र व्यापार

यस गा.वि.स.मा सिस्नेरी, छहरे, डुम्रीचौर सिंचाई योजना सुरुवात भएको छ । यसले यस गा.वि.स.को तल्लो भेगका मानिसहरूलाई सिंचाई सुविधा पुगेकोछ भने यस अध्ययन क्षेत्रमा समेटिएको माँझगाउँमा भने यस सुविधा भौगोलिक कठिनाईले गर्दा प्राप्त गर्न सकेका छैनन् । पानीको सिंचाई कुलो यो गाउँको तलबाट गएको छ ।

यो गा.वि.स.मा कुनै पनि आधुनिक कृषि औजारहरूको प्रयोग भएको पाइँदैन । तर उन्नत जातका बीउबिजन र रासायनिक मलको प्रयोग भने १५-२० वर्षअघिदेखि नै भइरहेको पाइन्छ । यहाँ खेतिपातिको काम गर्दा ज्याला र पर्मा दुबैले गरिन्छ । कामको उच्च चापको बेलामा बाहेक अरु समयमा प्राय आफ्नै परिवारका सदस्यहरूले र पर्माद्वारा नै काम गर्दछन् । पहिले यस गा.वि.स.मा उखु र सुर्तिको खेति गरिन्थ्यो भने हाल आएर यसको खेति गरेको पाइँदैन । गत केही वर्ष यतादेखि यहाँका किसानहरूले तरकारी खेति गरेको पाइन्छ र नगदे बाली जस्तै बेसार, अदुवा आदिको पनि राम्रो उत्पादन गरेको पाइन्छ । काठमाण्डौं नजिक र यातयातको सुविधा भएको हुनाले उक्त तरकारी एवं नगदे बालीहरू विक्री वितरण गरी किसानहरूको आय आर्जन गर्ने मुख्य स्रोत भएको छ । किसानहरू व्यापारिकरणतर्फ उन्मुख भएको पाइन्छ । यसबाट पहिलेको तुलनामा यहाँका किसानहरूको जीवनस्तर राम्रो हुँदै गइरहेकोछ ।

अध्याय ५

तामाङ्ग समाजको सामाजिक तथा आर्थिक अवस्था

५.१ सामाजिक अवस्था

तामाङ्ग समाज पनि एक पुरुष प्रधान समाज हो । घरायसी काम काजमा महिलाको भूमिका बढी हुने भएता पनि बाहिरको काममा पुरुषक नै हिड्ने गरेको पाइन्छ । तर अन्य आर्यन जातिहरूको महिलाहरूको तुलनामा यस जातिका महिलाहरू बढी स्वतन्त्र र घरायसी निर्णय गर्ने कार्यमा प्रमुख भूमिका निभाउन सक्छन् । परिवारको सम्पत्तिमा पुरुषको हक बढी देखिए तापनि घरायसी निर्णयमा दुवैको सरसल्लाह र सहमतिमा भएको पाइन्छ । साथै विभिन्न स्रोत र आमदानीहरूबाट आएको रकम महिला र पुरुष दुवैको सरसल्लाहमा बढी हुने गरेको पाइएको छ । यस समाजमा छोरा र छोरीप्रति दृष्टिकोणमा फरक नपाइए तापनि छोराको महत्व भने बढी नै रहेको पाइन्छ । घरायसी कामकाजदेखि लिएर मजदुरी, खेतिपाति लगायत विभिन्न चाडपर्व, भोजभतेर पूजाआज, विवाह आदि कार्यमा महिलाहरूको भूमिका बढी रहेको पाइन्छ ।

यस अध्यायमा अध्ययनको उद्देश्यलाई आधार बनाएर यस क्षेत्रका उत्तरदाताहरूको सामाजिक जीवनका विविध पक्षबाट अध्ययन गरिएको छ । जसमा उत्तरदाताको उमेर समूह, वैवाहिक स्थिति, पारिवारिक संरचना, परिवारको आकार, शिक्षा, स्वास्थ्य प्रजननदर आदि विवरणहरू समावेश गरिएको छ ।

५.१.१ जनसंख्या

कुनै पनि समुदायको सामाजिक क्रियाकलापमा त्यस समुदायको जनसंख्या र त्यसको उमेरगत एवं लैङ्गिक अवस्थाले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । जनसंख्याको संरचनामा उमेर र लैङ्गिक आधारमा त्यस जनसंख्याको सक्रिय र निष्क्रिय जनसंख्याको स्थिति थाहा पाउन सकिन्छ । जसले गर्दा सामाजिक पक्षमा तिनीहरूको प्रभावको बारेमा अध्ययन गर्न मद्दत पुग्दछ । त्यसैले चतुराले गा.वि.स.वडा नं. ६ का तामाङ्ग समाजका व्यक्तिहरूको उमेर र लैङ्गिक आधारमा प्राप्त जानकारीलाई यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ५.१ उमेर र लैङ्गिक आधारमा उत्तरदाताको विवरण

| उमेर समुह | पुरुष | | महिला | | जम्मा | |
|--------------------|--------|---------|--------|---------|--------|---------|
| | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| ०-४ | १६ | ८.१ | १५ | ७.७ | ३१ | ७.९ |
| ५-९ | २१ | १०.७ | २२ | ११.३ | ४३ | ११.० |
| १०-१४ | २५ | १२.७ | २३ | ११.८ | ४८ | १२.२ |
| १५-१९ | २६ | १३.२ | १९ | ९.७ | ४५ | ११.५ |
| २०-२४ | २० | १०.२ | ३२ | १६.४ | ५२ | १३.३ |
| २५-२९ | २८ | १४.२ | २० | १०.३ | ४८ | १२.२ |
| ३०-३४ | १३ | ६.६ | ११ | ५.६ | २४ | ६.१ |
| ३५-३९ | ५ | २.५ | ७ | ३.६ | १२ | ३.१ |
| ४०-४४ | ७ | ३.६ | ९ | ४.६ | १६ | ४.१ |
| ४५-४९ | ७ | ३.६ | ६ | ३.१ | १३ | ३.३ |
| ५०-५४ | ५ | २.५ | १० | ५.१ | १५ | ३.८ |
| ५५-५९ | २ | १.० | ५ | २.६ | ७ | १.८ |
| १५-५९ | ११३ | ५७.४ | ११९ | ६१.० | २३२ | ५९.२ |
| ६० भन्दा माथि | २२ | ११.२ | १६ | ८.२ | ३८ | ९.७ |
| जम्मा | १९७ | १००.० | १९५ | १००.० | ३९२ | १००.० |
| आश्रित जनसंख्या | | | | | | |
| ०-१४ | ६२ | ३१.५ | ६० | ३०.८ | १२२ | ३१.१ |
| ६० भन्दा माथि | २२ | ११.२ | १६ | ८.२ | ३८ | ९.७ |
| जम्मा | ८४ | ४२.७ | ७६ | ३९.० | १६० | ४०.८ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६० घरधुरीमा जम्मा १९७ पुरुष र १९५ महिलाको संख्या रहेकोछ । ०-४ लिएर १०-१४ सम्मका बाल र बालिकाको संख्या खासै फरक देखिदैन भने १५-१९ र २५-२९ वर्ष समूहमा पुरुषको संख्या धेरै र २०-२४ उमेर समूहमा महिलाको संख्या बढी देखिन्छ । यसरी यहाँ आश्रित जनसंख्या ४०.८ प्रतिशत रहेको छ । जसमा आश्रित जनसंख्या पुरुषको ४२.७ प्रतिशत र महिला ३९.० प्रतिशत रहेको छ । आश्रित जनसंख्या ४०.८ प्रतिशत रहेकोले यस गाउँमा आश्रितको संख्या बढी नै रहेको देखिन्छ । १५ देखि ५९ वर्षका उमेर समूहमा महिलाको संख्या पुरुषको तुलनामा धेरै छ भने ६० वर्षभन्दा माथिमा पुरुषको संख्या महिलाको तुलनामा बढी रहेको देखिन्छ ।

सुविधाहरु तथा विकास

यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा विकासका पूर्वआधार के कति कार्यहरु सम्पन्न भएका छन् भन्ने सन्दर्भमा घरमा तथा गाउँमा भएका सुविधालाई यहाँ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ । यहाँ ६० घरधुरीमा पाइपद्वारा खानेपानी व्यवस्था भएको ५७ घरधुरी र अन्य ३ घरले कुवाको खानेपानी प्रयोग गरेको पाइयो । खाना पकाउने इन्धनको सवालमा ग्रामीण क्षेत्र हुनाले प्रायजसो दाउरामा नै खाना पकाउने गर्दछन् । घरमा भएको सुविधाहरुको सवालमा यस क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा ६० घरधुरीमा विजुली भएको भण्डै ८३ प्रतिशत, रेडियो सुविधा भएको घर भण्डै ९२ प्रतिशत, टेलिभिजन भएको घर २५ प्रतिशत र चर्पीको व्यवस्था भएको घर २२ प्रतिशतमा मात्र रहेको छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने विजुली र रेडियो सुविधा प्रशस्त मात्रमा भए तापनि टिभि किन्न महंगो पर्ने र कामले गर्दा हेर्ने फुर्सद नहुने साथै घरमा पढ्ने बालबच्चाहरु टि भि हेरेर पढ्ने आदत बिग्रने हुनाले किन्ने समर्थ्य भएर पनि टि भि सबै मानिसहरुले घरमा राखेका छैनन् । चर्पीको सुविधा न्यून देखिनुमा एक त चेतनाको अभाव अर्थात् चर्पीको महत्व नबुझ्नु हो भने कतिमा आर्थिक अभाव रहेको कारण पनि पाइएको छ । तामाङ्ग समाजको धेरै घरको साभ्रा चर्पी पनि देखियो । यस्तो हुनाको कारण मैले त्यसै गाउँकी मेरो सहयोगी बहिनीलाई सोधे त्यसको जवाफमा भनिन “यो चर्पी प्रयोग गर्ने सबै जना हाम्रा आफन्त हुन । कोही काका-काकी, कोही जेठवा-जेठीआमा, कोही दाजु-भाउजु, भदा-भदै साइनो पर्ने मात्र छन् ।” यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने तामाङ्ग समाजमा अझै पनि मिलीजुली बस्ने, नजिक नजिकका धेरै घरहरु सबै आफन्त नै हुन्छन् । जसले गर्दा अझै पनि यी समाजमा जातिय रूपमा सहयोग गर्ने, सदभाव राख्ने प्रचलन देखिन्छ । कुनै क्षेत्रमा भएको सुविधाको आधारमा त्यस क्षेत्रको विकासको स्तर मूल्याङ्कन गर्न सकिन्छ । न्यूनतम आधारभूत आवश्यकता पूरा भइसकेको छकि छैन भन्ने आधारमा पनि त्यस क्षेत्रको भइरहेको विकासको स्थिति नै हो । जुन भोगाई र देखाइ दुबै हुनु आवश्यक छ । जतिधेरै विकासका कार्यहरु भएको हुन्छ त्यति नै त्यस क्षेत्रको जनजीवनहरु पनि प्रभावित भएको हुन्छ । यसले त्यहाँको जनजीवनको रहनसहन चालचलन, व्यवहार र जीवनशैलीमा ठूलो परिवर्तन ल्याएको हुन्छ ।

५.१.२ पारिवारिक बनावट

परिवार एउटा सामाजिक संस्था तथा समाजको एउटा इकाई पनि हो । मानिसको व्यक्तित्व विकासमा परिवारको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ । परिवारमा महिला र पुरुषको आ-आफ्नै प्रकारको महत्व रहेको हुन्छ । पारिवारिक बनावटले पनि महिला वा पुरुषको कामको अवस्थालाई निर्धारण गरेको हुन्छ ।

साधारणतया महिला होस वा पुरुष दुबैले संयुक्त परिवारमाभन्दा एकल परिवारमा बढी समय काम गर्नु पर्ने हुन्छ । संयुक्त परिवारका सदस्यहरूमा कामको बाँडफाँट हुनाले कामको बोझ कम हुन्छ भने एकल परिवारमा कामको बोझ बढी रहेको हुन्छ । जसले पुरुषको तुलनामा महिलाहरू बढी प्रभावित हुन्छन् । एउटा परिवारमा बसेको सदस्यको नातासम्बन्धको आधारमा परिवारलाई एकात्मक परिवार, संयुक्त परिवारको रूपमा वर्गिकरण गरिएको हुन्छ । परिवारको किसिमको घरधुरीलाई तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएकोछ ।

तालिका .५.२ परिवारको किसिम

| परिवारको किसिम | संख्या | प्रतिशत |
|----------------|--------|---------|
| एकात्मक | २९ | ४८.३ |
| संयुक्त | ३१ | ५१.७ |
| जम्मा | ६० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्ष, २०६४

माथिका तालिका अनुसार ४८.३ प्रतिशत एकात्मक परिवार रहेको छ भने ५१.७ प्रतिशत उत्तरदाताको संयुक्त परिवार रहेकोछ । यस अध्ययनमा २ सदस्यदेखि लिएर १८ सदस्यसम्मको परिवार रहेको पाईएकोछ । Thomas E.Fricke (१९८६) अनुसार तामाङ्गहरूको एकात्मक परिवारभन्दा संयुक्त परिवारमा बसोबास गर्ने जाति हो भनेका छन् । यहाँ पनि यिनीहरू एकात्मक परिवारभन्दा संयुक्त परिवारमा बस्न मन पराएको देखिन्छ । उनीहरू संयुक्त परिवारमा कामको बोझ कम हुने, बच्चाहरूको हेरचाह गर्न सजिलो हुने र पुराना मूल्य मान्यता अनुसार नै चलन चाहने हुनाले एकात्मक परिवारभन्दा संयुक्त परिवारप्रति नै ढल्किएको पाईएकोछ । यस जातिहरूका छोरा धेरै भए पनि अलि ठूलो भएपछि राजधानी नजिक भएकोले कुनै न कुनै पेशामा संलग्न हुन आउने हुँदा घरमा परिवारको बोझ नहुने र यी छोराहरूले केही न केही घरको लागि सहयोग गर्ने हुँदा ठूलो परिवार भए पनि परिवारमा जनसंख्या बोझ भएको देखिएन । यसले Thomas E.Fricke (१९८६) को अध्ययनको निचोडलाई पुष्टि गर्न सहयोग गरेको छ । चाडपर्व, विवाह, वर्तवन्ध, दियाली, भोजभतेर, अन्य सांस्कृतिक संस्कारहरूमा मात्र सम्पूर्ण परिवार घरमा जम्मा हुने हुँदा रमाइलो हुने र परिवारमा पनि मनमुटाव नहुने हुनाले यहाँका समाजमा संयुक्त परिवारको बाहुल्यता पाइन्छ । तर घरमा नै सबै परिवार बस्ने कतै काममा संलग्न नहुने परिवारमा भने जेठो छोराको सन्तानहरू भएपछि र अरु छोराहरूको पनि विवाह भएर सन्तान जन्मेपछि परिवारको बोझ, घरमा बस्न खानको लागि पनि समस्या भएपछि मनमुटाव शुरु हुन थाल्दछ,

। जसले परिवार टुक्रिएर अर्को परिवार बन्ने क्रम पनि यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा पाइयो । धेरै परिवार भएपछि सासु बुहारीबीच, जेठानी देवरानीबीच र दाजुभाइबीच पनि मनमुटाव हुने कुरा स्थलगत भ्रमणबाट जानकारीमा आएको पाइन्छ । जसले गर्दा मानिसहरु 'भाँडिनुभन्दा बाँडिनु बेस' भन्ने विचारले संयुक्त परिवारबाट छुट्टिएर एकात्मक परिवारमा परिणत हुन पुग्छन् । यसरी वर्तमान अवस्थामा स्वतन्त्रताको कुरालाई बढी प्राथमिकता दिने क्रममा एकात्मक परिवार पहिलेको तुलनामा बढिरहेको देखिन्छ । वास्तवमा तामाङ्ग जातिहरु संयुक्त परिवारमा बस्ने जातिका रुपमा परिचित भए तापनि वर्तमान अवस्थामा अन्य आर्यन जातिहरुको प्रभाव र शिक्षाको चेतनाले स्वतन्त्रतालाई आत्मसात गरेको हुनाले र आधुनिक समयको पुँजीवादीकरणको स्थितिममा हरेक जाति एकात्मक परिवारप्रति आकर्षण भएको समयमा यस जाति पनि अछुतो रहन सकेको पाइदैन । यस जाति पनि पहिलेको तुलनामा एकात्मक परिवारप्रति आकर्षण भएको नै देखिन्छ । डा. गोविन्द सुवेदी (२००७) को अध्ययनमा समेत एकात्मक परिवारको प्रतिशत ४५ थियो । यसबाट के निष्कर्ष निकाल्न सकिन्छ भने यस समुदाय ग्रामीण क्षेत्रमा बसोबास गरे तापनि बिस्तारै बिस्तारै एकात्मक परिवार बन्दै गएको पाइन्छ । तर पनि यस जातिमा परापूर्वकालदेखि नै संयुक्त परिवारमा बस्ने जुन परम्परा थियो , त्यसलाई यस अध्ययन क्षेत्रका जातिमा कायमै रहेको देखिन्छ ।

५.१.३ वैवाहिक पद्धति तथा स्थिति

विवाह पद्धति

तामाङ्ग जातिमा मामाचेली फुपूचेला विवाह पद्धति पाइन्छ । विशेष गरेर फुपूको छोरासँग मामाकी छोरीले विवाह गर्ने प्रचलन छ । पहिलेको नाता फुपू हुनाले विवाह पश्चात पनि सासुलाई फुपू भनेर नै बोलाउँछन् । उनीहरुमा सासू र बुहारीको जस्तो सम्बन्ध नभएर फुपू-भदैकै पहिलेको साइनोको सम्बन्ध राख्दछन् । यसबाट उनीहरुमा आत्मियता र सद्भाव रहिरहने कुरा विश्वास गर्छन् । मागी विवाह गर्दा मामाकी छोरी फुपूको छोरासँग विवाह गरेको पाइन्छ भने मामाको छोरासँग फुपूकी छोरीले विवाह त्यति गरिएको पाइदैन । किन भने मामाको घरमा भान्जी विवाह गरेर बुहारी बनाइ ल्याउँदा मामा र माइजुले भान्जीलाई बुहारीको दर्जामा राख्न नहुने, बुहारी (भान्जी) ले दैलो पातेको ठाउँमा कुल्चन नहुने, घर पोत्ने, खुट्टा ढोग्ने जस्ता कार्य गर्न नहुने हुँदा मागी विवाहमा मामाचेली र फुपूचेला विवाह गरेको पाइएता पनि मामाचेली फुपूचेली विवाह गरेको त्यति पाइदैन । यसरी गोडा ढोक्ने, भान्जीले दैलो पोतेको ठाउँमा कुल्चिदा पाप लाग्छ भन्ने चलन हिन्दु धर्मबाट प्रभावित ठाउँमा मात्र पाइन्छ ।

तर आजकल आधुनिककरण, शिक्षाको चेतना, अन्य जातिको सम्पर्कले यस्तो मामाचेली फुपूचेला विवाह पद्धतिमा ह्रास आएको पाइन्छ । साथै यस्तो विवाह पद्धतिमा यदि बुहारीले घर गर्न नसकी घर छाडेमा वा मन मुटाव भएमा चेलीको माइतीको सम्बन्ध खराब हुने र माइती जाने बाटो नै टुँगिने हुँदा यस्तो प्रचलन विस्तारै हट्दै गएको पाइन्छ ।

यस अध्ययनमा मामाचेली फुपूचेला विवाह जम्मा २७.८ प्रतिशत उत्तरदाताले गरेको देखिन्छ । तीन पुस्ता उमेर समूहमा मामाचेली र फुपूचेली विवाहको सम्बन्धमा सवाल गर्दा २९ वर्षमुनिका उमेर समूहले २० प्रतिशतले मात्र मामाचेली फुपूचेला विवाह गरेको पाइयो भने, ३०-४९ वर्षका उमेर समूहले महिलाहरु मध्ये २९.२ प्रतिशतले मामाचेली फुपूचेला विवाह गरेको पाइयो । ५० वर्षभन्दा माथिका महिलाले ३३.३ प्रतिशतले मामाचेली फुपूचेलामा विवाह गरेको देखिन्छ । यसरी नयाँ पुस्ताको तुलनामा पुराना पुस्ताहरुका महिलाहरुले मामाचेली फुपूचेला साइनोमा विवाह बढी गरेको देखिन्छ ।

यस तथ्याङ्कले यस जातिमा मामाचेली र फुपूचेली साइनोमा विवाहको प्रचलन रहेको भए तापनि ठूलो संख्यामा यस जातिमा मामाचेली र फुपूचेली बाहिर विवाह हुन थालेको पाइन्छ । सन १९७९ मा फ्रिकीले अध्ययन गर्नुभएको पश्चिमी उत्तरी तामाङ्ग गाउँमा ५० प्रतिशत विवाह मामा-फुपू चेलाचेली बीचमा भएको पाइएको थियो । १९७९ मा एस. क्याथ्रिन मार्कले पश्चिमी तामाङ्ग गाउँमा गरिएको अनुसन्धानमा ३६ प्रतिशत मामाचेली फुपू चेला विवाह गरिएको पाइएको थियो भने मेरो यस अध्ययनमा भने २७.८ प्रतिशतले मात्र मामाचेली फुपूचेला विवाह गरेको पाइएकोछ (तालिका ५.३) । जति जति बढी उमेर उति मामाचेली फुपूचेला साइनोमा विवाह बढी देखिन्छ । यसरी पुराना पुस्ताका महिलाको तुलनामा नयाँ पुस्ताका महिलामा धेरै अन्तर देखिएको छ । उक्त तथ्याङ्कले परम्परागत तामाङ्ग विवाहमा महत्वपूर्ण रुपमा परिवर्तन आउन थालेको संकेत दिन्छ ।

तालिका ५.३ मामाचेली फुपूचेली साइनोमा विवाह (%)

| विषय सुचि | उत्तरदाताहरुको उमेर समुह | | | जम्मा |
|---------------------------------|--------------------------|-------|-------|-------|
| | ≤२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| मामाचेली फुपूचेली साइनोमा विवाह | | | | |
| हो | २०.० | २९.२ | ३३.३ | २७.८ |
| होइन | ८०.० | ७०.८ | ६६.७ | ७२.२ |
| जम्मा प्रतिशत | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| जम्मा संख्या | १५ | २४ | १५ | ५४ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्ष, २०६४

सामाजिक जीवनका विभिन्न अंगहरू मध्ये विवाह पनि एक महत्वपूर्ण अंग हो । एउटी महिला तथा पुरुष वैवाहिक जीवनमा बाँधिपछि मात्र समाजको पूर्ण सदस्यको रूपमा रहेको हुन्छ भन्ने धारणा रहेको पाईन्छ । त्यसैले यस समाजमा विवाहलाई महत्वपूर्ण रूपमा हेरेको पाईन्छ । तालिका ५.४ मा वैवाहिक अवस्था अनुसार उत्तरदाताको विवरण प्रस्तुत गरिएकोछ । जस अनुसार विवाहित ८३.३ प्रतिशत, अविवाहित १० प्रतिशत छुट्टिएर बसेको ३.३ प्रतिशत र विधवा ३.३ प्रतिशत रहेको पाइएकोछ ।

तालिका ५.४ उत्तरदाताहरूको वैवाहिक स्थिति

| विवाहको प्रकार | संख्या | प्रतिशत |
|----------------|--------|---------|
| अविवाहित | ६ | १०.० |
| विवाहित | ५० | ८३.३ |
| छुट्टिएर बसेको | २ | ३.३ |
| विधवा | २ | ३.३ |
| जम्मा | ६० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

उत्तरदाताको विवाह गर्दाको उमेर

मानिसको जीवनमा विवाह गर्ने उमेरले पनि प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपमा प्रभाव पारेको हुन्छ । कम तथा अपरिपक्क उमेरमा गरिने विवाहले वैवाहिक स्थितिमा अपरिपक्कता तथा परिवारमा असमझदारी बढ्न सक्छ । त्यसैले यस जातिका उत्तरदाताको विवाह गर्दाको उमेर पनि तीन पुस्ताको छुट्टाछुट्टै उमेर अनुसारको विवरण तालिका ५.५ देखाइएकोछ ।

तालिका ५.५ विवाहको उमेर अनुसार उत्तरदाताहरूको विवरण (%)

| विवाहको उमेर | उत्तरदाताहरूको हालको उमेर | | | जम्मा | संख्या |
|--------------------------|---------------------------|-------|------|-------|--------|
| | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | | |
| १३-१५ | ४६.२ | २३.१ | ३०.८ | १००.० | १३ |
| १६-१९ | २३.३ | ५३.३ | २३.३ | १००.० | ३० |
| २०-२५ | १८.२ | ४५.५ | ३६.४ | १००.० | ११ |
| जम्मा | २७.८ | ४४.४ | २७.८ | १००.० | ५४ |
| जम्मा उत्तरदाताको संख्या | १५ | २४ | १५ | | ५४ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यस तालिका अनुसार ३०-४९ वर्षका र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहकाभन्दा २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूहका महिलाहरूमा कम उमेरमा विवाह गर्नेको संख्या उच्च देखिन्छ । पहिले पहिले यस

तालिका ५.६ विवाहको प्रकार (%)

| विषय सुचि | उत्तरदाताहरूको उमेर समुह | | | जम्मा |
|---|--------------------------|-------|-------|-------|
| | ≤२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| विवाह भएको किसिम | | | | |
| मागी विवाह | ६०.० | ७५.० | ७३.३ | ७०.४ |
| प्रेम विवाह | ४०.० | २५.० | २६.७ | २९.६ |
| यदि मागी विवाह भएको भए तपाइलाई सोधेको थियो | | | | |
| थियो | ८८.९ | ७०.० | ६३.६ | ७२.२ |
| थिएन | ११.१ | ३०.० | ३६.४ | २७.८ |
| यदि प्रेम विवाह गरेको भए के तपाइले बाबुआमालाई सोध्नुभएको थियो? | | | | |
| थियो | ३३.३ | ३३.३ | ०.० | २५.० |
| थिएन | ६६.७ | ६६.७ | १००.० | ७५.० |
| विवाहको प्राथमिकता | | | | |
| मागी विवाह | ०.० | २५.० | ४६.७ | २१.७ |
| प्रेम विवाह | १००.० | ७५.० | ५३.३ | ७८.३ |
| उत्तरदाताको संख्या | १५ | २४ | १५ | ५४ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

मागी विवाह गरे तापनि यस विवाहलाई पनि उनीहरू प्रेम विवाह अन्तर्गत राख्न चाहन्छन् । ६० वटा उत्तरदातामध्ये ७०.४ प्रतिशतले मागी विवाह र २९.६ ले प्रेम विवाह गरेको पाइएकोछ । मागी विवाह गर्दा पनि छोराछोरीको भावना बुझ्ने गरेको पाइन्छ । तर अन्तरजातिय विवाहलाई भने यस समाजमा सहजै स्वीकारेको पाइन्न । पुराना पुस्ताका तुलनामा नयाँ पुस्ताहरूले प्रेम विवाहप्रति आकर्षित भएको तथ्याङ्कले देखाउँछ । अन्य कुराको परिवर्तनसँगै बाबुआमाको सोचाई र बुझाईमा पनि परिवर्तन आएको छ ।

५.१.४ उत्तरदाताको छोरा र छोरीको विवाह तथा शिक्षा सम्बन्धी धारणा

उत्तरदाताहरूमा छोरा र छोरीप्रतिको धारणाको सवालमा समान देख्छु भन्ने भण्डै ८७ प्रतिशत रहेको छ । त्यसमा पनि २९ वर्षमुनिका उमेर समुहले १०० प्रतिशत छ भने ३०-४९ भित्रकाले भण्डै ८३ प्रतिशत र ५० वर्षभन्दा माथिकाले भण्डै ७३ प्रतिशत मात्र बताए । यसरी उमेर बढ्दै जाँदा समान

देख्छु भन्नेहरुको संख्या कमशः घट्दै गएको छ । यसबाट के बुझिन्छ भने पुराना पुस्तामाभन्दा नयाँ पुस्तामा महिलाहरुप्रतिको दृष्टिकोणमा परिवर्तन आएको पाइन्छ ।

त्यस्तै उत्तरदाता महिलाहलाई छोरीको लागि शिक्षा दिनु महत्वपूर्ण छ भन्ने सवालमा अत्यन्त सहमतमा लगभग ५३. प्रतिशत र ठीकै हो भन्नेहरु ४७ प्रतिशत रहेको छ । २९ वर्षमुनिका उमेर समुहले भण्डै ७१ प्रतिशतले अत्यन्तै सहमत जनाएका छन् । त्यसमा पनि ३०-४९ वर्ष उमेर समुहले भण्डै ५० प्रतिशतले मात्र अत्यन्त सहमत जनाए भने ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समुहले भण्डै ४७ प्रतिशतले मात्र जनाए । यसबाट नयाँ पुस्तामा छोरीलाई शिक्षा दिनुपर्छ भन्ने धारणा तीव्र पाइयो । शिक्षा र संचारका प्रभावले नारीशिक्षा महत्वलाई बुझेको हुनाले यस विषयमा जोड दिइएको पाइएको छ भने अन्य समूहले यस विषयमा बिस्तारै कम जोड दिइएको पाइएको छ । तर सारांशमा भन्ने हो भने यस क्षेत्रका समुदायहरुमा पनि छोरीलाई शिक्षा दिनुपर्छ भन्ने धारणाको विकास भइसकेको पाइन्छ । तर घरायसी काम, विभिन्न कारण तथा चेतनाका कमीले अझै पनि यहाँका महिलाहरुले १२ कक्षाभन्दा माथि पढेको पाइएन ।

छोराछोरीलाई पढाउने धारणा फरक छकि छैन भन्ने जानकारी लिँदा सम्पूर्णले बराबर नै पढाउने भन्ने धारणा सबैमा व्यक्त भएको पाइए तापनि व्यवहारमा भने सबै छोरा र छोरीले एस.एल.सी.भन्दा माथि बराबर पढेको पाइएन । यहाँ ११ र १२ र वि. ए सम्म आफ्ना छोराछोरीलाई पढाउने भन्नेको संख्या कम रहेको छ । यसरी छोराछोरी पढ्न चाहेमा र घरमा ठूलो समस्या नपरेमा छोराछोरी दुवैलाई बराबर पढाउने भन्ने धारणा सबैले व्यक्त गरेको पाइन्छ । ५० वर्षभन्दा माथिकाले शिक्षाको स्तर थाहा नभएर कति पढाउने भन्ने कुरा भन्न नसकेको कुरा बताए । त्यस्तै आदर्श बच्चाको संख्या कति हुनुपर्छ भन्ने सवालमा एउटा छोरा र एउटा छोरी भन्नेहरु धेरै पाइएको छ । यसमा ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समुह बढी छन् । जे भए पनि हुन्छ भन्नेहरुमा २९ वर्षमुनिका उमेर समुह बढी छन् । यसरी नयाँ पुस्ताहरुमा महिलाले जे भए पनि २ जना भए पुग्छ भन्नेहरुको संख्या धेरै देखिन्छ । नयाँ पुस्ताहरुमा नयाँ नयाँ चेतनाका विकासको कारणले छोरा र छोरीप्रति गर्ने भेदभाव कम हुन थालिएको पाइन्छ । शैक्षिक चेतनाका कारण बालबालिकाहरुलाई शिक्षा दिनुपर्छ भन्ने सोच बाबुआमाहरुमा पनि बढेको यहाँको तथ्याङ्कले देखाउँछ ।

५.१.५ साधारण शैक्षिक अवस्था तथा बालबालिकाको शिक्षा

यस समाजका उत्तरदाताको लैङ्गिक आधारमा शैक्षिक स्थितिलाई तलको तालिकामा प्रस्तुत गरिएकोछ। तालिका ५.७ लैङ्गिक आधारमा घरपरिवारको शैक्षिक स्तर (१५वर्ष वा सोभन्दा माथिको साक्षरता दर)

| शैक्षिक स्तर | पुरुष | | महिला | | जम्मा | |
|-------------------------|--------|-------|--------|-------|--------|-------|
| | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| अनौपचारिक शिक्षा | १९ | १४.० | २६ | १९.४ | ४५ | १६.७ |
| प्राथमिक शिक्षा | ३७ | २७.२ | २८ | २०.९ | ६५ | २४.१ |
| माध्यमिक शिक्षा | ५२ | ३८.२ | ३१ | २३.१ | ८३ | ३०.७ |
| एस.एल.सी र सोभन्दा माथि | ८ | ५.९ | २ | १.५ | १० | ३.७ |
| निरक्षर | २० | १४.७ | ४७ | ३५.१ | ६७ | २४.८ |
| जम्मा | १३६ | १००.० | १३४ | १००.० | २७० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

तालिका ५.७ अनुसार अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजको शैक्षिक स्थितिको बारेमा चित्रण गरिएकोछ । यस तथ्याङ्क अनुसार पुरुषको तुलनामा महिलाको निरक्षरता प्रतिशत धेरै छ । प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा र एस.एल.सी वा सोभन्दा माथि शिक्षा हासिल गर्ने महिलाको प्रतिशत पनि पुरुषको तुलनामा न्यून देखिन्छ । तर अनौपचारिक शिक्षामा भने पुरुषकोभन्दा महिलाको प्रतिशत उच्च छ । यस तालिका अनुसार २४.८ प्रतिशत निरक्षर छन् भने ७५.२ प्रतिशत साक्षरता छन् । विभिन्न संघ संस्थाहरुले विभिन्न समयमा अनौपचारिक शिक्षाको कक्षा संचालन गरेको हुनाले यस क्षेत्रको साक्षरता प्रतिशत उल्लेखनीय रूपमा अन्य धेरै क्षेत्रका तुलनामा बढी भएको देखिन्छ ।

माथिका तालिकामा महिलाहरुमा पनि तीन पुस्ताको शैक्षिक स्तरलाई तुलना गरिएको छ । समय बित्दै जाने क्रममा महिलाहरुको पनि शैक्षिक स्तर विस्तारै बढ्दै गएको तथ्याङ्कले देखाउँछ । यहाँ २९ वर्षमुनिका उमेर समुहले ३२.४ ले प्राथमिक शिक्षा प्राप्त गरेका छन् भने माध्यमिक शिक्षा हासिल गर्ने ४२.३ प्रतिशत छन् । ३०-४९ वर्ष उमेर समुहले १५.२ ले मात्र प्राथमिक शिक्षा हासिल गरेका छन् माध्यमिक शिक्षा हासिल गर्ने ३.० प्रतिशत मात्र छन्, भने ५० वर्षभन्दा माथिका महिलाहरु प्राथमिक, माध्यमिक सबै लहमा ० प्रतिशत नै छन् ।

तालिका ५.८ तीन पुस्ता महिलाहरुमा तुलनात्मक शैक्षिक स्तर

| शैक्षिक स्तर | उमेर समुह | | | | | | | |
|-------------------------|-----------|-------|-------|-------|-----|-------|-------|-------|
| | <=२९ | | ३०-४९ | | ५०+ | | जम्मा | |
| अनौपचारिक शिक्षा | १२ | १६.९ | ९ | २७.३ | ५ | १६.७ | २६ | १९.४ |
| प्राथमिक शिक्षा | २३ | ३२.४ | ५ | १५.२ | ० | ०.० | २८ | २०.९ |
| माध्यमिक शिक्षा | ३० | ४२.३ | १ | ३.० | ० | ०.० | ३१ | २३.१ |
| एस.एल.सी र सोभन्दा माथि | २ | २.८ | ० | ०.० | ० | ०.० | २ | १.५ |
| निरक्षर | ४ | ५.६ | १८ | ५४.५ | २५ | ८३.३ | ४७ | ३५.१ |
| जम्मा | ७१ | १००.० | ३३ | १००.० | ३० | १००.० | १३४ | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यसरी २९ वर्षमुनिका उमेर समुहले एस.एल.सी भन्दा माथि गर्नेहरु पनि छन् भने अन्य २ उमेर समूहमा शून्य प्रतिशत छन् । ५० वर्षभन्दा माथिका महिलाको निराक्षरताको प्रतिशत अत्यन्तै बढी छ भने यसभन्दा पछाडिका पुस्ताहरुको निराक्षरताको प्रतिशत धेरै घट्दै गएको देखिन्छ । यसबाट के देखिन्छ भने यस समाजमा समाजिक चेतना तथा अवसरमा निरन्तर विकास भएको संकेत गर्दछ । औपचारिक शिक्षा लिनबाट बञ्चित महिलाहरुले भने अनौपचारिक शिक्षा (प्रौढ) लिने दर भने नयाँ पुस्तामाभन्दा बढी छ । यस तथ्याङ्कले के स्पष्ट पार्छ भने समयसँगै बाबुआमा पनि शिक्षाको महत्व बुझेको हुनाले आफ्ना बालबालिकाहरुलाई स्कूल पढाउँछन् । साथै वरपरका छरछिमेकी स्कूल पढ्न गएको देखेर पनि बालबालिकाहरु पढ्न जान खोज्छन् । जसको कारणले पुराना पुस्ताका तुलनामा नयाँ पुस्तामा शैक्षिक स्तर बढ्न गएको पाइन्छ ।

विद्यालयमा भर्ना हुने बालबालिकाहरु

यहाँका मानिसहरुले आफ्ना बालबालिकाहरुलाई प्राय सरकारी स्कूलमा भर्ना गरेका छन् । यहाँ एक त प्राइभेट (बोडिङ्ग) स्कूल छैनन् भने अर्को ग्रामीण क्षेत्रका मानिससँग आर्थिक कठिनाई हुँने हुँदा प्राइभेटमा पढाउँन सक्षम छैनन् । थोरै परिवारले मात्र शहरमा ल्याई प्राइभेटमा पढाएका छन् । यसरी प्राइभेटमा पढाएका अभिभावकले आफ्नो छोराछोरीलाई खासै भेदभाव गरिएको देखिएन । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ यस जातिमा छोरा र छोरीलाई पढाउँने कुरामा पनि छुट्टाइएको पाइएन ।

तालिका ५.९ विद्यालयमा भर्ना हुने बालबालिकाहरुको विवरण

| स्कूलको प्रकार | केटा | | केटी | | जम्मा | |
|----------------|--------|---------|--------|---------|--------|---------|
| | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| सरकारी स्कूल | ६१ | ९५.३ | ५४ | ९६.४ | ११५ | ९५.८ |
| प्राइभेट स्कूल | ३ | ४.७ | २ | ३.६ | ५ | ४.२ |
| जम्मा | ६४ | १००.० | ५६ | १००.० | १२० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

विद्यालय जाने गरेको कूल परिवारको ९५.८ प्रतिशत परिवारले केटा र केटी दुवैलाई सरकारी विद्यालयमा, ४.२ प्रतिशतले मात्र निजी विद्यालयमा पढाउँछन् । जसमा ४.७ प्रतिशत केटा र ३.६ प्रतिशत केटी निजी विद्यालयमा पढाएको पाइएकोछ (तालिका ५.९) । यसबाट के भन्न सकिन्छ भने कुनै भेदभाव विना छोरा र छोरीलाई सरकारी विद्यालयमा पढाएको पाइएकोछ । आर्थिक कमजोरी र ग्रामीण क्षेत्रमा निजी विद्यालय नभएको कारणले आफ्ना बालबालिकाहरुलाई सरकारी विद्यालयमा पढाएको भन्ने धारणा राखेको पाइयो । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने केटा र केटीमा खासै भेदभाव नगरेको र समाजमा तुलनात्मक रुपमा बालबालिकाहरुको शिक्षाप्रति केही जागरुक भएको पाइएको छ । परम्परागत धारणा अनुसार यस जातिका महिलाहरुको हैसियत पुरुष समान र कतिपय घरायसी व्यवहारमा महिलाको भूमिका नै उच्च रहने जुन संस्कृति थियो त्यसको अवशेष अझ पनि यस समाजमा पाउन सकिन्छ । तसर्थ अन्य जातिका महिलाहरुको तुलनामा यस जातिका महिलाहरु घरायसी कामदेखि बाहिरका काममा पनि श्रीमानले श्रीमतीको सहमति लिएको पाइन्छ । साथै घरायसी निर्णय गर्ने कार्यमा पनि श्रीमतीको नै बढी हात देखिन्छ ।

तालिका ५.१० (६-२४) वर्षभित्रका केटाकेटीहरुको स्कूल जाने र स्कूल छाड्ने स्थितिको विवरण

| उमेर समुह | पुरुष | | | महिला | | | जम्मा | | |
|-----------|------------|-------------|--------|------------|-------------|--------|------------|-------------|--------|
| | स्कूल जाने | स्कूल नजाने | संख्या | स्कूल जाने | स्कूल नजाने | संख्या | स्कूल जाने | स्कूल नजाने | संख्या |
| ६-९ | १००.० | ०.० | १६ | १००.० | ०.० | २० | १००.० | ०.० | ३६ |
| १०-१४ | १००.० | ०.० | २५ | १००.० | ०.० | २३ | १००.० | ०.० | ४८ |
| १५-१९ | ६५.४ | ३४.६ | २६ | ७८.९ | २१.१ | १९ | ७१.१ | २८.९ | ४५ |
| २०-२४ | २५.० | ७५.० | २० | २१.९ | ७८.१ | ३२ | २३.१ | ७६.९ | ५२ |
| जम्मा | ७२.४ | २७.६ | ८७ | ६९.१ | ३०.९ | ९४ | ७०.१ | २९.९ | १८१ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

पढ्दा पढ्दै विद्यालय छाड्ने बालबालिकाको संख्या तथा कारण

यस अध्यायमा तामाङ्ग समाजमा बालबालिकाहरुको शिक्षामा रहेको पहुँचको बारेमा विश्लेषण गरिएकोछ । अध्ययनको क्रममा अध्ययन क्षेत्रका बालबालिकाको शिक्षामा पहुँच बालबालिकाले बीचमै पढाई छाड्ने कारणहरुको बारेमा तथ्याङ्क संकलन गरिएको थियो (तालिका ५.११) । जस अनुसार ६-९ र ०-१४ भित्रका बालबालिकाहरु सबै स्कूल जाने गरेको पाइएकोछ । १५-१९ भित्रका उमेर समूहका छात्रको तुलनामा स्कूल जाने छात्राहरुको संख्या बढी छन् भने यो संख्या २०-२४ वर्ष भित्रमा छात्राहरुको स्कूल जाने क्रम घटेको देखिन्छ । यसरी विस्तारै उमेर बढ्दै जाने क्रममा छात्रा तथा छात्रको विद्यालय छाड्ने क्रम पनि बढ्दै गएको देखिन्छ ।

तालिका ५.११ पढ्दा पढ्दै विद्यालय छाड्ने बालबालिकाको संख्या

| विवरण | घर संख्या | बालबालिकाको संख्या |
|-------------------|-----------|--------------------|
| विद्यालय गइरहेका | ३८ | |
| विद्यालय छाडेका | २२ | |
| छोरा | १३ | १३ |
| छोरी | ४ | ४ |
| छोरा र छोरी(दुवै) | ५ | १० |
| जम्मा | ६० | २७ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६० घरमा ३८ जना स्कूल जान्छन् भने स्कूल छाड्ने २२ जना छन् । यसरी हेर्दा तुलनात्मक रुपमा धेरै परिवारका बालबालिकाहरु पढ्ने गरेको पाइएकोछ । जसले गर्दा तामाङ्ग जातिहरुमा पनि बालबालिकाहरुलाई पढाउनुपर्छ भन्ने मान्यताको विकास भएको पाइएको छ । त्यस्तै बालबालिकाहरु पढ्दा पढ्दै बीचमै छाड्ने कारण बुझ्दा स्वयंले पढ्न नमानेर, फेल भएर भन्ने जानकारीमा आएको पाइन्छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने शैक्षिक चेतनाको अभाव अझै पनि यिनीहरुमा रहेको पाईन्छ ।

६-२४ वर्षभित्रका स्कूल जाने केटाकेटीहरुको स्कूल जाने र छाड्ने स्थितिलाई जानकारी राख्दा ६-९, १०-१४ वर्षका बालबालिकाहरु सबै स्कूल जान्छन् । १५-१९ वर्षभित्रका केटाकेटीहरु स्कूल छाड्ने क्रम शुरु भई २०-२४ वर्षभित्रमा धेरैको स्कूल छाड्ने क्रम बढ्दछ । जसमा केटीको संख्याको तुलनामा केटाको संख्या बढी छ । यस उमेरका केटाहरु पढ्न मन नलागेर, साथीसंगतको लहलहैमा लाग्ने हुँदा स्कूल छाड्छन् । घरका अभिभावकमा शिक्षाप्रतिको ज्ञानको अभाव, नजिकैको शहरको आधुनिक टडकभडकको आकर्षण, बढी स्वतन्त्रता, शहरमा आफन्तहरु भएकोले केही समयलाई खान बस्न

समस्या पनि नहुने हुँदा, यस्तै अल्लारे उमेरमा पढाइ छाडि शहरमा ड्राइभर काम गरेर गुजारा गरिरहेको आफन्त वा दाइहरुको सिको गर्ने र आफैमा शिक्षाप्रतिको महत्व नहुनुले गर्दा यस उमेरका केटाहरु स्कूल छाड्ने कम बढेको देखिन्छ। त्यस्तै गरी ग्रामीण क्षेत्रमा घरायसी काममा केटीहरुलाई बढी लगाउने हुँदा विस्तारै पढाई बिग्रदै जानु, यस उमेरका केटीहरुले घरायसी तथा खेतिपातिका काममा पूर्ण सहयोग गर्न सक्ने हुँदा कामको लोभमा अभिभावक फस्नु, राम्रो घर र वर पाएमा यस उमेरका केटीहरुको विवाह गर्ने उमेर योग्य ठान्ने अभिभावकको सोचाइले र कति केटीहरु साथीसंगतको लहैलहैमा र आफै रोजेर विवाह गर्ने भएकोले विवाह पश्चात स्कूल छाड्ने हुँदा यस उमेरका केटीहरुको स्कूल छाड्ने कम बढेको देखिन्छ। २०-२४ वर्षभित्रका प्राय केटाकेटीहरु विवाह भइसक्ने हुँदा पढ्न जाँदैनन्। केटाहरु आफ्नो जिम्मेवारीमा परिसक्ने स्थिति र केटीहरु घर व्यवहार सम्माल्ने अवस्था यस उमेरमा आइसक्ने हुँदा धेरै कमले मात्र यस उमेरमा पढ्दछन्। यस उमेरभित्र केटाको तुलनामा केटीहरुको स्कूल छाड्ने कम बढी देखिन्छ। त्यसैले उच्च शिक्षा हासिल गर्ने यस क्षेत्रमा एकदम थोरै मात्र संख्या देखिन्छ। यसले के स्पष्ट हुन्छ भने अझै पनि काठमाण्डौं नजिक भएर पनि यस समाजमा शिक्षाप्रतिको चेतनाको अभाव देखिन्छ।

५.१.६ स्वास्थ्य

स्वास्थ्य सचेतना तथा स्वास्थ्यसेवाको प्रयोग

यस समाजको स्वास्थ्य स्थितिलाई हेर्दा आफू र आफ्नो परिवार विरामी हुँदा नजिक स्वास्थ्य केन्द्र लैजाने वा भारफूकमा विश्वास गर्ने अवस्थालाई उमेर समूह अनुसार तालिकामा देखाइएको छ।

तालिका ५.१२ उत्तरदाताको स्वास्थ्यसेवा प्रयोग विवरण

| उपचार संस्थाहरु | उमेर समूह | | | जम्मा |
|---------------------|-----------|-------|-------|-------|
| | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| हेल्थपोष्ट | ३८.१ | २०.८ | १३.३ | २५.० |
| धामी र भाँकी (दुबै) | ६१.९ | ७९.२ | ८६.७ | ७५.० |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

तालिका ५.१२ अनुसार ७५ प्रतिशत स्वास्थ्य चौकी र धामीभाँकी दुबैलाई देखाउने छन् भने २५ प्रतिशत मात्र स्वास्थ्य चौकी देखाउने गर्दछन्। त्यसमा पनि ५० वर्षभन्दा माथिकाहरुले धामीभाँकीसँग बढी विश्वास गर्छन् भने २९ वर्षमुनिका उमेर समूहले शिक्षा र चेतनाका कारण धामीभाँकीलाई मात्र

भन्दा स्वास्थ्य चौकीमा उपचार गर्ने क्रम बढ्दोछ । विरामी भएपछि सर्वप्रथम भारफूक तथा धामी भाँकीद्वारा उपचार गर्ने र त्यसबाट निको नभएमा मात्र स्वास्थ्य चौकी वा अस्पताल जाने कुरा बताउँछन् । उनीहरू रोगका लक्षण हेरेर अस्पताल जाने होकि ? भारफूक गर्ने हो भन्ने कुराको निकर्षाले गर्दछन् । एकदमै ठूलो रोग लागेमा वा चोटपटक लागेमा मात्र अस्पताल जाने गर्दछन् भने सामान्य विरामी भएमा भारफूक र स्वास्थ्य चौकी जाने गर्दछन् । यसरी यस समाजमा विरामी, औषधि उपचार सम्बन्धी परम्परागत मूल्य मान्यता कायम रहेको पाइन्छ ।

परिवार नियोजनको साधनको प्रयोग

यस अध्ययनबाट उत्तरदाताहरूले जानकारी दिइए अनुसार परिवार नियोजनको साधन प्रयोग गर्नेको संख्या झण्डै आधा रहेको छ । त्यसमा पनि २९ वर्षमुनिका महिलाहरूले भन्दा ३०-४९ वर्षका उमेर समूहहरूले पनि कमै प्रयोग गरेको पाइएको छ । पुरुषवन्द्याकरण भने महिलावन्द्याकरणको तुलनामा बढी भएको पाइएको छ । यसको प्रयोग पनि ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहका पुरुषहरूले बढी गरिएको पाइएको छ ।

उत्तरदाताहरूको धूम्रपान स्थिति

तालिका ५.१३ अनुसार ६० जना उत्तरदाताहरू मध्ये चुरोट पिउनेको संख्या बढी देखिन्छ । उमेर समूह अनुसार ३०-४९ वर्ष भित्रका महिलाहरू बढी चुरोट पिउने गरेको देखियो । यस उमेरका महिलाले चुरोट पिउनुको कारण कामको बोझ, चिन्ता हटाउन र अर्को साथीसगिनीहरूको संगतले सिकेको कुरा उनीहरूले बताए । २९ वर्षमुनिका महिलाहरूले भने अन्यको तुलनामा कम चुरोट पिउने गरेको पाइयो । किन भने यस उमेरका महिलाहरूमा शिक्षा र सञ्चारका माध्यमले गर्दा चुरोटले गर्ने असरको बारेमा बढी चेतना भएको पाइएको हुनाले चुरोट पिउने आदत अन्य उमेरका महिलाका तुलनामा कम भेटियो । बिस्तारै उमेर बढ्दै जाने क्रममा शरीरमा भिन्न रोगहरू जस्तै धम्की, खोकी लाग्ने हुँदा ५० वर्षभन्दा माथिका वृद्धाहरूमा चुरोट पिउने क्रम घटेको पनि जानकारीमा पाइएको छ । तर पनि आधा भन्दा बढीले चुरोट पिउने गरेकोबाट यहाँका महिलाहरूमा चुरोटको असरबारे अज्ञानता भएको देखिन्छ ।

तालिका ५.१३ उत्तरदाताहरूको चुरोट पिउने आदतको स्थितिको विवरण (%)

| चुरोट पिउनु हुन्छ ? | उमेर समुह | | | जम्मा |
|-----------------------|-----------|-------|-------|-------|
| | ≤२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| पिउँछु | ३३.३ | ७५.० | ६६.७ | ५८.३ |
| पिउँदैन | ६६.७ | २५.० | ३३.३ | ४१.७ |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताहरूको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

५.२ आर्थिक अवस्था

मानव क्रियाकलापका हरेक पक्षलाई प्रभाव पार्ने आर्थिक पक्षले समुदायको सांस्कृतिक रीतिरिवाज, चालचलन, र जीवनशैली आदिमा पनि प्रत्यक्ष प्रभाव पारेको हुन्छ। अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजका परिवारको आर्थिक अवस्थालाई स्थानीय अन्य जातको तुलनामा राम्रै मान्न सकिन्छ। ६० घरधुरीमा उत्तरदाताको आधारमा वर्षभरी नै आफ्नो खेतवारीबाट उब्जाएको अन्नले खान पुग्ने स्थिति भने छैन। जसको कारणले उनीहरू मजदुरी पशुपालन, अरुको जग्गा कमाउने, सानातिना किराना पसल र चियापसल राख्ने आदि कार्य गरेर जीविकापार्जन गरिरहेका छन्। यहाँ महिलाहरूका अवस्थालाई हेर्दा उनीहरूको रोजगारीको क्षेत्र भनेको कृषि नै हो। उनीहरू बिहान बेलुका घरायसी काम गर्ने र दिउँसो खेतवारीको काम गर्ने जंगल गएर घाँस दाउरा ल्याई आफ्नो दिनचर्या बिताउँछन्।

यी महिलाहरू अधिकांश समय घरायसी काममै व्यतित हुने भए तापनि उनीहरूको कामको आर्थिक रूपले मूल्याङ्कन गरिदैन। त्यसैले गर्दा पनि यहाँका महिलाहरूको आर्थिक स्थिति खासै राम्रो देखिदैन। यस क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा संयुक्त परिवारको पक्कड भएकोले भात पकाउने, वस्तुभाउलाई घाँस पानी खुवाउँने, बालबच्चाहरूको हेरचाह गर्ने, स्कूल पठाउने खाना पकाउने जस्ता कार्यमा सासु वा वृद्धामहिलाहरूको कार्य हुनाले यी महिलाहरू घर बाहिरका काममा त्यति निस्किदैनन्। यिनीहरू प्राय घरभित्रैको काममा व्यस्त देखिन्छ। यस क्षेत्रका तामाङ्ग समाजको मुख्य पेशा, सहायक पेशा, भूस्वामित्व पशुपालन, खाद्यन्न प्रयाप्तता र यी कुरामा महिला र पुरुषको पहुँचको बारेमा अध्ययन गरिएको छ।

५.२.१ प्रमुख पेशा

मानिसहरू आफ्नो जीविकापार्जन गर्नका लागि विभिन्न पेशामा संलग्न हुन्छन्। यसले व्यक्ति वा परिवारको आर्थिक स्थितिको निर्धारण गर्दछ। अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजका मानिसहरू पनि विभिन्न

पेशामा संलग्न भएको पाइन्छ । पेशा र लिङ्गको आधारमा उत्तरदाताको विवरणलाई ५.१४ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ५.१४ पेशा र लिङ्गको आधारमा जनसंख्याको विवरण

| पेशा | पुरुष | | महिला | | जम्मा | |
|------------|--------|---------|--------|---------|--------|---------|
| | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| कृषि | ७२ | ४५.० | १०३ | ६५.२ | १७५ | ५५.० |
| गैर कृषि | ४१ | २५.६ | ११ | ७.० | ५२ | १६.४ |
| सिकर्मी | ३ | १.९ | ० | ०.० | ३ | ०.९ |
| नीजि जागिर | १५ | ९.४ | ६ | ३.८ | २१ | ६.६ |
| व्यापार | २ | १.३ | ० | ०.० | २ | ०.६ |
| विदेश गएको | ९ | ५.६ | ० | ०.० | ९ | २.८ |
| सिलाई | ० | ०.० | ३ | १.९ | ३ | ०.९ |
| ड्राइभर | १२ | ७.५ | २ | १.३ | १४ | ४.४ |
| विद्यार्थी | ४६ | २८.८ | ४२ | २६.६ | ८८ | २७.७ |
| अशक्त | १ | ०.६ | २ | १.३ | ३ | ०.९ |
| जम्मा | १६० | १००.० | १५८ | १००.० | ३१८ | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

तालिका ५.१४ अनुसार कृषिमा ५५ प्रतिशत मानिसहरु संलग्न छन् भने गैर कृषिमा १६.४ प्रतिशत मात्र संलग्न छन् । कृषिमा पनि पुरुषको तुलनामा महिलाको संलग्नता बढी पाइन्छ । गैर कृषिभित्र सिकर्मी काममा ०.९ प्रतिशत, नीजि जागिरमा ६.६ प्रतिशत, व्यापारमा ०.६ प्रतिशत, विदेश गएको २.८ प्रतिशत, ०.९ प्रतिशत, ड्राइभर ४.४ प्रतिशत रहेको छ । जसमा पुरुषको तुलनामा महिलाको संलग्नता कम पाइन्छ । विद्यार्थी २७.७ प्रतिशत रहेको छ । जसमा पुरुषको र महिलाको खासै अन्तर भेटिदैन । यस तालिकामा काम गर्न नसक्ने अशक्त ०.९ प्रतिशत रहेको छ । पशुपालन पनि यहाँ मुख्य पेशाको रूपमा रहेको छ । यहाँ प्रत्येकको घरमा प्राय भैंसी र बाखा-खसी भेटिएको छ । सिकर्मी, सिलाई तथा व्यापारमा लाग्नेहरुको संख्या न्यून छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने नगद आम्दानी आधार पशुबेचबिखनभन्दा अन्य खासै नभएको र आम्दानी हुने काममा महिलाको सहभागिता एकदमै न्यून देखिन्छ । त्यसैले उनीहरुको आर्थिक अवस्था खासै उत्तम देखिदैन ।

५.२.२ खाद्यन्नको पर्याप्तता

यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा वर्षभरी खाना पुग्ने ६१.७ प्रतिशत र खाना नपुग्ने ३८.३ प्रतिशत रहेको छ (तालिका ५.१५) । आफूले उब्जाएको खाद्यन्नबाट वर्षभरीलाई खान पुग्ने र नपुग्ने तथ्याङ्कलाई ५.१५ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ५.१५ वर्षभरी खाद्यन्न नपुग्ने परिवारले खाद्यन्न परिपूर्तिका लागि अपनाइएका विभिन्न सहायक पेशाका आधारमा परिवारको विवरण

| विवरण | संख्या | प्रतिशत |
|----------------------------------|--------|---------|
| अरुको जमिन कमाएर | ५ | ८.३ |
| काठपात बेचेर | १ | १.७ |
| नीजि जागिर/व्यापार | १ | १.७ |
| अरुको जमिन कमाएर/ज्यालादारी गरेर | ८ | १३.३ |
| घरको वस्तुभाउ बेचेर | १ | १.७ |
| ज्यालादारी गरेर | ३ | ५.० |
| काठमाण्डौंबाट श्रीमानले कमाएर | १ | १.७ |
| सिकर्मी गरेर | १ | १.७ |
| ज्यालादारी/वस्तुभाउ बेचेर | १ | १.७ |
| जाँड-रक्सी बेचेर | १ | १.७ |
| जम्मा | २३ | ३८.३ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

वर्षभरी खाना नपुग्ने अवस्था देखिएकाले कसरी खाद्यन्न परिपूर्ति गर्दछन् भन्ने अध्ययनलाई यहाँ उल्लेख गरिएको छ । उनीहरु आफ्नो परिवारलाई आवश्यक पर्ने खाद्यन्न परिपूर्ति गर्नको लागि विभिन्न पेशा अपनाएका छन् । जुन ५.१५ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ । अरुको जग्गा कमाएर ८.३ प्रतिशत , काठपात बेचबेचेर १.७ प्रतिशत, नीजि जागिर र व्यापार १.७ प्रतिशत, अरुको जग्गा कमाएर र मजदुरी गरेर १३.३ प्रतिशत, ज्यालादारी गरेर ५.० प्रतिशत, परिवारका सदस्यले शहरबाट कमाएर १.७ प्रतिशत, सिकर्मी गरेर १.७ प्रतिशत मजदुरी र वस्तुभाउ बेचेर १.७ प्रतिशत, रक्सी बेचेर १.७ प्रतिशत आदि काम गरेर जीविकापार्जन गर्दछन् । यस तथ्याङ्क अनुसार मजदुरी र अरुको जमिन कमाएर खाद्यन्न परिपूर्ति गर्ने प्रतिशत अन्य पेशाका तुलनामा बढी छन् ।

५.२.३ ज्याला

मानिसले आफ्नो श्रम विक्री गरेवापत उसले नगद प्राप्त गर्दछ, त्यो नै ज्याला हो । यहाँ कृषिमा उच्च चाप भएको समयमा बाहेक पारिवारिक श्रमद्वारा नै कृषि श्रम पूरा गरिन्छ । कृषि चक्रले श्रम शक्ति र संस्कृतिसँग प्रत्यक्ष सम्बन्ध राख्दछ । यहाँ कृषि उच्च चापको समयमा परमद्वारा भण्डै ८० प्रतिशत श्रम

पूरा हुन्छ । यहाँ ज्यालादारी गर्ने घर बाहेकले आफ्नो काम परमद्वारा नै गर्दछन् । यस अध्ययनमा महिला र पुरुषको गरेको समान कामका लागि समान ज्याला पाउँछन् कि पाउँदैन भन्ने बारेमा अध्ययन गरिएको छ । त्यस्तै यस तामाङ्ग समाजमा महिला र पुरुषले गर्ने कामको मूल्याङ्कन कसरी गरिन्छ, आदि बारेमा अध्ययन गरिएको छ । जसमा समान कामको लागि समान ज्याला पाउने जस्तै धान काट्ने, खेतको कान्ना तास्ने, गोड्ने, टिप्ने जस्ता सामान्य काममा समान ज्याला भएता पनि गाह्रो र असजिलो काममा पुरुषको मात्र संलग्नता हुने हुँदा यस्ता काममा समान ज्याला नहुने कुरा उनीहरू बताउँछन् ।

तालिका ५.१६ ज्यालामा लैङ्गिक भेदभाव

| ज्याला समान नदिनाका कारणहरू | उमेर समुह | | | जम्मा |
|-----------------------------|-----------|-------|-------|-------|
| | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| पुरुष सरह काम गर्न नसकेर | ९.५ | ३७.५ | ४०.० | २८.३ |
| अवमूल्याङ्कन गरेर | ४.८ | ४.२ | ३.३ | ५.० |
| चलन नै त्यस्तै भएर | ८५.७ | ५८.३ | ५६.७ | ६६.७ |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताको संख्या | २९ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

अध्ययनको क्रममा समान ज्याला नपाउने कारण सम्बन्धी जिज्ञासा राख्दा उत्तरदाताहरूबाट आएको धारणलाई ५.१६ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ । पुरुषले जति काम गर्न नसकेर २८.३ प्रतिशत महिलाको अवमूल्याङ्कन गरेर ५.० प्रतिशत, चलन नै त्यस्तो भएर ६६.७ प्रतिशत बताए । जसमा भिन्न भिन्दै उमेर समुह अनुसार भिन्दा भिन्दै विचार व्यक्त गरे । पुरुषले काम गर्न नसकेर भन्ने ३०-४९ उमेर समूह र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूह बढी छन् भने चलनचल्ती नै त्यस्तो भएर भन्नेहरूमा २९ वर्षमुनिका उमेर समूह छन् भने आईमाईलाई अवमूल्याङ्कन गरेर भन्ने विचार राख्ने पनि २९ वर्षभन्दा मुनिका महिलाहरू रहेका छन् ।

अध्याय ६

तामाङ्ग जातिका महिलाहरूको आर्थिक अवस्था

६.१ महिलाहरूको जग्गाजमिनमा स्वामित्व

यहाँ १ देखि ५ रोपनीसम्म बारी हुने घरधुरीहरू ६५ प्रतिशत छन् भने १ देखि ५ रोपनी खेत हुने घरधुरी २० प्रतिशत मात्र छन् । यहाँ २१ रोपनीभन्दा माथि खेत वा बारी हुने घरधुरीहरूमा धेरै खेत हुने घरधुरीको प्रतिशत धेरै छ । अर्थात् बारी हुने घरधुरीको प्रतिशत न्यून देखिन्छ । यहाँका मानिस एकदमै गरीब सुकुम्बासी पनि छैनन् र एकदमै धनी पनि छैनन् । जस्तै : कम्तिमा ३.५ रोपनी र बढीमा ३८ रोपनीसम्म जग्गाजमिन भएका घरधुरी पाइएको छ । सर्वेक्षण क्षेत्रको घरधुरीको औषत बारी ४.६ रोपनी, खेत ११.६ रोपनी र खेत-बारी जम्मा औषत १६.२ रोपनी रहेको पाइएको छ ।

तालिका ६.१ सर्वेक्षण गरिएका घरधुरीको जग्गाको विवरण

| जमिनको क्षेत्रफल (रोपानी) | बारी | | खेत | | खेत र बारी जम्मा | |
|------------------------------|---------------|---------|---------------|---------|------------------|---------|
| | घरधुरी संख्या | प्रतिशत | घरधुरी संख्या | प्रतिशत | घरधुरी संख्या | प्रतिशत |
| १-५ | ३९ | ६५.० | १२ | २०.० | ६ | १०.० |
| ६-१० | १७ | २८.३ | १९ | ३१.७ | १५ | २५.० |
| ११-१५ | २ | ३.३ | १६ | २६.७ | ११ | १८.३ |
| १६-२० | १ | १.७ | ७ | ११.७ | १२ | २०.० |
| २१ भन्दा माथि | १ | १.७ | ६ | १०.० | १६ | २६.७ |
| जम्मा | ६० | १००.० | ६० | १००.० | ६० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यस तथ्याङ्कले ८० प्रतिशत घरधुरीमा ७५.३ प्रतिशत जग्गाजमिन पुरुषको नाममा रहेको छ भने ११.७ प्रतिशत घरधुरीमा जम्मा १२.९ प्रतिशत जग्गाजमिन महिलाको नाममा रहेको देखिएको छ । यसरी यस तथ्याङ्कले महिलाको नाममा जग्गाजमिन एकदमै थोरै मात्र भएको देखाइएको छ । पुरुषको नाममा धेरै नै जग्गाजमिन भएको देखिन्छ । प्राय पृथिसतात्मक परम्परा भएकोले बाबुको अंश छोरालाई दिने चलन छ । छोरा नभएर अपुताली परेको ठाउँमा र नयाँ पुस्ताहरू विदेश गएर कमाएको पैसाले आफ्ना श्रीमतीको नाममा जग्गाजमिन किन्ने परिपाटी भरखरै बनिरहेको क्रमले गर्दा महिलाका नाममा पनि जग्गाजमिन देख्न थालिएको हो । साथै महिला र पुरुषको नाममा पनि जग्गाजमिन राख्न थालेको पनि यस तथ्याङ्कले देखाउँछ ।

तालिका ६.२ लैङ्गिक आधारमा जग्गाजमिनको स्वामित्व

| लिङ्ग | घरधुरी | | जमिन | |
|------------------|--------|---------|-------------------|---------|
| | संख्या | प्रतिशत | क्षेत्रफल (रोपनी) | प्रतिशत |
| महिला | ७ | ११.७ | १२३.० | १२.७ |
| पुरुष | ४८ | ८०.० | ७३५.५ | ७५.७ |
| महिला पुरुष दुबै | ५ | ८.३ | ११३.० | ११.६ |
| जम्मा | ६० | १००.० | ९७१.५ | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६.२ महिलाको घरायसी सम्पत्ति (पशुपालन-पेवापात) मा स्वाभित्व

महिलाहरूको आफ्नो छुट्टै पेवापात भएमा उनीहरूको स्तर माथि हुनसक्छ । जसको कारणले उनीहरू परिवारका अन्य सदस्यहरूसँग दबिएर वा हेपिएर बस्नुपर्ने वाध्यता पर्दैन ।

तालिका.६.३ घरमा पालिएका पशुधनको संख्या र स्वामित्वको विवरण

| पशुधनको प्रकार | घरको स्वामित्वमा भएको संख्या | प्रतिशत | महिलाको स्वामित्वमा भएको संख्या | प्रतिशत | जम्मा |
|----------------|------------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------|
| बाखा | ५१ | ७०.८ | २१ | २९.२ | ७२ |
| खसी | १ | १४.३ | ६ | ८५.७ | ७ |
| गाई | ७ | १००.० | ० | ०.० | ७ |
| गोरु | ४८ | १००.० | ० | ०.० | ४८ |
| भैंसी | ४५ | ९०.० | ५ | १०.० | ५० |
| कुखुराहरू | २३० | ९७.० | ७ | ३.० | २३७ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यस जातिका महिलाहरूको पशुधन पेवापातको बारेमा अध्ययन गर्दा यहाँ विशेष गरी महिलाहरूले बाखा-खसी, भैंसी र केहीले कुखुराहरू पालेको देखियो । यी पशुधन बेचेर महिलाहरूले आफ्नो पेवापात नगद बनाउन सक्ने हुँदा उनीहरू आफूलाई दरिलो भएको ठान्दछन् । यहाँ तालिका ६.३ मा ६० घरधुरीमा जम्मा ७२ वटा बाखाहरूमा महिलाहरूको पेवा २१ वटा छन् । त्यस्तै खसी ७ वटामा ६ वटा महिलाहरूको पेवापात छन् । त्यस्तै भैंसी ५० वटामा ५ वटा र कुखुराहरू २३७ मा जम्मा ७ वटा महिलाहरूको पेवापात छन् । यहाँ विशेष गरेर पैसा धेरै आउने पशुधन महिला पाल्दार्हेछन् भने स्पष्ट हुन्छ । साथै खसी बाखा पाल्न पनि सजिलो बेचन पनि छिट्टै पाइने र यसलाई धेरै लगानी गर्नु नपर्ने हुँदा विशेष गरेर बाखाखसी नै पाल्न रुचाउँछन् भन्ने कुरा बुझिन्छ । बाखाहरू प्राय महिलाहरूलाई माइतिबाट पठाएर पालेको हुने हुनाले धेरैको बाखा, खसी-बोकाहरू पेवाको रूपमा पाइएको छ ।

६.३ महिलाका गरगहनामा स्वामित्व

६० घरधुरीका उत्तरदाता महिलाहरुको गरगहना बारे अध्ययन गर्दा ४७ जनाको गरगहना भएको र १३ जना महिलाहरुको नाकमा फूली बाहेक अन्य गरगहना केहि नभएको पाइएको छ । गरगहना भएका ४७ जनामा पनि उनीहरुले लगाएको गरगहनाको मूल्य पनि फरक फरक थियो । जुन तालिका ६.४ मा उल्लेख गरिएको छ ।

तालिका.६.४ उत्तरदाता महिलाहरूसँग भएको गरगहनाको मूल्यको विवरण

| रुपैयाँ | गरगहना भएका महिलाहरुको संख्या | जम्मा रु. | औषत रु. |
|-------------|-------------------------------|-----------|---------|
| ६०००-२०००० | १९ | १६४,१०० | ८,६३७ |
| २१०००-४०००० | २५ | ७११,००० | २८,४४० |
| ४१०००-५०००० | ३ | १५०,००० | ५०,००० |
| जम्मा | ४७ | १,०२५,१०० | २१,८११ |

नोट : उत्तरदाता महिलाहरु मध्ये ४ जना महिलाहरूसँग बैंक खाता खोलिएको पाइयो भने १३ जना महिलाहरूसँग गरगहना कुनै पनि पाइएन ।

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यहाँ रु. ६,०००-२०,००० सम्मको गरगहना लगाउने १९ जना थिए भने रु.२१,०००-४०,००० सम्म मूल्य पर्ने गरगहना लगाउने २५ जना थिए । रु. ४१,०००-५०,००० सम्मका मूल्यका गरगहना लगाउने ३ जना मात्र थिए । सबै भन्दा बढी रु. २१,०००-४०,००० मूल्य सम्मका गरगहना लगाउने महिलाहरु धेरै थिए । गरगहनामा ठूलो ढुङ्गी, तिलहरी, फूली (ठूला बुडा भएको) चेप्टे सुन र माडवारी थिए भने कसै कसैले बुलाकी पनि लगाएका थिए । चेप्टे सुन, बुलाकी, ढुङ्गी लगाउने महिलाहरु प्राय ४० वर्षभन्दा माथिका थिए भने युवा महिलाहरुले भने सिक्री, तिलहरी, टप, रिड र हातमा औँठी आदि आधुनिक किसिमका गरगहना लगाइएको पाइएको छ । गरगहना बढी लगाउने महिलाहरुमा पुराना पुस्ता अर्थात ५० वर्षभन्दा माथिका महिलाहरु थिए ।

६.४ महिलाहरुको आयमुलक काममा संलग्नता

तामाङ्ग समाजका महिलाहरु घरायसी काम र खेतिपातिमै प्राय व्यस्त देखिन्छन् । खासै आमदानी हुने काममा सहभागिता देखिदैन । ६० जना उत्तरदाताहरु मध्ये १० जना मात्र घरायसी र खेतिपाति बाहेक आयमुलक कार्यमा सहभागिता भएको पाइएको छ । जसमा सिलाई बुनाई, महिला समूह, बाटाका नजिक र घर धेरै भएको क्षेत्रमा सानातिना चिया पसल र किराना पसलमा संलग्न भएको देखियो । यसरी आयमुलक कार्यमा संलग्न महिलाहरुको सामाजिक, आर्थिक स्थिति अन्य ५० जना उत्तरदाता

महिलाहरूको तुलनामा उच्च देखियो । उनीहरूमा आत्मबल भएको, स्वाभिमान बढेको, अन्यको तुलनामा चेतनाको वृद्धि भएको पनि देखियो । यसरी आयमुलक कामले उनीहरूमा अन्य महिलाको तुलनामा उच्च हैसियत भएको पाइएको छ । महिला समूहमा भाग लिनाले एक त संकटमा आर्थिक कठिनाई पूर्ति गर्न सकियो भने अर्को तर्फ महिलाहरूको भेलाले एक अर्को महिलाहरूको भावना र चेतनाका कुरा एक आफसमा बाँड्ने अवसर पाउने हुँदा बढी क्रियाशील र साहसी भएको कुरा पनि पाइएको छ । चिया पसल र किराना पसल राख्ने महिलाहरूको आफ्नो जमिन अरुलाई कमाउन दिइएको र केहीको त खासै जमिन धेरै नभएकोले यस व्यवसाय गरेको बताए । यस्ता व्यवसाय गरेर जग्गाजमिन नहुनेले जग्गाजमिन जोडेको पनि जानकारीमा पाइयो । तल तालिकामा आयमुलक कार्यमा महिलाको सहभागिता देखाइएको छ ।

तालिका.६.५ आयमुलक काममा महिलाहरूको संलग्नताको विवरण

| विवरण | उत्तरदाताहरूको संख्या | प्रतिशत |
|--|-----------------------|---------|
| तपाईं कुनै आम्दानी हुने कार्यमा संलग्न हुनुहुन्छ ? | | |
| संलग्नता छैन | ५० | ८३.३ |
| संलग्नता छु | १० | १६.७ |
| कामको प्रकार | | |
| सिलाई | २ | ३.३ |
| चिया / किराना पसल | ५ | ८.३ |
| महिला समूहमा संलग्न | ३ | ५.० |
| जम्मा | ६० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६० घरधुरी महिला उत्तरदाताहरूमा ५० जना महिलाहरू कुनै पनि आयमुलक कार्यमूलक कार्यमा संलग्न नभएको पाइयो । किराना र चियापसलमा ५ जना, महिला समूहमा ३ जना र सिलाईमा २ जना संलग्न भएको पाइएको छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने महिलाहरूको संख्या अझै पनि आयमूलक कार्यमा संलग्नता न्यून देखिन्छ ।

६.५ उत्तरदाताको परिवारको आम्दानीमा पहुँच

यस क्षेत्रका तामाङ्ग जातिमा परिवारको आम्दानी महिलाहरूले नै राख्ने गरेको पाइएको छ । यहाँ ५१.७ प्रतिशत महिलाले मात्र, ४० प्रतिशत पुरुषले मात्र र ८.३ प्रतिशत दुबैले राख्ने देखिएको छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने डा. गोविन्द सुवेदीले (२००७) यसै क्षेत्रमा गर्नुभएको अध्ययनमा तामाङ्ग जातिमा महिलाहरूलाई पुरुषहरूले बढी विश्वास गरेको र आम्दानीमाथि अधिकार पनि धेरै नै दिएकोले अन्य

जातिका महिलाहरूका तुलनामा यस जातिका महिलाहरूको हैसियत उच्च छ भन्ने तथ्यलाई मेरो अध्ययनले पनि पुष्टि गर्दछ। (तालिका.६.६)।

तालिका.६.६ परिवारमा आम्दानी कसले राख्दछ भन्ने सवालको विवरण

| आम्दानी कसले राख्ने गर्छ | संख्या | प्रतिशत |
|--------------------------|--------|---------|
| पुरुष | २४ | ४०.० |
| महिला | ३१ | ५१.७ |
| दुबै | ५ | ८.३ |
| जम्मा | ६० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६.६ पारिवारिक निर्णय प्रक्रियामा महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति

घरायसी व्यवहार निर्णयहरूमा महिलाहरूको विचार लिने गरिएको छ कि छैन भन्ने सन्दर्भमा सवाल गर्दा ८६.७ प्रतिशतले लिने गरेको पाइएको छ। त्यसमा पनि भिन्दा भिन्दै उमेर समूह अनुसार फरक फरक तथ्याङ्क पाइएको छ। सबैभन्दा बढी ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहका महिलाहरूको निर्णय प्रक्रियामा पूर्ण सहभागिता देखिएको छ भने क्रमशः उमेर घट्दै जाँदा निर्णय प्रक्रियामा सहभागिताहरू कम भएको देखिन्छ। यसबाट के देखिन्छ भने कम उमेर समूहका महिलाहरूलाई भन्दा बढी उमेर समूहका महिलाहरूको पारिवारिक निर्णय प्रक्रियामा बढी सहभागि हुने गरेको पाइएको छ। २९ वर्षभन्दा मुनिका धेरै जसो बुहारी र छोरी पर्ने हुनाले यस्ता कार्यमा कमै सहभागिता गराइएको पाइन्छ। पारिवारिक निर्णय प्रक्रिय पनि घरायसी आर्थिक व्यवहारमा महिलाको सहभागितामा जस्तै किनमेल (चल), किनबेच (अचल), बेचबिखन(चल) र बेचबिखन(अचल), ऋणसापट, खानपान आदिमा महिलाको विचार लिने गरेको अवस्थाको बारेमा उत्तरदाताले दिएको जानकारी ६.७ तालिकामा प्रस्तुत भएको छ। तालिका ६.७ अनुसार घरायसी व्यवहारका निर्णयहरूमा महिलाको अवस्थाको बारेमा जानकारीको क्रममा महिला उत्तरदाताको विचार समावेश गरिएको छ। घरायसी व्यवहारमा महिलाको विचार लिनेको ८० प्रतिशत रहेको छ। त्यसमा पनि भिन्दा भिन्दै उमेर समूह अन्तर्गत फरक फरक तथ्याङ्क देखिन्छ। घरायसी व्यवहार निर्णयमा ५० वर्षभन्दा माथिका समूहलाई सतप्रतिशत विचार लिने गरेको पाइएको छ भने ३०-४९ भित्रका उमेर समूहका ८३.३ प्रतिशत र २९ वर्षमुनिका उमेर समूहमा जम्मा ८१.० प्रतिशतले महिलाहरूको विचार लिने गरेको पाइएको छ। यहाँ कम उमेर समूहभन्दा उमेर बढ्दै जाने क्रममा पुरुषहरूले महिलासँग बढी सरसल्लाह र विचार लिने गरेको पाइएको छ। त्यस्तै किनमेल

चलमा ४४.२ प्रतिशत महिलाको विचार लिने गरेको पाइन्छ भने जसमा सबैभन्दा बढी २९ वर्षका उमेर समूह र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहको बढी प्रतिशत छ भने ३०-४९ वर्षका महिलाहरूको दोस्रो स्थानमा छ । तर अचल मा भने ३०-४९ उमेर समूहको प्रतिशतको दर बढी छ । सबैभन्दा थोरै २९ वर्षभन्दा मुनिको समूह र ५० वर्षभन्दा माथिको उमेर समूह रहेको छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने अचल किनमेलमा निर्णय प्रक्रियामा ३०-४९ वर्ष भित्रका समूहका महिलाहरूको उच्च स्थान रहेको छ । किनभने यस उमेर समूहको महिलाहरूका पुरुषहरूले कमाइ गर्ने उमेर र यस उमेरका महिलाहरू आफैँ अभिभावकको रूपमा रहेको हुन्छन् भने ५० वर्षभन्दा माथिका वृद्धा महिलाहरूको न्यून हुनुको कारण छोराबुहारीले विचार त्यति लिने नगरेको र २९ वर्षमुनिका महिलाहरूमा न्यून सहभागिता हुनुको कारण छोरी वा बुहारी हुनाले आफूभन्दा सानाका बाबु-आमा वा सासू-ससूराले विचार खासै लिने नगरेको बताए । किनबेचमा चलमा ५८.८ प्रतिशतले विचार लिने गरेको पाइन्छ । त्यसमा पनि भिन्दाभिन्दै उमेर समूह अनुसार फरक फरक विचारहरू देखिन्छ ।

तालिका.६.७ महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति वारे

| विवरण | उमेर समूह | | | जम्मा |
|--|-----------|-------|-------|-------|
| | ≤२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| घरायसी व्यवहार निर्णयमा तपाईंको विचार लिने गरिएको छ कि छैन ? | | | | |
| छ | ८१.० | ८३.३ | १००.० | ८०.० |
| छैन | १९.० | १६.७ | ०.० | २०.० |
| यदि छ भने कुन कुन प्रक्रियामा ? | | | | |
| किनमेल | | | | |
| चल | ४७.५ | ४०.० | ४५.० | ४४.२ |
| अचल | ५२.९ | ६०.० | ५५.० | ५५.८ |
| बेचबिखन | | | | |
| चल | ६२.५ | ५५.० | ६०.० | ५८.८ |
| अचल | ३७.५ | ४५.० | ४०.० | ४१.२ |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

नोट: ऋण सापट गर्दा यस समाजमा सतप्रतिशतले नै घरको महिलासँग सोध्ने गरेको पाइयो ।

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यहाँ अचल सम्पति बेचबिखनमा जम्मा ४१.२ प्रतिशत मात्र महिलाको विचार लिने गरेको पाइन्छ । बेचबिखन चलमा पनि २९ वर्षभन्दा मुनिका र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहको बढी विचार लिने गरको भए पनि अलचमा भने २९ वर्षभन्दा मुनिका र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहका

महिलाहरूमा सबैभन्दा कम विचार लिने गरेको तथ्याङ्कले देखाउँछ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने सामान्यतया चल वस्तुहरू किनमेल गर्दा वा बेचबिखन गर्दा ५० वर्षभन्दा माथिका र २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूहको प्रतिशत बढी भएता पनि अचल सम्पति किनमेल र बेचबिखन गर्दा प्राय ३०-४९ वर्ष उमेर समूहको विचार बढी लिने गरेको पाइएको छ ।

६.७ लैङ्गिक श्रम विभाजन बारे

यस क्षेत्रका उत्तरदाता महिलाहरूलाई लैङ्गिक भूमिकाको (श्रम विभाजन) बारे सवाल गर्दा लुगा सिउने काम महिला र पुरुष दुबैले भन्ने सतप्रतिशत पाइयो सिकर्मी काम पुरुषको मात्र हो भन्नेहरू भण्डै ८७ प्रतिशत पाइयो भने, ड्राइभर महिला र पुरुष दुबैले गर्छन् भन्नेहरू भण्डै ९२ प्रतिशत, डाक्टर दुबैले गर्छन् भन्नेहरू ८८ प्रतिशत, शिक्षक दुबै भन्ने सतप्रतिशत, बालबच्चाहरू हेरचाह गर्ने दुबै भन्नेहरूमा भण्डै ५६ प्रतिशत महिलाहरूको भन्नेहरूमा ४३ प्रतिशत, खाना पकाउने पानी ल्याउने दुबै भन्नेहरूमा ५६ प्रतिशत, महिलाहरूको भन्नेहरूमा ४७ प्रतिशत, दाउरा घाँस गर्ने काम दुबैको भन्नेहरूमा ५८ प्रतिशत, महिलाले मात्र भन्नेहरूमा ४२ प्रतिशत रहेको छ । यस अध्ययन क्षेत्रको आधारमा सिकर्मी महिलाहरूको काम होइन विशेष गरेर पुरुषको हो भन्ने धारणा अभै प्रशस्त पाइन्छ । त्यस्तै डाक्टर, ड्राइभर भनेपछि पुरुष मात्र हुन्छ भन्ने धारणा अभै पनि जनमानसमा रहेको देखिन्छ । खाना पकाउने घाँस पानी गर्ने दाउरा ल्याउने महिलाहरूको काम हो भन्ने धारणा धेरै महिलाहरूमा पाइएको छ । तर पनि यी कामहरू पुरुष र महिला दुबैको हो भनी अधिकांशभन्दा बढीले बताएका छन् । तर शिक्षक र सिउने काम गाउँघरमा पनि सबैले देखेका हुनाले दुबैको भन्नेहरूमा सतप्रतिशत नै देखियो ।

तालिका.६.८ विवाहिता महिलाहरूलाई उनीहरूको श्रीमानले घरायसी काममा सहयोग गर्छन् कि गर्दैनन् भन्ने सवालको विवरण

| विवरण | उत्तरदाताहरूको हालको उमेर | | | जम्मा |
|--|---------------------------|-------|-------|-------|
| | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| घरायसी काममा सहयोग गर्नुहुन्छ कि हुदैन ? | | | | |
| गर्नुहुन्छ | ५०.० | ५२.२ | ४०.० | ४८.९ |
| अलिअलि गर्नुहुन्छ | ३९.३ | २६.९ | ४६.७ | ३३.३ |
| गर्नुहुन्न | ९८.८ | २९.७ | ९३.३ | ९८.५ |
| जम्मा | ९००.० | ९००.० | ९००.० | ९००.० |
| उत्तरदाताहरूको संख्या | ९६ | २९ | २३ | ५४ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६० घरधुरीका उत्तरदाताहरुलाई श्रीमानले घरायसी काममा सहयोग गर्नुहुन्छ भन्ने सवाल गर्दा गर्नुहुन्छ भन्ने ४८.१ प्रतिशत, अलिअलि गर्नुहुन्छ भन्नेहरुमा ३३.३ प्रतिशत र गर्नुहुन्न भन्नेहरुमा १८.५ प्रतिशत रहेको छ । जसमा सहयोग गर्नुहुन्छ भन्नेहरुमा ३०-४९ उमेर समूहका संख्या बढी छ र अलिअलि सहयोग गर्नुहुन्छ ५० वर्षमाथिका समूह बढी छन् (तालिका.६.८) ।

त्यस्तै सहयोग श्रीमानले नगर्ने कारणको सवालमा श्रीमान घर नभएर भन्ने सबैभन्दा बढी छन् । अरु घरका परिवारले सहयोग गर्ने भएकोले र श्रीमान व्यस्त हुनका कारणले सहयोग गर्ने नसकेको बताउने दोस्रो स्थानमा छन् भने एक जना श्रीमान अशक्त भएकाले र अर्को महिलाको श्रीमान बिहान बेलुका बजार घुम्न जाने, खाना खाने बेलामा मात्र घर आउने हुनाले घरमा सहयोग नगरेको कुरा स्वयं महिलाले नै जानकारी गराएको थियो ।

परिवारका अन्य सदस्यले सहयोग कतिको गर्छन् भन्ने सवालमा सहयोग गर्ने भण्डै ७२ प्रतिशत अलिअलि भन्ने भण्डै ५ प्रतिशत र गर्दैनन् भन्नेहरु भण्डै २३ प्रतिशत रहेका छन् । सबैभन्दा घरमा परिवारले सहयोग गर्ने ३०-४९ वर्षका उमेर समूह छन् । यस समाजका महिलाहरुलाई आफ्ना छोराछोरी र बुहारीहरुले सहयोग गर्ने हुँदा यस उमेर समूहमा सहयोग गर्ने संख्या धेरै रहेकोछ भने सहयोग पटकै नगर्ने २९ वर्षमुनिका उमेरमा संख्या बढी छ । यस उमेरमा प्राय महिला बुहारी हुने र यस उमेर समूहमा परिवारका संख्या कम हुने हुनाले सहयोग कम पाउँछन् । ५० वर्षभन्दा माथिका महिलाहरुलाई पनि घरका परिवारले धेरै सहयोग गर्ने गरेको पाइएकोछ । परिवारका अन्य सदस्यहरुले उत्तरदाता महिलाहरुलाई सहयोग नगर्ने कारण घरमा सहयोग गर्ने अरु सदस्य नभएकोले भन्नेको संख्या धेरै नै छ ।

कामको बोझ:

सामान्यता नेपाली समाजमा कामको बोझको अवस्थालाई हेर्दा पुरुषको तुलनामा महिलाहरुको बढी हुने गर्दछ । महिलाहरुले दैनिक रुपमा पुरुषकोभन्दा बढी समय घरायसी काममा बिताइरहेका पाइन्छ । उनीहरु बिहान उठेदेखि राती अबेरसम्म केही न केही काममा अल्झिरहेनु पर्ने अवस्था रहेको हुन्छ । शहरी क्षेत्रमाभन्दा पनि ग्रामीण क्षेत्रमा महिलाहरुको आर्थिक रुपले मूल्याङ्कन नगरिने भएकोले महिलाहरुको यस्ता कार्यले कुनै अर्थ नै रहेको हुँदैन । एकात्मक परिवारमा पुरुष र महिला दुवै धेरै खटिनु पर्ने स्थिति आउँछ भने यस्ता स्थितिमा पनि महिला नै बढी प्रभावित हुन्छ ।

तालिका.६.९ महिला र पुरुषको कामको बोझमा फरक पर्ने बारे महिलाहरूको धारणा

| विवरण | संख्या | प्रतिशत |
|---|--------|---------|
| महिला र पुरुषले समान काम गर्छन् | ३८ | ६३.३ |
| पुरुषहरूले महिला सरह काम गर्दैनन् | २२ | ३६.७ |
| पुरुषहरूले महिला सरह काम नगर्ने कारणहरू | | |
| गाह्रो काम गर्ने भएकोले | ७ | ११.७ |
| नबुझेको कारणले | ३ | ५.० |
| महिलालाई असमान व्यवहार गरेकोले | ७ | ११.७ |
| सानोतिनो घरको काम नहर्ने भएकोले | १ | १.७ |
| श्रीमान बूढो भएकोले | २ | ३.३ |
| श्रीमान घरमै नभएकोले | २ | ३.३ |
| जम्मा | ६० | १००.० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

६० घरधुरीमा पुरुष र महिलाले बराबर काम गर्दछ भन्ने ६३.३ प्रतिशत छ भने पुरुषले महिला सरह काम गर्दैनन् भन्ने ३६.३ प्रतिशत छ । यहाँ पुरुषले महिलालाई सहयोग गर्नेको प्रतिशत बढी देखिन्छ । यस जातिमा पुरुषले महिलालाई सहयोग गर्ने परम्परा अभूँ विद्यमान छ । पुरुषले महिला सरह काम नगर्ने कारणहरूमा महिलाहरूको धारणा अनुसार पुरुषले गाह्रो काम गर्ने हुनाले भन्ने ११.७ प्रतिशत, पुरुषहरूले नबुझेकोले भन्ने ५.० प्रतिशत, महिलालाई असमान व्यवहार गरेकोले भन्ने ११.७ प्रतिशत, सानातिनो घरको काम नहर्ने भएकोले भन्ने १.७ प्रतिशत, श्रीमान बूढो भएकोले ३.३ प्रतिशत, श्रीमान घरमा नभएकोले ३.३ प्रतिशत रहेको छ । विभिन्न उच्च जातिय संस्कार देखासिकी गर्ने प्रवृत्तिले महिलालाई घरायसी कार्यमा सहयोग नगर्ने चलन पनि विस्तारै पुरुषहरूमा आएको देखिन्छ ।

यहाँ श्रीमान र श्रीमतीको प्रतिदिन गरिने कामको समय निकाल्दा श्रीमानको ९.६४ घण्टा श्रीमतीको १०.५५ घण्टा गर्ने तथ्य प्राप्त भएको छ । महिलाहरूमा पनि उमेर समूह अनुसार कामको प्रतिदिन घण्टामा निकालिएको छ । जसमा २९ वर्षमुनिका उमेर समूहका महिलाहरूले १०.४८ घण्टा, ३०-४९ वर्ष समूहका ११.१७ घण्टा, ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूह ९.६७ घण्टा गर्ने तथ्य पाइएको छ । ३०-४९ वर्ष उमेर समूहले अन्य दुई उमेर समूहका महिलाको तुलनामा काम बढी गर्ने देखिएको छ । यस उमेर समूहमा विशेषगरी बुहारी हुने भएको र त्यसमा पनि एकात्मक परिवारमा परिवार परिणत भइसकेको र संयुक्त परिवारमा पनि सासू-ससूरा बुढाबूढी भइसकेको हुनाले कामको बोझ बढी देखिन्छ । ५० वर्षभन्दा माथिका महिलाहरू घरभित्रका काममा मात्र सीमित हुने र सानातिना काम गरिनै रहने हुँदा कामको घण्टा दर बढी नै देखिन्छ । ३०-४९ वर्षका उमेर समूहका महिलाहरूका तुलनामा २९ वर्षमुनिका उमेर समूहका महिलाका कामको घण्टा कम देखिनुमा यहाँ विवाह नगरेको छोराछोरी र त्यसमा पनि पढ्ने विद्यार्थीको संख्या बढी हुने भएकोले हो ।

तालिका ६.१० उत्तरदाताहरूको काम गर्ने औषत समय

| उमेर समूह | औषत | संख्या | औषतबाट विचलन (Standard deviation) |
|-----------|-------|--------|--------------------------------------|
| <=२९ | १०.४८ | २१ | २.६२० |
| ३०-४९ | ११.१७ | २४ | १.८५७ |
| ५०+ | ९.६७ | १५ | ३.१०९ |
| जम्मा | १०.५५ | ६० | २.५१४ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यस जातिमा पुरुषले महिलाहरूलाई घरायसी कार्यहरूमा प्राय जसोले सहयोग गर्ने गरेको पाइएको छ । यसरी पुरुषहरूले महिलाहरूलाई घरायसी काममा सहयोग गर्ने हुनाले पुरुष र महिलाको काममा पनि खाशै समय फरक भएको पाइएन ।

अध्याय ७

तामाङ्ग जातिका महिलाहरुको राजनीतिक चेतना तथा सहभागिता

एउटा मानिस त्यतिखेर मात्र एउटा नागरिक बन्दछ, जतिखेर उसले नागरिकता प्राप्त गर्दछ । नागरिकता राज्यद्वारा उपलब्ध गराइने एउटा महत्वपूर्ण प्रमाण पनि हो । कुनै देशको नागरिक भएको हैसियतले नागरिकता प्राप्त गर्नु उसको नैसर्गिक अधिकार हो । यस वडामा २०६२ सालमा आएको नागरिकता बनाउने टोलीमा गाउँमा नागरिकता प्रदान गरेको हुनाले उमेर पुगेका महिला र पुरुष सम्पूर्णको नागरिकता बनिसकेको छ । २९ वर्षभन्दा मुनिका केही व्यक्तिहरु छन् । जुन त्यस समयमा उमेर नपुगेकाले मात्र नागरिकता बनेको छैन ।

जीवन अध्ययन नं.२ : राजनीतिकमा सहभागि एक महिला

कान्छी तामाङ्ग-५० वर्षिय (अविवाहित) एक ग्रामीण महिला हुन । जुन यस गाउँको लागि उदाहरणीय बनेकोछ । उनको जीवन अध्ययनले एक अशिक्षित महिला पनि राजनीतिक रूपले सक्रिय हुन सक्छन् भन्ने देखाएको छ । गाउँमा २०५१/५२ सालतिर रापप्राको पार्टीबाट गा.वि.स.को महिला सदस्य उम्मेरदारको रूपमा उठेकी लक्ष्मी राजनीतिक विषयमा चासो लिएर कुरा गर्छिन । गाउँका महिलाहरुलाई अगाडि बढेर संघर्ष गर्नुपर्छ भनी धारणा पोख्छिन । उनी यस गा.वि.स.को स्वयम सेविकाको रूपमा काम गरेको ७/८ वर्ष भइसकेके बताउँछिन । उनले गाउँका बासिन्दाहरुलाई स्वास्थ्यसँग सम्बन्धित कुरा पनि सिकाउँछिन । पाँच वर्षभन्दा मुनिका बालबालिकाहरुलाई खोप दिने, भिटामीन खुवाउने, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या आएमा सरसल्लाह दिने आदि काम पनि गर्छिन । गा.वि.स.को हेल्थपोष्टमा बेला बेलामा विभिन्न तालिम पनि लिने गर्छिन । बालबालिकाहरुलाई महत्वपूर्ण खोप लगाउन गाउँमा सबैलाई प्रचार प्रसार गर्ने सूचना दिने पनि गर्छिन । विवाह नगरी बसेकोले माइतीबाट ४ पाथी धानको बीउ लाग्ने खेत अंशमा पाएको र उक्त जमिन आफ्नै नाममा गराउन पनि धेरै संघर्ष गर्नु परेको हामीलाई बताइन । हाल बाबुको जग्गाजमिन जम्मा १८ पाथी धानको बीउको र बारी २ हल भएको कुरा भनिन । हाम्रो समाजमा केटीले केही पाउन त समस्यासँग जुध्न जान्नुपर्छ भनी आफ्ना अनुभवहरु हामीलाई बताइन । आफूसँग भएको गरगहना आफैले कमाएर जोडेको बताउने लक्ष्मी आफूले जानेको कुरा अरुलाई पनि सधैं सिकाउने गर्दछिन । महिलाहरुले जीवनमा सफलता प्राप्त गर्न शिक्षा अति नै महत्वपूर्ण भएको पनि बताउँछिन । उनी आफू पढ्न नपाएकोले दुःख वा जीवनमा धेरै गाह्रो भएको कुरा पनि बताइन । उनी आफू प्रौढ शिक्षा लिएर साक्षर मात्र भएको कुरा बताउने लक्ष्मी सबै महिला दिदी बहिनीहरुले पढ्नै पर्ने कुरा व्यक्त गर्छिन । यसरी राजनीतिक गर्ने विभिन्न व्यक्तिहरुको सम्पर्क, हेल्थपोष्टमा काम गर्ने र विभिन्न जानकारी लिइरहने हुनाले यी महिला उमेरले प्रौढ र औपचारिक शिक्षा नलिए पनि अन्य महिलाको तुलनामा सचेतता बढी पाइन्छ ।

७.१ मतदानमा सहभागिता र निर्णय स्वतन्त्रता

कानूनी रूपमा उमेर पुगेका मानिसहरूले मतदातमा सहभागिता हुन पाउने अधिकार मानिसको नैसर्गिक अधिकार हो । मतदानमा भएको सहभागिताले उसको राजनैतिक चेतनाको उजगार गर्दछ । जसमा महिला र पुरुषको समान सहभागिता हुनुपर्दछ । अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा मतदानमा सहभागिता सम्बन्धी जिज्ञासा राख्दा उनीहरू हरेक चुनावमा सहभागिता भएको पाइएको छ । कानूनी रूपमा उमेर पुगेका महिला र पुरुष दुबैले मतदानमा समान सहभागिता भएको जनाएका छन् । यस बाट के स्पष्ट हुन्छ भने यस समाजमा मतदान गर्ने प्रक्रियामा समान सहभागिता रहेको पाइएको छ । राजनैतिक चेतनाको मापन त्यतिखेर हुन्छ जुन व्यक्तिले मतदान गर्ने बेलामा आफ्नो स्वविवेकको प्रयोग गर्दछ अथवा मतदान गर्ने निर्णय प्रक्रिया कस्तो छ भन्ने कुरा यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा हेर्न खोजिएको छ ।

तालिका.७.१ उत्तरदातको राजनीतिक सचेतना बारे (%)

| तपाईं कसले भनेको ठाउँमा भोट दिनुहुन्छ ? | उमेर समूह | | | जम्मा |
|---|-----------|-------|------|-------|
| | ≤२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| आफै(स्वविवेकले) | ८५.७ | ७९.२ | ५३.३ | ७५.० |
| श्रीमान | १४.३ | २०.८ | ४०.० | २३.३ |
| नातेदार | ०.० | ०.० | ६.७ | १.७ |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

यहाँ उमेर समूह अनुसार मतदान गर्ने निर्णय प्रक्रियामा फरक पाइएको छ (तालिका.७.१) । स्वविवेकले मतदान गर्ने ७५ प्रतिशत रहेको छ भने श्रीमानले भनेकोमा मतदान गर्ने २३.३ प्रतिशत र नातेदारले भनेकोमा भन्नेहरू १.७ प्रतिशत मात्र पाइएको छ । जसमा पनि २९ वर्षमुनिका उमेर समूह ८५.७ प्रतिशत आफ्नै स्वविवेकले मतदान गर्दछन् । ३०-४९ वर्षसम्मका उमेर समूहले ७९.२ प्रतिशतले र ५० भन्दा माथिका उमेर समूह ५३.३ प्रतिशत ले स्वविवेकको प्रयोग गर्दछन् । यसबाट के देखिन्छ भने यस क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा बहुसंख्यकले स्वविवेकको प्रयोग गर्ने गरेको पाइएको छ भने महिलाहरूले पुरुषको सल्लाह लिने गरेपनि पुरुषहरूले भने महिलाको सल्लाह लिने नगरेको जानकारीमा आएको छ । त्यस्तै नेताहरूको सल्लाह लिने कुरामा शून्य छन् । जसको मुख्य कारण महिलाहरू घरायसी कामकाजमा व्यस्त हुनुपर्ने कारणले नेतासँग सम्पर्क नहुने कुरा बताउँछन् ।

जीवन अध्ययन नं.३ : गरिबी, अशिक्षाका कारण“जसले पैसा बढी दिन्छ, उसैलाई भोट दिन्छु”

ठूलीकान्छी तामाङ्ग ५८ वर्षीय एक निराक्षर ग्रामीण महिला हुन । उनका ३ छोरा, ५ छोरीमा १ छोरा र २ छोरीहरु अभै अविवाहित छन् । उनको विवाह १८ वर्षको उमेरमा मामाचेली फूपुचेली साइनोमा नपर्नेसँग भएको थियो । उनको माइती सुनखानी, नुवाकोट हो । उनी घरायसी र कृषि काम गर्छिन । छोरी मात्र जन्मियो भनेर श्रीमानले सौता हालेको थियो । तर जेठो छोरा जन्मेपछि सौता घर छाडेर माइतिमा नै गएर बसेको छ । एउटी छोरी जन्माइसकेपछि जेठी बुहारी पागल भएकोले अर्की बुहारी विवाह गरेर जेठो छोरा ड्राइभर काम गर्दै काठमाण्डौंमा बसिरहेको छ । माइला छोरा विदेश (कतार)मा गएको १ वर्ष जति भयो । छोरा विदेश पठाउँदा ६०-७० हजार गाउँलेसँग सापट लिएर पठाएको र छोराले पैसा पठाएर ऋण पनि तिरीसकेको कुरा बताइन ।

श्रीमान भक्त बहादुरको आदत विग्रेकोले घरव्यवहार नहेर्ने हुनाले घर व्यवहार धान्न एकदम गाह्रो भएको कुरा ठूलीकान्छी बताउँछिन् । श्रीमान भक्त बहादुर सधैं तास खेल्ने, जाँडरक्सी खाने घरको काम नगर्ने हुनाले घरमा यसै विषय लिएर भगडा भइरहन्छ । जग्गाजमिनमा १५ रोपनी जति टारी खेत भएको त्यस खेतमा पनि राम्रो उत्पादन नहुने र बारी पनि नभएकोले खानलगाउन त्यस जग्गाजमिनबाट नपुग्ने कुरा बताउँछिन ।

कान्छो छोरो र जेठो छोराकी छोरी मात्र स्कुल जान्छ । अरु २ छोरीहरु घरको काम गर्छन् । धेरै बच्चाहरु र गरीब भएकोले पढाउन नसकेको कुरा बताइन ।

वास्तवमा आदर्श बच्चाको संख्या २ छोरा र २ छोरी हुनपर्छ भन्ने विचार राख्ने, रोजेर विवाह गर्न पाउनुपर्छ भन्ने कुरामा सहमती राख्छिन । उनी आफू गरीब भएकोले दाइजो दिन नसक्ने भएकोले दाइजो प्रथा राम्रो मान्दिन । चुरोट धेरै खाने उक्त महिला आफूलाई धेरै पिर परेकोले पिर भुल्न आफूले चुरोट खाने गरेको बताउँछिन् । श्रीमान कस्तो हुनुपर्छ भनी सवाल गर्दा जाँडरक्सी नखाने जुवातास नखेल्ने भनेर जवाफ दिन्छिन् ।

बिरामी पर्दा स्थिति हेरेर डाक्टर वा भाँकी के लगाउने हो छुट्टाएर उपचार गर्छिन । तर क्लिनिक नजिक भएकोले प्राय डाक्टर नै देखाउने कुरा उनले बताइन । पेशाको बारे सवाल गर्दा सिकर्मी काम केटाले मात्र गर्न सक्छ किनकी यो काममा बल लगाउन पर्ने हुनाले केटीहरु सक्तैनन भन्ने सोच भएको बताउने उक्त महिलाले खाना पकाउने घाँसदाउरा गर्ने बालबच्चा हेर्ने काम महिलाको मात्र हो भन्ने कुरा बताइन । तर ड्राइभर, सुजिकार, डाक्टर र शिक्षक जस्ता काम महिला र पुरुष दुवैले गर्न सक्छन् भनी उत्तर दिइन । यस गाउँमा काम गर्दा केटाकोभन्दा केटीको कामको ज्याला फरक भएको बताउने उक्त महिलाले किन ज्याला फरक भएको होला भन्ने सवाल गर्दा चलन नै पहिलेदेखि त्यस्तै भएर होला भन्ने उत्तर दिन्छिन् । उनी दिनको ९ घण्टा काम गर्छिन । उनलाई २ अविवाहित छोरीहरुले सहयोग पनि गर्दछन् । कान्छी छोरीको एउटा खुट्टा लामो भएकोले हिड्दा खोच्चाउने गर्छिन भने कान्छी भन्दामाथिको काइली छोरीलाई सानै छुटा मुखमा गोरुले हानेर मुख बाङ्गे भएकोले खान बोल्न अप्ठ्यारो भएको पनि देखियो । यी छोरीहरुको उपचार गरीब भएकोले गर्न सकेकी थिइन । यी छोरीहरु कुरूप र अपाङ्ग भएकोले कसैले विवाह गर्न आएको थिएन ।

भोट कसलाई दिनुहुन्छ भन्दा आफ्नो दुःख बुझ्नेलाई, आफू गरीब भएकोले गरीबको भलो गर्नेलाई भोट दिने कुरा बताइन । उनीले विस्तारै भनिन “जसले पैसा बढी दिन्छ, उसैलाई भोट दिन्छु ।” यसरी चेतनाका कमीले गर्दा एउटा नागरिकले पाउने अधिकार पनि उसलाई थाहा नभएको, आफ्नो भोटको सही उपयोग गर्न नजानेको सुनेर म छक्क परें । साथै मनमनै सोचें

यस्ता सिधासाधा मानिसलाई घृणित राजनीतिक गर्नेहरुले कसरी प्रयोग गर्दारहेछन् भनेर अफसोच पनि लाग्यो ।

गरीब भएकोले विजुली बत्ति, रेडियो, टि.भि. घरमा केही पनि राख्न नसकेकोले सञ्चारको सुविधाबाट बञ्चित छिन् । जसको कारणले राजनीतिक कुरा, महिला अधिकारका कुरा आदिबाट पूर्ण रुपमा अन्जान रहेकोले महिला अधिकार र कानुनी कुरा गर्दा खूब चासो दिएर सुनिरहिन । उनले यस्तो कुरा कहिल्यै नसुनेको पनि हामीलाई बताइन ।

घर एक तले र घरको छाना पनि खरको छ । यस्तो घर यस गाउँमा ३-४ वटा मात्र छ । तर यस जातिका महिलाहरु गाउँघरको विवाह, वर्तबन्ध, भोजभतेरमा स्वतन्त्र हिड्न पाउने हुँदा स्वतन्त्र हिड्न पाउनुपर्छ भन्ने विचार पोखिछन् । घरव्यवहार चलाउने पुरुष र महिला दुबै समान नै हो । दुबै मिले मात्र घर राम्रो बन्छ भन्ने ती वृद्धा, महिला पुरुषको उत्तिकै कदर गर्ने बताउँछिन । श्रीमान बढमास भएकोले छोराले पनि बाबुलाई गाली गर्ने र आफूले पनि श्रीमानलाई घरायसी व्यवहार नहेने हुनाले घरायसी व्यवहारमा उनकै निर्णय सर्वेसर्वा हुने बताइन । महिलाले आफ्नो माइतीको सम्पत्ति पायो भने श्रीमानले हेप्न सक्तैन । घर परिवारमा आफ्नो इज्जत पनि ठूलो हुने हुनाले महिलाले पनि अंश पाउनुपर्छ भन्ने विचार राखिछन् । तर आफू गरीब भएकोले छोरीलाई अंश दिन नसक्ने पनि बताइन । यी दुई छोरीहरुले विवाह नगेर बसे भने बाँचुन्जेल काम गरेर खाइहाल्छ नी भन्ने कुरा गरिन ।

आफूले माइतीबाट ल्याएको दाइजो पेवा आफैले खर्च गर्न पाउँने अधिकार बारे थाहा नभएकी उक्त महिला राजनीतिक सचेतताबाट अनभिज्ञ छिन् । अविवाहित छोरीले पनि छोरा सरह अंश पाउँने कुरा छरछिमेकीहरुले भनेर सुनेको बताउने उक्त महिलाले श्रीमानले दोस्रो विवाह गरेमा श्रीमानसँग अंश लिएर भिन्दै बस्न पाउँने थाहा भए पनि पारपाचुके गरेकी महिलाले श्रीमानको अंश पाउँछ भन्ने कुरा पूर्ण रुपले थाहा नभएको बताइन ।

७.२ महिलाहरुको घुमफिर गर्ने तथा विभिन्न कार्यलयको प्रयोग गर्ने आत्मविश्वास तथा सक्षमता

यस अध्यायमा आफ्नो र परिवारको कुनै पनि अधिकारिक कामहरु पुरा गर्न यस समुदायका मानिसहरुको सरकारी तथा नीजि कार्यलयहरुमा कस्तो किसिमको उपस्थिति छ भन्ने बारे अध्ययन गरिएको छ । आफ्नो काम गर्दा आफू स्वयं कार्यलयमा प्रस्तुत हुने वा अरुको सहयोग लिने गर्दछन् भन्ने हेर्न खोजिएको छ । काठमाण्डौं यस गाउँको नजिकैको जिल्ला हुनाले विभिन्न सामान किनमेल गर्न आउनु पर्ने हुँदा एकलै गएर आउन सकिन्छ कि सकिदैन भनेर सोधिएको छ । यसबाट उनीहरुको आफ्नो सक्षमताको मूल्यांकन गर्न खोजिएको छ । लैङ्गिक हिसाबले पुरुषको तुलानामा महिलाहरु बढी अरुमाथि भर पर्ने अवस्था देखिन्छ । यस अध्ययनमा पनि सरकारी कार्यलयमा काम गर्दा यस समुदायका महिलाहरु कसरी गर्दछन् भन्ने बारे ७.२ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका.७.२ उत्तरदाताको विभिन्न विषयमा रहेको आत्म विश्वास (%)

| विवरण | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | जम्मा |
|---|-------|-------|-------|-------|
| तपाइ आफ्नो काम गराउन कार्यालय जाँदा सहयोग लिनु हुन्छ कि हुदैन ? | | | | |
| आफै गर्छु | ०.० | ४.२ | ६.७ | ३.३ |
| अरुको सहयोग लिन्छु | १९.० | २०.८ | ४०.० | २५.० |
| आजसम्म कतै नगएको | ८१.० | ७५.० | ५३.३ | ७१.७ |
| सहयोग लिनका कारण | | | | |
| त्यस विषयमा ज्ञान नभएर | २५.० | १००.० | ३३.३ | ५३.३ |
| सहयोग आवश्यकता भएकोले | ७५.० | ०.० | ६६.७ | ४६.७ |
| काठमाण्डौँ एकलै गएर आउनुभएको छ ? | | | | |
| छ | ८१.० | ६६.७ | ५३.३ | ६८.३ |
| छैन | १९.० | ३३.३ | ४६.७ | ३१.७ |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

आफै गर्छु भन्नेको संख्या ३.३ प्रतिशत, अरुबाट सहयोग लिन्छु भन्नेको २५ प्रतिशत र हालसम्म कतै नगएको भन्नेहरूको ७१.७ प्रतिशत रहेको छ । त्यसमा पनि ३०-४९ र ५० भन्दा माथिका मात्र नागरिकता बानउँन पहिले एकलै गएको पाइएको छ भने कार्यालय जाँदा सहयोग लिने क्रम उमेर बढ्दै जाँदा सहयोग लिने क्रम पनि बढ्दै गएको देखिन्छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने तामाङ्ग समाजमा २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूहका महिलालाई आवश्यकता नै नभएर र अरु दुई उमेर समूहका महिलाहरू अशिक्षित र अनभिज्ञ हुनाले सरकारी कार्यालयमा गएको पनि पाइएन यसलाई उनीहरू आवश्यक परेकै छैन भनी बताएको पाएँ ।

कार्यलयमा जाँदा अरुको सहयोग लिनु पर्ने कारण बारे जिज्ञासा राख्दा आएको विवरण ७.२ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ । त्यस विषयमा थाहा नभएर भन्ने ५३.३ प्रतिशत र सहयोग आवश्यकता भएर भन्नेहरूमा ४६.७ प्रतिशत रहेको छ । जसमा काठमाण्डौँ एकलै गएर आउन सक्षम छन् कि छैनन् भन्ने सन्दर्भमा सवाल राख्दा सक्नेहरू ६८.३ प्रतिशत छन् भने त्यसमा पनि २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूह काठमाण्डौँ एकलै गएर आउन सक्ने धेरै छन् भने जति जति उमेर बढ्दै जाँदा एकले हिड्न सक्ने सक्षमता दर घट्दै गएको पाइन्छ । यसबाट उनीहरूमा अझै आत्मविश्वास कम भएको भन्ने प्रष्ट हुन्छ ।

७.३ महिलाहरुको सञ्चार साधनको पहुँच तथा सम्पर्क

मानिसको जीवनको हरेक पक्षमा सञ्चार क्षेत्रको अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ । यसले मानिसलाई सचेत, जागरुक र चेतनशील बनाउँछ । सञ्चार विकासको वाहक पनि हो । सञ्चारका माध्यमले संसारको एक कुनामा भएको घटना, उपलब्धी, प्रगति आदि तुरुन्त सर्वत्र फैलिन्छ । सञ्चार माध्यमबाट विश्व एउटा घर परिवार बनिसकेको छ । यस्तो अवस्थामा पनि नेपालका विभिन्न क्षेत्रमा सञ्चार सुविधा अझै पनि न्यून रहेको छ । सञ्चारको क्षेत्र अन्तर्गत यहाँ सञ्चारको माध्यम भन्नाले रेडियो, टि.भि. तथा पत्रपत्रिकालाई लिन सकिन्छ ।

तालिका.७.३ सञ्चार सम्पर्क अनुसार उत्तरदाताको विवरण (%)

| विवरण | उमेर समूह | | | जम्मा |
|--------------------|-----------|-------|-------|-------|
| | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| हरेक दिन | ७९.४ | ४९.७ | ९३.३ | ४५.० |
| कहिले काहि | २८.६ | ५४.२ | ७३.३ | ५०.० |
| कहिले पनि छैन | ०.० | ४.२ | ९३.३ | ५.० |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताको संख्या | २९ | २४ | ९५ | ६० |

नोट : उत्तरदाताहरु मध्ये ३ जनाको घरमा रेडियो , टि.भि कुनै पनि सञ्चारका साधन नभएको पाइयो ।

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

सञ्चारको दैनिक सम्पर्कमा सहने ४५ प्रतिशत, कहिलेकाँही ५० प्रतिशत र एकदम थोरै भन्नेहरु ५ प्रतिशत मात्र रहेको छ । जसमा पनि युवाहरुले हरेकदिन सञ्चारमा सम्पर्क रहने धेरै छन् भने विस्तारै यो क्रम उमेर समूह अनुसार घट्दै गएको देखिन्छ (तालिका.७.३) ।

यस अध्ययनमा क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा सञ्चार क्षेत्रमा उनीहरुको पहुँचको अवस्थाको बारेमा अध्ययन गरिएको छ । अध्ययनमा सहभागी उत्तरदाताहरुले समचार सुन्ने, टि.भि. हेर्ने गरेको अवस्थालाई ७.३ तालिकामा प्रस्तुत गरिएको छ ।

यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने तामाङ्ग समाज सञ्चार क्षेत्रमा पहुँच बढी नै रहेको देखिन्छ । यसमा हरेकको घरमा प्रायजसो रेडियो हुने भएकोले रेडियो नसुन्नेहरु प्राय एकदमै कम छन् । टि.भि. हेर्नेहरुको संख्या चाहि कम देखिन्छ । तर पत्रपत्रिका पढ्ने गरेको पाइएन । राजधानीको नजिकको जिल्ला हुनाले यहाँ सञ्चारको माध्यम धेरै छन् । यसबाट यहाँका जनजीवनमा तीव्र प्रभाव पारेको देखिन्छ । जसले गर्दा यहाँ महिलाहरु चुरोट पिउने संख्या कम छन् । विशेष गरेर २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूह र ५० वर्षका उमेर समूहले चुरोट त्यति पिउँदैनन् । साथै पिउँनेले पनि पिउँन छाडेको पाइएको छ । यसबाट

के देखिन्छ, भन स्वास्थ्यको बारे पनि सचेतता भएको देखिन्छ । ५ प्रतिशतको घरमा रेडियो, टि.भि. विजुली नभएको कारणले अर्काको घरमा गएर सुनेको बताइएको पाइएको छ ।

७.४ महिलाको हिडडुल गर्ने स्वतन्त्रता बारे उनीहरूको धारणा

अध्ययनको क्रममा यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा महिला स्वतन्त्रताको अवस्थाको बारेमा अध्ययन गरिएको छ । जुन ७.४ तालिकामा देखाइएको छ ।

तालिका.७.४ महिला स्वतन्त्रताको बारे उनीहरूको धारणाको विवरण (%)

| विवरण | उमेर समूह | | | जम्मा |
|--|-------------|-------|---------------|-------|
| | २९ वर्षमुनि | ३०-४९ | ५० भन्दा माथि | |
| पुरुषले जस्तै स्वतन्त्र हिडडुल गर्न पाउँछ कि पाउँदैन ? | | | | |
| पाउँछ | ५७.१ | ५०.० | ४०.० | ५०.० |
| पाउँदैन | ४२.९ | ५०.० | ६०.० | ५०.० |
| यदि पाउँदैन भने किन ? | | | | |
| परिवारको बन्देज | ३३.३ | ३३.३ | २२.२ | ३०.० |
| समाजको डर | ४४.४ | ६६.७ | ५५.६ | ५६.७ |
| चलिआएको चलन | २२.२ | ०.० | २२.२ | १३.३ |
| महिला स्वतन्त्र हिडडुल गर्न पाउँनुपर्छ भन्ने कुरामा सहमत हुनुहुन्छ ? | | | | |
| सहमत | १००.० | ९५.८ | ९३.३ | ९६.७ |
| असहमत | ०.० | ४.२ | ६.७ | ३.३ |
| महिला वा पुरुष मध्ये कसलाई बढी आदर गर्नुहुन्छ ? | | | | |
| पुरुष | ०.० | ८.३ | ६.७ | ५.० |
| महिला | १४.३ | २०.८ | २६.७ | २०.० |
| दुवै | ८५.७ | ७०.८ | ६६.७ | ७५.० |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताहरूको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

तालिका ७.४ अनुसार अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समाजमा महिलाहरू पुरुष जतिकै स्वतन्त्र हिडडुल गर्न पाउँछन् भन्ने सवालमा ५० प्रतिशत पाउँछन् भनेका छन् । त्यस्मा पनि विभिन्न उमेर समूह अनुसार भिन्दा भिन्दै आफ्ना धारणा व्यक्त गरेका छन् । २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूहले ५७.१ प्रतिशतले पाउँदैन भने ३०-४९ वर्षका उमेर समूहले ५० प्रतिशतले पाउँदैन भने भने ५० वर्ष भन्दा माथिकाहरूले ४० प्रतिशतले पाउँदैन भनेका थिए । यसबाट के देखिन्छ भने युवा महिलाहरूलाई भन्दा वयस्क र

वृद्धाहरु महिलालाई स्वतन्त्र हिडडुल गर्ने छुट रहेछ भन्ने देखिन्छ । महिलाहरुको स्वतन्त्रतामा विभिन्न कारक तत्वहरुले भूमिका खेलेको हुन्छ । यसै क्रममा महिलाहरु किन स्वतन्त्रपूर्वक हिडडुल गर्न पाइराखेका छैनन् भन्ने सन्दर्भमा उत्तरदाताबाट आएको विचारलाई ७.४ तालिकामा देखाइएको छ ।

जसमा भिन्दा भिन्दै उमेर समूह अनुसार फरक फरक विचार व्यक्त भएको पाइन्छ । परिवारिक बन्देज ३० प्रतिशत, समाजको डर ५६.७ प्रतिशत र चलिआएको चलन १३.३ प्रतिशत रहेको छ । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने समाजले कुरा काट्ला भन्ने डरले धेरै जसो महिलाहरुको स्वतन्त्रतामा बन्देज भएको देखिन्छ । त्यसमा पनि २९ वर्षभन्दामुनि र ३०-४९ वर्ष उमेर समूहका लागि पारिवारिक बन्देज भन्ने समान देखिन्छ भने ५० वर्षभन्दा माथिका वृद्धा महिलाहरुलाई पारिवारिक बन्देज कम हुदै गएको देखिन्छ किन भने यस समयमा यी महिलाहरु आफै स्वयं अभिभावकका रुपमा परिणत भइसकेका हुन्छन् । समाजको डर मान्नेहरुमा ३०-४९ वर्षका उमेर समूह ६६.७ प्रतिशत छन् । यस उमेर समूहका संख्या बढी छन् भने २९ वर्षमुनिका समूहले चलिआएको चलन कारकतत्व भएको महिलाको स्वतन्त्रतामा बन्देज भएको कुरा बताउँछन् । महिलाहरु जथाभावि हिडडुल गरेमा छरछिमेकीले कुरा काट्ने, आरोप लगाउने जस्ता कार्य गर्ने हुँदा समाजको डरलाई कारकतत्व मानेका छन् । त्यसैले महिलाहरु धेरै हिडडुल गर्न हुँदैन भन्ने मान्यता स्थलगत अध्ययनबाट पाइएको छ ।

अध्ययनकै क्रममा महिलाहरु पनि पुरुष सरह स्वतन्त्रपूर्वक हिडडुल गर्न पाउँनुपर्छ भन्ने धारणाको बारेमा जिज्ञासा राख्दा आएको निष्कर्षलाई ७.४ तालिकामा स्पष्ट गर्न खोजिएको छ । ७.४ तालिका अनुसार महिलाहरु पनि पुरुष जतिकै स्वतन्त्रपूर्वक हिडडुल गर्न पाउँनुपर्छ भन्ने धारणा ९६.७ प्रतिशतले ३.३ प्रतिशतले यसप्रतिले मात्र असहमत जनाएको देखिन्छ । त्यसमा महिलाहरुमा पनि भिन्दा भिन्दै उमेर समूह अनुसार धारणा फरक फरक भएको पाइएकोछ । २९ वर्षभन्दा कम उमेर समूहले १०० प्रतिशतले महिला स्वतन्त्रतामा सहमति जनाए भने ३०-४९ वर्ष उमेर समूहले ९५.८ प्रतिशत ले र ५० वर्षभन्दामाथि उमेर समूहले ९३.३ प्रतिशत ले सहमति जनाए । यसबाट के स्पष्ट के हुन्छ भने युवापुस्तामा महिला स्वतन्त्रतालाई सहस्र स्वीकारेको पाइन्छ भने क्रमशः वयस्क र वृद्धा महिलाहरुले भने महिलाहरुलाई पूर्ण स्वतन्त्रता दिन नहुने कुरालाई अबै स्वीकार्छन ।

महिला र पुरुष कसलाई आदर वा सम्मान गर्नुहुन्छ भन्ने सवाल राख्दा दुबैलाई भनेर ७५ प्रतिशत ले बताए भने महिलालाई मात्र भन्ने २० प्रतिशत र पुरुषलाई मात्र भन्ने ५ प्रतिशतले जनाएको कुरा तथ्याङ्कले देखाइएको छ । यसमा पनि उमेर समूह अनुसार फरक फरक धारणा व्यक्त भएको पाइएकोछ

। २९ वर्ष मुनिका उमेर समूहले पुरुषलाई भन्ने सवालमा एउटा पनि नदेखिएको, ३०-४९ वर्षका उमेर समूहमा ८.३ प्रतिशत र ५० वर्षभन्दा माथिको ६.७ प्रतिशत रहेको देखिन्छ । ३०-४९ वर्षका उमेर समूहले पुरुषलाई महत्व दिएको देखिएको छ भने वृद्धाहरुमा यो धारणा कमी देखिएको छ । दुबैलाई आदर वा सम्मान गर्छु भन्ने सवालमा २९ वर्षमुनिका उमेर समूह ८५.७ प्रतिशत, ३०-४९ का ७०.८ प्रतिशत र ५० माथिका ६६.७ प्रतिशत रहेको देखिएको छ । यस तथ्याङ्कले दुबैलाई भन्ने २९ वर्षभन्दा मुनिका उमेर समूहको बाहुल्यता देखिन्छ । महिलाहरूलाई आदर वा सम्मान गर्छु भन्ने जति जति उमेर समूह अनुसार यो दर वृद्धि गएको पनि पाउँन सकिन्छ । यसबाट के स्पष्ट के हुन्छ भने जति जति उमेर बढ्दै जान्छ महिलाहरुमा आदर वा सम्मान प्राप्त गर्न अवसर भएको आफ्नो स्तर बढेको अनुभव गर्दछन ।

जीवन अध्ययन नं. ४ : धर्म परिवर्तन र बाहिरी संसार

ठूली तामाङ्ग, २७ वर्षिय एक निराक्षर ग्रामीण महिला हुन । उनको श्रीमान उदय तामाङ्ग क्रिश्चियन धर्म प्रचारक काम गर्दछ । उनको दुई छोराहरु छन् । उनको विवाह १९ वर्षमा मन पराएपछि मागी विवाह गरेको हो । श्रीमान क्रिश्चियन धर्मका प्रचारक हुनाले आफू पनि त्यसै धर्म मान्ने र साथीसंगिहरुलाई पनि त्यसै धर्म मान्न आग्रह गर्ने गर्छिन । श्रीमान यस धर्मका प्रचारक बनेको पनि ५ वर्ष भइसक्यो । श्रीमानले उक्त कामबाट तलव पनि पाउँछ । त्यस तलवबाट परिवार पाल्न सकिरहेको कुरा सम्झना बताउँछिन । प्रचार प्रसार गर्ने क्रममा धरान, इलाम, काठमाण्डौं, रसुवा आदि ठाउँमा गइसकेको छ र साथै परिवारलाई पनि धेरै ठाउँहरुमा सँगै लगिसकेको हुनाले अशिक्षित भए पनि सम्झना वातावरणमा घुलमिल हुन सजिलै सकिन्छन र कुरा पनि बुझिन्छन । आफू अशिक्षित भएकोले श्रीमानसँग गुनासो पनि गर्छिन । तर श्रीमानले भन्ने गर्छन “प्रौढ शिक्षा पढ । दिनको २-२ अक्षर सिकेर पनि पढ्न र लेख्न सकिहाल्छनि” भनी हौसला दिन्छन ।

क्रिश्चियन धर्म मान्ने गरेको भनेर घरपरिवारले रिसाएर उनीहरुलाई भिन्दै राखिदिएको, अंश पनि नदिएको ससुराले एक पटक त बेस्सरी घरमा श्रीमान नभएको बेला पिटेको पनि थियो भनि गुनासो गरिन । ससुराले छुट्टयाएर राख्दा श्रीमानको जागिर पनि नभएकोले जहान परिवार पाल्न कठिनाई भएको पनि बताइन । त्यसबेला भरखरै यस धर्ममा लागेको मात्र थियो । अंश माग्दा जग्गा त दिनुभयो तर नामसारी नगरीकन । त्यस जग्गामा ६ मुरी धान र ४ मुरी कोदो मात्र हुने हुनाले खान नपुग्ने पनि बताइन ।

जेठो छोरो जन्मेपछि दिमागी हालत ठीक नभएर मानिस नचिन्ने, मानिस देखेपछि लखट्ने, जतापायो ततै भाग्ने गर्ने गरेको भनि बताइन । । यस समयमा माइती नजिक भएकोले आमा बुबालेसँग सँगै लिएर हिड्ने गर्दथे । माइतीले भाकी धामी, डाक्टर सबैबाट उपचार गराएर निको भयो । तर २ वर्षपछि फेरि त्यहि रोग बल्भयो । मानसिक स्थिति ठीक नभएपछि सबैसँग अभद्र व्यवहार गर्न थालिन । यस धर्ममा लागेपछि जस्तोसुकै विरामी पनि निको हुन्छ भन्ने सुनेर परमेश्वरमा विश्वास गरे । यस धर्ममा लागेपछि आफू त्यस किसिमको विरामी नभएको बताउने सम्झना, मानिसले कुनै न कुनै धर्ममा विश्वास गर्नु पर्दोरहेछ भन्ने विचार व्यक्त

गरिन । यस धर्ममा लागेपछि आफूलाई राम्रो भएको कुरा पनि बताइन । आफू विरामी भएको बेला श्रीमान क्रिश्चियन धर्ममा भरखरै लागेको थियो । निको भएपछि श्रीमानले काठमाण्डौमा घुम्न जाने भनेर भक्तपुर चर्चमा लगे । त्यहाँ यस धर्म बारे शिक्षा दिइयो । विस्तारै यस धर्मप्रति विश्वास गर्न थालेको बताइन । हाल श्रीमान नुवाकोट जिल्लाको चर्चहरूमा गएर प्रशिक्षण दिने गर्दछन् । साथै थानसिंग गा.वि.स.को लामा गाउँमा पनि शनिवार २ घण्टा प्रशिक्षण दिने काम गर्दछन् । यसरी विरामी भएको हुनाले शरीरलाई राम्रो हुन्छ कि भनेर यस धर्मप्रति विश्वास गरेको कुरा उनले बताइन । क्रिश्चियन धर्म मान्नेहरूले जाँड, रक्सी खान नहुने हुनाले उनीहरू खादैनन् । २ छोराहरू भइसकेकोले हाल श्रीमानले अस्थायी साधन प्रयोग गरिरहेकोछ । यी दुई सन्तानभन्दा अरु जन्माउन नचाहने सम्भना दुई छोरामध्ये एक चाहि छोरी भएको भए कति राम्रो हुन्थ्यो भनी हामीलाई सुनाइन । यी दुई सन्तानलाई राम्रो पढाउने विचार व्यक्त गर्छिन । सम्भनालाई बाहिरी सम्पर्क र सञ्चार साधनको माध्यमले कानूनी चेतना पनि छ । उनी राजनीतिक कुराप्रति पनि चासो राख्छिन् । आजकाल उनी विरामी पर्दा भाँकीको विश्वास गर्दिनन । उनी डाक्टरकहाँ नै जान्छिन् । आफूले कमाइरहेको जग्गाजमिन पनि ससुराको नाममा भएको पनि बताइन । उनी अरु ग्रामीण महिलाभन्दा भिन्दै स्वभावकी छिन । मानिससँग कस्तो व्यवहार र बोली गर्नु पर्छ भन्ने कुराको उनमा राम्रो ज्ञान छ । उनी सजिलै कुरा बुझ्छिन । उनी परिस्थितिसँग सम्भौता गर्न र गराउन पनि सकिछिन । उनी पुरुष र महिलामा कुनै विभेद देखिदैन । शिक्षाको महत्वलाई राम्ररी बुझेकी हुनाले आफ्ना सन्तानलाई सकेसम्म राम्रो र उच्च शिक्षा दिने विचार पनि व्यक्त गरिन । उनीहरूलाई यस समाजमा धर्मको कारणले वहिष्कार नै गरेको पाइन्छ । जात्रा, वर्तबन्धमा हेयका दृष्टिले हेर्ने कतिपय ठाउँमा जान र छुन नदिने हुनाले यस्ता ठाउँमा उनीहरू जादैनन् । गाउँका मानिसहरूले उनीहरूलाई मरेको लास छुन पनि नदिने हुनाले उनीहरू जादैनन । यसरी उनीहरू धर्म परिवर्तनका कारणले आफ्नो जातिय संस्कारमा मर्दा पर्दा बाहिरीनु परेको पनि बताइन ।

सबैले क्रिश्चियन धर्म अपनाए राम्रो हुन्छ भन्न त पक्कै सकिन्न । तर यस धर्ममा लाग्ने मानिसहरू नियमित रूपले हरेक हप्ता चर्चमा जाने यस धर्मप्रति आस्था राख्ने विभिन्न विचार सुन्ने र यसैसँग सम्बद्ध धेरै मानिसहरूसँग सम्पर्क भइरहने हुँदा मानिसहरू बीच विचार आदान प्रदान हुने हुँदा मानिसहरू बढी सक्रिय जस्तो देख्नु स्वाभाविक नै हो । यस्तो किसिमको चलन हिन्दु तथा बौद्ध धर्ममा कम भएको पाइन्छ । यसमाथि पनि यो केसमा उल्लेखित महिला एक क्रिश्चियन धर्म प्रचारकी श्रीमती पनि हुनाले उनीमा आएको परिवर्तनलाई सामान्य रूपमा लिन सकिन्छ ।

७.५ महिलाहरूको कानूनी सचेतता

महिलाहरूले आफ्नो चाहना अनुसार दाइजोपेवा खर्च गर्न पाउने कानूनी अधिकारबारे जिज्ञासा राख्दा थाहा छ भन्ने २९.७ प्रतिशत, अलिअलि थाहा छ भन्ने ३३.३ प्रतिशत र थाहा छैन भन्ने ४५ प्रतिशत छन् । त्यसमा पनि २९ वर्षका उमेर समूहले अलिअलि थाहा छ भन्ने संख्या धेरै छ । त्यस्तै छोरीले पनि छोरा सरह अंश पाउने कानूनी अधिकार बारे जानकारी राख्दा ३५ प्रतिशतले थाहा छ भन्ने बताए भने

६१.७ प्रतिशतले अलि अलि थाहा छ भने थाहा छैन भन्ने ३.३ प्रतिशत थिए । जसमा भिन्दा भिन्दै उमेर समूह अनुसार फरक फरक विचार पाइएको छ । २९ वर्षमुनिका उमेर समूहमा थाहा छ भन्ने ६१.९ प्रतिशत ३०-४९ वर्षका उमेर समूहमा २५ प्रतिशत र ५० वर्षभन्दा माथिकाहरुमा १३.३ प्रतिशत रहेको छ । अलि अलि भन्नेहरुमा उमेर समूह अनुसार क्रमशः वृद्धि हुँदै गएको पाइएको छ । थाहा छैन भन्ने पनि ३०-४९ को भन्दा ५० वर्षमाथिको उमेर समूहको दर बढी छन् । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने सञ्चार, शिक्षाको चेतनाले धेरैमा यस विषयमा जानकारी रहेको पाइएको छ भने त्यसमा पनि २९ वर्षभन्दा कम उमेर समूहका महिलाहरुमा बढी जानकारी रहेको देखिन्छ ।

यदि श्रीमानले दोस्रो विवाह गरेमा श्रीमतीले श्रीमानसँग अंश माग्ने पाउने कानुनी अधिकारबारे सवाल गर्दा थाहा छ भन्ने ५० प्रतिशत, अलिअलि भन्ने ३८.३ प्रतिशत र थाहा छैन भन्ने ११.७ प्रतिशत रहेकोछ । जसमा पनि सबैभन्दा बढी थाहा छ भन्ने २९ वर्षमुनिका उमेर समूहका महिलाहरु छन् । थाहा छैन भन्नेहरुमा सबैभन्दा बढी ५० वर्षमाथिका महिलाहरु रहेका छन् ।

त्यस्तै श्रीमानसँग पारपाचुके गरेर पनि अंश पाउँछ भन्ने कानुनी अधिकार बारे सवाल गर्दा थाहा छ भन्ने जम्मा १० प्रतिशत छ भने थाहा छैन भन्ने ६३ प्रतिशत छ । थाहा छैन भन्ने ५० वर्षमाथिका धेरै थिए भने क्रमशः ३०-४९ वर्ष उमेर समूहका र त्यसपछि २९ वर्षमुनिका उमेर समूहका थिए । थाहा छ भन्नेहरुमा सबैभन्दा २९ वर्ष भन्दा मुनिका संख्या बढी छन् । अलिअलि थाहा छ भन्नेहरुमा पनि सबैभन्दा बढी २९ वर्षमुनिका छन् । क्रमशः यो दर उमेर घट्दै जाँदा प्रतिशत पनि घट्दै गएको छ । पारपाचुके गर्दा पनि महिलाले श्रीमानको अंश पाउने अधिकार बारे अधिकांशभन्दा पनि बढी महिलालाई थाहा नभएको पाइएको छ भने थाहा छ भन्नेको संख्या पनि एकदम थोरै छ र अलि अलि सुनेर थाहा पाएको भन्नेहरु यसभन्दा अलि बढी छन् ।

नचाहेको गर्भ फ्याक्न पाउने कानुनी अधिकार बारे सवाल गर्दा थाहा छ भन्नेहरुमा ६३.३ प्रतिशत र अलिअलि थाहा छ भन्नेहरुमा २३.३ प्रतिशत र थाहा छैन भन्नेहरु १३.३ प्रतिशत छन् । जसमा थाहा छ भन्ने २९ वर्षमुनिका उमेर समूहका महिलाहरुको संख्या बढी छन् भने यो क्रम उमेर बढे अनुसार प्रतिशत घट्दै गएकोछ । यी माथिका तथ्याङ्कको अवलोकनबाट सञ्चार, शिक्षा र राजधानीको नजिक हुनाले पहिलेको तुलनामा सचेता बढेको स्पष्ट हुन्छ । त्यसमा पनि नयाँ पुस्तामा पुराना पुस्ताकोभन्दा चेतना बढी भएको पाइएकोछ ।

तालिका.७.५ महिलाहरुमा कानुनी सचेतताको बारे विवरण (%)

| आफ्नो दाइजोपेवा आफूखुशी खर्च गर्न पाउँने कानुनी अधिकार बारे थाहा छ ? | उमेर समुह | | | जम्मा |
|---|-----------|-------|---------|-------|
| | २९ मुनि | ३०-४९ | ५० माथि | |
| थाहा छ | २८.६ | २५.० | ६.७ | २१.७ |
| थाहा छैन | २८.६ | ४५.८ | ६६.७ | ४५.० |
| अलिअलि थाहा छ | ४२.९ | २९.२ | २६.७ | ३३.३ |
| छोरीले पनि छोरा सरह अंश पाउँने कानुनी अधिकार बारे थाहा छ ? | | | | |
| थाहा छ | ६१.९ | २५.० | १३.३ | ३५.० |
| थाहा छैन | ०.० | ४.२ | ६.७ | ३.३ |
| अलिअलि थाहा छ | ३८.१ | ७०.८ | ८०.० | ६१.७ |
| श्रीमानले दोस्रो विवाह गरेमा अंश पाउँने कानुनी अधिकार बारे थाहा छ ? | | | | |
| थाहा छ | ७१.४ | ५०.० | ३३.३ | ५०.० |
| थाहा छैन | ४.८ | ८.३ | २६.७ | ११.७ |
| अलिअलि थाहा छ | २३.८ | ४१.७ | ४०.० | ३८.३ |
| कुनै महिलाले श्रीमानसँग पारपाचुके गरेमा पनि अंश पाउँछ भन्ने कानुनी अधिकार बारे थाहा छ ? | | | | |
| थाहा छ | १४.३ | १२.५ | ०.० | १०.० |
| थाहा छैन | ४७.६ | ६२.५ | ८६.७ | ६३.३ |
| अलिअलि थाहा छ | ३८.१ | २५.० | १३.३ | २६.७ |
| श्रीमानश्रीमतीको सल्लाहले नचाहेको गर्भ फ्याक्न पाउँने कानुनी अधिकार बारे थाहा छ ? | | | | |
| थाहा छ | ७६.२ | ७०.८ | ३३.३ | ६३.३ |
| थाहा छैन | ९.५ | १२.५ | २०.० | १३.३ |
| अलिअलि थाहा छ | १४.३ | १६.७ | ४६.७ | २३.३ |
| जम्मा उत्तरदाताहरुको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

जीवन अध्ययन नं. ५ : कानुनी असचेतना र महिला हिंसा

डल्ली तामाङ्ग, ३५ वर्षीय एक गरीब परिवारमा जन्मिएकी ग्रामीण निराक्षर महिला हुन । उनले आफैले रोजेर १७ वर्षको उमेर विवाह गरेकी थिइन । विवाह गरेको १० वर्षसम्म पनि सन्तान नजन्मिएपछि सासू, ससूरा र घरका सबै परिवारले हेला गर्न थाले त्यसपछि लोग्ने र आफ्नै सहमतिमा आफैलाई सौता हालेको थिइन । सौता हालेको गरेको ६-७ महिनापछि सौता र श्रीमान दुवैले पिटेर घर बस्न नदिएपछि हाल माइती आएर बसिरहेको छिन । माइती आएर बसेको ६-७ वर्ष भइसक्यो । माइतीको पनि आर्थिक स्थिति एकदम कमजोर भएकोले पेट पाल्न पनि धौ धौ भएको कुरा उनले बताइन । उनी भन्थिन“पेटभरी खान पाउने ठाउँ भएपनि काम गर्न जान्थे । माइतीमा आमा बूढी ७५ वर्षकी छिन र दाइ र बहिनीको दिमागी हालत पनि ठीक छैन भाइ

भिन्दै बसेकोले उसले बाबुआमालाई केही हेदैँन । बाबु एक जनाले कमाएर खान पुग्दैँन गाउँमा ज्यालादारी काम पनि सधैं पाइदैँन ।”बहिनीको विवाह गरेको २ वर्षमै एउटा छोरी जन्माएपछि दिमागी हालत बिग्रियो । दिमाग बिग्रेपछि घरबाट माइती ल्याएर राखेका छौँ । बहिनीको यस्तो हालत भएपछि ज्वाँइले अर्को विवाह गरिसके । दाइ ४८ वर्ष जतिको छ । दाइको पनि वेला वेलामा सुर जान्छ उ पनि काठमाण्डौँतिर बस्दछ । दिमागले काम गरेको वेलामा डकर्मी काम गरेर जीविका चलाउँछ । दाइको पनि विवाह गरेको थियो दिमागको हालत यस्तो भएपछि भाउजुले छाडेर गइन । उनले आफ्नो नागरिकता पनि बनाएकी छैनन । विवाह गरिसकेकी महिलाको माइतीबाट नागरिकता बनाउनु मिल्दैन भनेर टोली आउँदा पनि गाउँलेहरुले आफ्नो नाम नै नदिएको बताइन । एक विवाहिता महिला श्रीमानले सन्तान नजन्मेको कारण सौता हालेर घरबाट निकाल्दा पनि यसको विरुद्धमा आवाज उठाउन पनि सकेकी छैनन । चुपचाप अन्याय सहेर आफ्नो अधिकारबाट पनि बञ्चित छिन । श्रीमानसँग अंश लिन किन नगएको भनेर सोध्दा उनले भनिन “श्रीमानले कुटेर पठाउँछ के को अंश दिन्छ र ! आफ्नोतर्फबाट बोली दिने कोही नभएपछि र गरीब माइती भएपछि सबैले हेप्दा रहेछन् । के गर्नु जे भए पनि चुपचाप लागेर बस्नु पर्दोरहेछ ।” यसरी अशिक्षित, कानुनी चेतना र महिला अधिकार वारे थाहा नभएपछि कहाँ गएर के गर्ने ? कसलाई भन्ने ? के भन्ने ? जस्ता कुरा अनभिज्ञता प्रकट गरिन ।

दाइजो दिने प्रचलन धेरै पुरानो होइन । माइतीबाट छोरीलाई दिइने चल तथा अचल सबै किसिमका सम्पतिलाई दाइजो भनिन्छ । आजकल यो चलन देखासिकी गरेर अन्यत्र पनि फैलिने क्रम जारी छ । तामाङ्ग जातिमा दाइजो दिने चलन खासै नभए पनि परम्परादेखि नै माइतीबाट आफ्नो छोरी चेलीलाई सौगातस्वरूप विवाह गर्दा केही न केही दिइने चलन थियो । भन वर्तमान अवस्थामा अन्य जातिजातिको देखासिकी गरेर यी जातिहरुमा पनि यस प्रथाले केही पकड जमाएको देखिन्छ ।

तालिका.७.६ छोरीको विवाह र दाइजो सम्बन्धी उत्तरदाताहरुको धारणाको विवरण (%)

| विवरण | उत्तरदाताहरुको हालको उमेर | | | जम्मा |
|--|---------------------------|-------|-------|-------|
| | ≤२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| केटाकेटीले आफ्नो रोजाईमा विवाह गर्नु पाउँनु उनीहरुको अधिकार हो ? | | | | |
| सहमत | ६९.९ | ६६.७ | ७३.३ | ६६.७ |
| अत्यन्त सहमत | ३८.९ | ३३.३ | २६.७ | ३३.३ |
| हाम्रो समाजमा भएको दाइजो प्रथा करुतो लाग्छ ? | | | | |
| राम्रो | ३८.९ | ४५.८ | ६०.० | ४६.७ |
| नराम्रो | ५७.९ | ४९.७ | ९३.३ | ४०.० |
| ठीकै | ४.८ | ९२.५ | २६.७ | ९३.३ |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताहरुको संख्या | २९ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

दाइजो दिने प्रथा कस्तो लाग्छ भन्ने सवालमा राम्रो लाग्छ भन्नेको ४६.७ प्रतिशत, नराम्रो लाग्छ भन्नेका ४०.० प्रतिशत र ठीकै लाग्छ भन्नेको १३.३ प्रतिशत थियो । जसमा राम्रो लाग्छ भन्ने ५० वर्षभन्दा माथिको उमेर समूहको संख्या बढी छ । नराम्रो लाग्छ भन्नेहरूमा २९ वर्षभन्दामुनिका उमेर समूहको संख्या बढी छ ।

त्यस्तै केटीको रोजाइ अनुसार विवाह गर्न पाउँनुपर्छ भन्ने कुरामा एकदम सहमत जनाउने ३३.३ प्रतिशत छन् भने सहमत मात्र जनाउने ६६.७ प्रतिशत छन् । त्यसमा पनि उमेर अनुसार फरक फरक धारणा पाइएको छ । अत्यन्त सहमत जनाउने २९ वर्षमुनिका उमेर समूह बढी छन् भने सहमत मात्र जनाउने ५० वर्षभन्दामाथिको संख्या बढी छन् (तालिका.७.६) । यसरी दाइजो प्रथालाई सकारात्मक दृष्टिले हेर्नेहरूमा पुराना पुस्ताहरू छन् भने नयाँ पुस्ताले भने यसलाई नकारात्मक दृष्टिले हेरिएको पाइएको छ ।

अध्याय ८

तामाङ्ग जातिको संस्कृति र महिलाहरुको भूमिका

यस समाजमा बुद्ध धर्म मान्नेहरुको संख्या बढी भएता पनि विस्तारै क्रिस्चियन धर्मको प्रभाव पनि बढ्दै गएको देखिन्छ । बुद्ध धर्मपछि हिन्दु धर्म मान्नेहरुको संख्या दोस्रो स्थानमा रहेको छ । तेस्रो स्थानमा बुद्ध र हिन्दु दुवै धर्म मान्छौं भन्नेहरु पनि भेटियो । “हामी परापूर्वकालदेखि मान्दै आएको रीतिरिवाज पनि गर्दै आइरहेका छौं साथै हिन्दु धर्मको प्रभावले दशैं-तिहार, तीज जस्ता हिन्दुका चाडहरु पनि हामी मनाउँदै आइरहेका छौं ” यसरी उनीहरु आफूलाई दुवै धर्ममा आस्था राख्ने कुरा बताउँछन् । यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने तामाङ्ग जातिमा हिन्दु धर्मको प्रभाव धेरै पहिलादेखि नै रहेको र यस धर्मलाई स्वीकार्न राज्यले नै दवाव दिएको कुरा हमवर्गको “अडर इन प्याराडक्स (१९८६)” भन्ने पुस्तकले पुष्टि गर्दछ ।

तालिका.८.१ धर्म अनुसार उत्तरदाताको विवरण (%)

| धर्म | उमेर समुह | | | जम्मा |
|--------------------|-----------|-------|-------|-------|
| | <=२९ | ३०-४९ | ५०+ | |
| बौद्ध | ४७.६ | ३३.३ | ४०.० | ४०.० |
| हिन्दु | २८.६ | ४९.७ | ४६.७ | ३८.३ |
| बौद्ध र हिन्दु | १९.० | २०.८ | ६.७ | १६.७ |
| क्रिस्चियन | ४.८ | ४.२ | ६.७ | ५.० |
| जम्मा | १००.० | १००.० | १००.० | १००.० |
| उत्तरदाताको संख्या | २१ | २४ | १५ | ६० |

स्रोत: स्थलगत सर्वेक्षण, २०६४

८.१ सांस्कृतिक अवस्था

यस अध्ययन क्षेत्र चतुराले गा.वि.स. को माभगाउँमा बस्ने समाजको आफ्नै किसिमको संस्कृति रहेको भए तापनि समयको परिवर्तनसँगै यिनीहरुको संस्कृतिमा अन्य संस्कृतिको पनि प्रभाव परेको पाइन्छ । हरेक जातिका आ-आफ्नै सांस्कृतिक मूल्यमान्यताहरु रहेका हुन्छन् । संस्कृतिले मानिसको जीवनको शुरुवातदेखि मृत्यूसम्मका सम्पूर्ण क्रियाकलापको प्रतिनिधित्व गर्ने हुनाले समाजका सदस्यहरुले मान्ने चाडपर्व, भेषभूषा, भाषा, रहनसहन, खानपान तथा विभिन्न संस्कारहरु यसभित्र पर्दछन् ।

यस अध्ययनमा यस समाजको सांस्कृतिक पक्षको विश्लेषण गरिएको छ । यसै क्रममा तामाङ्ग समाजको रहनसहन, भाषाशैली, मूल्यमान्यता, परम्परा, रीतिरिवाज, खानपान, चाडपर्व, धर्म, संस्कार, विश्वास आदि कुराको व्याख्या गरिएकोछ । साथै त्यस समाजभित्रका सांस्कृतिक अभ्यासहरूलाई लैङ्गिक उपागमनको दृष्टिकोणबाट हेर्दा महिला र पुरुषको बीचमा देखिएको भूमिकालाई पनि यस अध्यायमा अध्ययन गरिएको छ ।

रहनसहन

प्रत्येक समाजमा आफ्नै किसिमको रहनसहन हुन्छ । रहनसहन अनुसार नै उनीहरूको जातिगत स्वभाव प्रतिविम्बित भइरहेको हुन्छ । रहनसहनको अध्ययनले कुनै पनि जातिको विविध पक्षलाई बुझ्न सजिलो हुने हुनाले यस अध्यायमा तामाङ्ग समाजको रहनसहन, घरको बनावट, भेषभूषा, सरसफाई तथा खानपानको बारेमा विश्लेषण गरिएको छ ।

घरको बनावट

अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग जातिहरूको बसोबासको अवस्थालाई हेर्दा यिनीहरू एउटै टोलमा नाता पर्ने आफन्तहरू गुजुमुच्च घर बनाएर बसेका छन् । यो टोललाई “माँभगाउँ” भनेर चिनिन्छ । यो लेक र कछारको बीचभागमा पर्ने हुनाले माँभगाउँ भनिएको हो । सबै घरहरू नजिक नजिक हुने अथवा एक घर र अर्को घरको आँगन एउटै हुने भएकोले बेलुका कामबाट आएर खान खाइसकेपछि फूर्सदको समयमा गफ गर्ने जाडो महिनामा अगेनामा आगो ताप्ने, सुखदुःख बाँड्ने, रमाइलो गर्ने गरेको पाइन्छ । यिनीहरूको घरहरू प्राय एकतले कच्ची अथवा ढुङ्गा र माटोले बनाइएको छ भने छाना ढुङ्गा र जस्ता लगाइएको छ । पुराना घरहरूको छाना प्राय ढुङ्गा को छ भने हाल बनाइएका घरहरूमा भने जस्ता लगाइएको पाइएको छ । घरभित्र प्राय कोठा हुँदैनन् । घरभित्र बाखा तथा कुखुराको खोरहरू राखेको पाइन्छ । घरको माथि तलामा आर्थिक स्थिति राम्रो भएकोले बार्दली बनाएको पाइयो भने अन्यहरूको भुँइतला र माथिल्लो तला मात्र पाइयो । यस गाउँमा सिमेन्ट घरहरू ३ वटा मात्र छन् । जहाँ पसलहरू राखेका छन् । भुँइतलामा पिँढी र माथि बार्दली भएको घरहरू पाइन्छ । पाहुना आउँदा गुन्द्री, राडी, पाखी ओछ्याएर बसाउँने चलन छ । नजिकको छिमेकीहरू आउँदा चकटी (मकैको खोस्टाबाट बनाएको एक प्रकारको सानो ओछ्याउने) ओछ्याउन दिने चलन छ । प्राय घरको अगाडि पाइप धारा रहेको

पाइन्छ । धान तथा कोदो राख्न भकारी तथा माटोको ठूला ठूला घ्याम्पाहरु प्रयोग गर्दछन् भने मकैको घोकाहरु नै कुनेहु बनाएर राख्ने गरेको पाइयो ।

भेषभूषा

यस गा.वि.स.मा बसोबास गर्ने तामाङ्ग समाजमा मानिसहरुले लगाउने भेषभूषा बारेमा यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ । बुढापाका पुरुषहरुले कमिज सुरुवाल लगाउँछन् भने बुढी महिलाहरुले चौबन्दी चोलो वा ब्लाउज र लुङ्गी तथा फरिया लगाउँछन् भने नयाँ पिँढीहरुले काठमाण्डौ जतिक भएको हुनाले अविवाहित केटीहरुले सर्ट फ्रक तथा कुर्ता सुरुवाल लगाउँछन् । केटाहरुले सर्ट पैन्ट तथा हाफ पैन्ट र टीसर्ट पनि लगाउँछन् । विवाहित महिलाहरुले ब्लाउज फरिया साथै कुर्ता सुरुवाल लगाउने गर्दछन् । बुढापाका महिलाहरुले कानमा ठूला ठूला सुन ढुङ्गी गलामा नौगेडी, तिलहरी, हातमा बाला, नाकमा ठूलो फूली र बुलाकी लगाउँछन् भने नयाँ पिँढीहरुले तिलहरी कानमा टप, भुम्का जस्ता नयाँ ढाँचाका गरगहनाहरु लगाउने गर्दछन् । अविवाहित महिलाहरुले प्राय केही लगाउँदैनन् । तर आर्थिक स्थिति सवल भएकाहरुका छोरीचेलीले भने सुनका सिक्री लगाउने गरेको पाइयो । प्राय हरियो तथा निलो रंगका कपडा मन पराउने यी महिलाहरुले नजिक वरपर हिड्दा लुङ्गी र ब्लाउज लगाएको पाइयो ।

खानपान

यस गा.वि.स.मा बसोबास गर्ने यी जातजातिहरुले दैनिक खानपानमा खास गरी मकै र कोदोको पिठो मिसाएको ढिँडो-भात र तरकारीमा भोल हालेर खाएको पाइयो । यिनीहरु तरकारीमा तेल र खुर्सानी बढी राखेर खान मन पराउँदारहेछन् । यिनीहरु पाहुनालाई मन लगाएर खुब मान सम्मान र सत्कार गर्दछन् । पाहुना आउँदा मीठो खाना दूध, दही, घ्यू प्रशस्त खुवाउँछन् । खानमा भात मासु, अण्डा र जाँड-रक्सी विशेष गरेर पाइन्छ । परिवारले साधरणतया ढिँडो बढी खाने गरेको पाइयो । ढिँडोले छिट्टै भोक नलाग्ने हुनाले धेरै बेरसम्म काम गर्न सक्ने कुरा यिनीहरु बताउँछन् । शरीर हृष्टपुष्ट भएको काम धेरै गर्न सक्ने बलियो यी जातिहरुमा खान पकाउने काम चाहिँ महिलाहरुले गरेता पनि पुरुषले पनि महिलाहरुलाई सघाउने गरेको पाइयो । चुल्होमा सासुले आफ्नो श्रीमान, छोराबुहारी, छोरी सबैलाई एकैचोटी खाना दिएर आफू पनि खाना बस्छन् र कसैलाई खाना चाहियो भने देब्रे हातले खाना थप्ने कार्य गर्छिन् । आफ्ना परिवार मात्र हुँदा उनीहरु सधैं यसरी नै खाना खाने गर्दछन् । पाहुना आएको

बेलामा सबभन्दा पहिले पाहुनालाई र घरको सबैभन्दा ठूला र बच्चाहरूलाई खाएर मात्र अरु परिवार तथा भान्सेले खाने गर्दछन् । खाना पकाउँदा पुरुषले महिलालाई सहयोग गरेको देखिएकोले यहाँ खाना पकाउने कार्य महिलाहरूको मात्र हो भन्ने दृष्टिकोण त्यति पाइन्छ । यस गाउँमा बुहारीले सासुलाई खाना पखने पनि चलन छैन । सबैसँग खाने गर्दछन् । साथै श्रीमतीले पनि श्रीमानलाई खाना चाहिएमा देब्रे हातले दिन्छन् । यसबाट श्रीमान र श्रीमतीको समान स्तर भएको स्पष्ट हुन्छ । तामाङ्ग समाजको सरसफाईको कुरा गर्दा सरसफाईप्रति त्यति चासो दिइएको पाइदैन । एक अर्काको घर नजिक हुनाले सफा त्यति हुँदैन । खाना पकाएको भाडाहरु दिनहुँ माभ्दैनन् । धेरै कालो भएपछि मात्र माभ्छन् । घरभित्रै कुखुरा तथा बाखाको खोर हुनाले घरभित्र र पिँढीहरुमा कुखुराहरुले फोहर गर्दछन् । साथै दिन दिनै पिँढी पनि नपोत्ने हुनाले फोहर देखिन्छ । त्यसैले सरसफाईप्रति त्यति ध्यान दिइएको पाइदैन ।

८.२ संस्कारहरु

तामाङ्ग समाजको आफ्नै किसिमको मूल्यमान्यता, रीतिरिवाज तथा संस्कारहरु छन् । अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग समुदायमा शिक्षा, सञ्चार र अन्य जातजातिहरुको प्रभाव परे तापनि यस गाउँमा सबै तामाङ्ग जाति भएकोले भाषा र संस्कृति अभै सुरक्षित छ । यहाँ बुढापाका त नेपाली नै बोल्न जान्दैनन् । तर युवाहरु भने नेपाली भाषा र तामाङ्ग भाषा दुबै बोल्दछन् । यस जातिमा पनि हिन्दु धर्मको प्रभाव परेकोले संस्कारमा परिवर्तन आएको पाइन्छ । जुन उल्लेख गरिएको छ ।

८.२.१ जन्म संस्कार

तामाङ्गहरुले साधरणतया बालक जन्मेको ३ दिन मात्र सुतक बारिन्छ । ६ दिनमा छैठौँ गर्दा नुहाई धुवाई गरी सुतेको र बसेको गुन्द्री चकटीहरु फालिन्छ । बालकको छेउमा रातभर बक्ति बालिन्छ । नौदिनमा न्वारान गरिन्छ । नौ दिनमा मात्र बालकलाई भित्रबाट बाहिर निकाल्ने गर्दछ । न्वारान गर्दा सेतो दर्शन दुङ्गा ३ वटा, तितेपाती र भलायोको ठेला(फल) चाहिन्छ । एउटा हाँडीमा वा कोपरामा आँप, चाँप, तितेपाति, गाईको गहुँत हालेर ३ वटा दर्शन दुङ्गा तताएर हाँडीमा वा कोपरामा राखी त्यसमा माथिबाट पानी हालेर भ्वाँइया गरी त्यस वाफमाथि बालकलाई नुहाई धुवाई चोखो पारिन्छ । न्वारान गर्दा घरको बाबु, हजुरबा, हजुर आमाले गर्दछ । नाम राख्ने काम त्यस दिन हुदैन । पछि घरको मुलीले जन्मेको बार अनुसार बोलाउने हुँदा धेरै तामाङ्गहरुको नाम हिन्दु पात्रोको बारका नामसँग मिल्ने हुन्छ । आइतबार जन्मेकोलाई आइते तामाङ्ग भनिन्छ । तर आजभोलिका युवा पुस्ताहरुमा पछि आफैले मन पर्ने नाम राख्ने गरेको पाईएको छ । यहाँ लामा ल्याउने चलन छैन । न्वारानको अघिल्लो दिनमा लुगा धुने

सरसफाई गर्ने घर पोत्ने गर्दछन् । न्वारानको दिन बिहानदेखि सामान जुटाएर न्वारान गरी गाईको गहुँतले तितेपातीको मुन्टा टटेलाको फूलले छर्केर घर पवित्र बनाइन्छ । बालकलाई भूतप्रेतबाट रक्षा गर्न नाडी, गोडामा कालो धागो बाँधिन्छ । यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्गहरु बालकको न्वारान गर्दा बाबु, आमा, काका, काकी घरको पाको जो कोहीले पनि गर्दछन् ।

८.२.२ कर्म संस्कार

कानखावा (पास्नी)

न्वारानपछिको दोस्रो संस्कार पास्नी हो । छोरीलाई ५ महिनामा र छोरालाई ६ महिनामा पास्नी गरिन्छ । यसमा विशेष व्यक्ति चाहिँदैन । परिवारका सबभन्दा गन्यमान्य वृद्धा वा कन्य केटीबाट भात खुवाउने कार्यको शुभारम्भ गरिन्छ । पहिलो बच्चाको भात खुवाई मैना चराको चुच्चोबाट गराएमा चरा जस्तै बाठो र चलाख हुन्छ भन्ने विश्वास गरिन्छ । मैना चराको चुच्चो उपलब्ध हुन नसकेमा सुनचाँदीको वस्तुद्वारा खुवाइन्छ । भात खुवाउने दिन बालकलाई नुवाइधुवाई गरेर सफा पारिन्छ । नयाँ कपडा, फलफूल, मिष्ठान भोजन, माछा, मासु जस्ता परिकार टपरीमा राखिन्छ । थालीमा दियो बत्ति, टीकाको अक्षेता, खीर र अनेक परिकार राखिएको हुन्छ । यस अवसरमा मामा-माइजु र अन्य आफन्तहरु बोलाइन्छ । मामाले भाञ्जा-भाञ्जीलाई सके सुनका उपहार नसके चाँदीका गोडामा लगाउने कल्ली दिने चलन छ । भात खुवाई गरेपछि भोज खाने चलन छ । भात खुवाउँदा छोरीलाई सौभाग्यका सबै सिंगारका सामानहरु दिने र लगाउने चलन पनि छ । यस बेला नै माइतीले सबै सिंगार दिएको हुनाले लोग्नेको मृत्यू पश्चात पनि यस जातिका प्राय महिलाहरुले सिंगार फाल्दैन । आर्थिक स्थिति राम्रो हुनेहरुले ठूलो पास्नी गर्दछन् । पास्नीमा आफन्त छरछिमेकी सबैलाई बोलाउने गर्दछन् भने आर्थिक स्थिति कमजोर भएकाहरुले महिना पुगेपछि आमाले आफ्नै खाना लागेको खाना खुवाएर जुठो लगाउने चलन पनि छ ।

छेवर (टाप्चे) तथा स्यामा पिन्वा

कपाल काट्ने कर्म संस्कार छोराको मात्र गरिन्छ । साधरणतया ३ वा ७ वर्षको विजोर उमेरमा छेवर गरिन्छ । आर्थिक स्थिति कमजोर हुने परिवारले आफ्नो अनुकूलता हेरि ठिलो वा चाँडो विजोर वर्ष पारी छेवर गर्दछन् । छेवर विना अरु कर्म गर्न मिल्दैन । पहिले पहिले छेवर नगरेसम्म बच्चाको कपाल नकाट्ने चलन पनि थियो । तामाङ्गहरु छेवरको उत्सव धुमधामसँग मनाउँछन् । आर्थिक स्थिति राम्रो

तामाङ्गहरूको लागि त यो रवाफ देखाउने मौका पनि हो । छेवरमा सबभन्दा ठूलो भूमिका मामाको हुन्छ । त्यसैले छेवरको टुङ्गो भएपछि शुभ साइतसँग मामालाई सगुन(स्यालार) लैजाने चलन छ । जसमा कुखुराको भाले १, रोटी ६० वटा, रक्सी ३/४ पाथी, चिउरा ३ पाथी स्यालार (सगुन) पठाइन्छ ।

यस्तो स्यालार प्रत्येक मामालाई पुऱ्याउनुपर्छ । छेवरको साइत लामाले निकाल्दछ । साइत निकालेपछि छेवरको जानकारी निमन्त्रणा दिन स्यालार पठाइन्छ । स्यालारमा माथिकै जति सगुन पठाइन्छ । स्यालार मामाले छोएपछि निमन्त्रणा स्वीकारेको मानिन्छ । आफ्नो मामा नभएमा छेवर गर्दा नजिकको साइनोको मामा खोजेर भए पनि गराउने चलन छ । भाञ्जाका लागि मामाहरूले कपाल काट्ने नयाँ कैंची, टोपी, सेतो फेटा, केश पोको पार्ने रुमाल, चरेसको थाल, एकजोर नयाँ कपडा, खड्कुलो वा गाग्री र दक्षिणा दिने चलन छ ।

माथिका सामान लिएर मामा भाञ्जाको घर जान्छन् । भाञ्जाको घर पुग्नु अगाडि नै मामाको स्वागतको लागि स्यालार र डम्फुरे तयार पारिएको हुन्छ । मामा भाञ्जाको घर पुग्नसाथ दिदी भिनाजुले सगुन राखेर ढोगभेट गर्दछन् । त्यसपछि मामालाई खाजा खान दिइन्छ । बुढापाका गाम्वा (मान्यजन) ताम्वा (पूख्यौली जान्ने) सबै मिलेर खाजा खाने र तामाङ्ग भाषामा गीत गाउने गर्दछन् । छेवरमा गाउँका दाजुभाइ, इष्टमित्र, छिमेकी र लाव्तावा सबैलाई बोलाउनु पर्दछ । सबै चेलीबेटीहरूलाई एक महिना अधिदेखि नै निम्तो दिइन्छ । चेलीबेटीमा फुपू बज्यै, फुपू, दिदीबहिनी र मानेको चेलीबेटी छ भने पनि सुपारी र पान दिएर निम्तो दिने चलन छ । यी सबै चेलीबेटीहरूले दाजु वा भाइका घरमा एक भारी सेल रोटी (१२० वटा), एउटा सिङ्गो कुखुराको पकाएको मासु, १२-१३ माना रक्सी, अण्डा (बाबुआमा कन्येकेटी सबैलाई पुग्ने गरी), माछा, फलफूल, माला लिएर आउँछन् । यी सबै सामानहरूको जिम्मा छेवरघरका ज्वाँइहरूलाई दिने चलन छ । ज्वाँइहरूले भण्डारे र भान्से दुवैको काम गर्नु पर्दछ । कपाल काट्ने अधिल्लो दिन नै पाहुना इष्टमित्र, मामा-माइजू दिदीबहिनीहरू र सगुन छेवर घरमा जम्मा हुन थाल्दछ । साथै त्यस घरमा आएका पाहुनाहरूले खाए नखाएको र के के ल्याएकोछ, को को आएकोछ, के के दिएकोछ सबै कुराको जानकारी राखी हिसाबकिताब गरी दिएको जिम्मेवारीलाई कुशलतापूर्वक निभाउनुपर्छ । छेवरका दिन सगुन सहित चेलीबेटीहरूले छेवर गर्नेको हातमा थमाउँछन् । छेवर गर्ने बेलामा भाञ्जा सानो भए मामाको काखमा राखिन्छ । बाबियोको दाम्लोले घाँटीमा बाँधेर मुखमा सातमुन्टा दुबो राखेर विधिवत कार्य गरी मामाबाट कपाल काट्ने कार्य शुभारम्भ हुन्छ । छेवर गर्दा टीकाका सामान, टपरीमा बक्ति राखेर, आँगनको बीचमा गुन्द्री, सुकुल त्यसमाथि राडी, गलैँचा

ओछ्याएर छेवर मण्डव बनाएर बस्दछन् । काटेको कपाल थाप्ने केटाको दिदी वा बहिनी बसेको हुन्छ । कपाल काट्न सकिएपछि मामाले भाञ्जालाई नयाँ कपडा, जुत्ता, छाता, टोपी, टाउकोमा सेतो फेटा बाँधेर टीका लगाई दक्षिणा, उपहार र आशीर्वाद दिन्छन् । त्यसपछि घरमा आएका आफन्त, पाहुना इष्टमित्रहरूले छेवर गर्ने केटालाई टीका लगाएर दक्षिणा वा उपहार दिदा कपाल थाप्ने केटीलाई पनि दक्षिणा दिने चलन छ । टीका लगाउन सकिएपछि टपरीमा थापेको कपाल दिदीबहिनीहरूले पानी भएको ठाउँमा लगेर सेलाउँछन् । बालकले मान्यजनहरूलाई ढोग्नुपर्दछ । छेवर गरेको घरमा २/३ दिनसम्म नाचगान गरेर रमाइलो गरिन्छ । भाञ्जाले आफ्नो गच्छेअनुसार एकभारी रोटी, ३/४ पाथी रक्सी, कुखुराको पकाएको मासु मामाको घरमा पठाइन्छ । साइतको लागि बन्दुक पडकाइन्छ । मामालाई बन्दुके र डम्फुरेले बाटो छेक्दछ । तिनीहरूलाई मामाले भेटी राखेर बाटो फुकाउँछ । भोलिपल्ट मामालाई पहिले विदा गरिन्छ । त्यसपछि चेलीबेटीहरूलाई विदा गरिन्छ । चेलीबेटीहरूलाई विदा गर्दा उनीहरूले ल्याएको एक एक भारी रक्सी र रोटीको बापत उनीहरूलाई छेवर सकिसकेपछि घर फर्कदा काँसको डवगामा अलिकति चामल, रु. ५ र टटेलाको फूल राखेर दिने चलन छ । छेवर सकिए पछि सबै सामान, हिसावकिताब सासूलाई जिम्मा लगाएर मात्र ज्वाँइहरूले फूर्सद पाउँछन् ।

७ दिनपछि दोस्रो पटक कपाल खौरनको लागि मामालाई पुन स्यालार पठाइन्छ । मामाले छुरा लगाएर भाञ्जाको कपाल खौरिन्छ । यस पटक कपाल खौरदा टुपी पनि खौरने चलन छ ।

छोरालाई छेवर गरे जस्तै छोरीलाई गून्योचोली दिने चलन छ । जसलाई 'स्यामा पिन्वा' भनिन्छ । पहिले पहिले तामाङ्गस्येनीहरू घरमा कपडा बुन्ने गर्दथे । गून्योचोली ७ अथवा ९ वर्षको विजोर वर्षमा दिने चलन थियो । लामाले तिब्वति पात्र हेरेर साइत निकालेपछि गून्योचोली दिने गर्दथ्यो । यस्तो विधिवत कार्य गरेपछि मात्र कर्म चलेको मानिन्थ्यो । आमा बाबुले छोरीलाई गून्योचोली दिँदा फरिया, चोलो, पटुका, चुरा, धागो, टीका सबै सौभाग्यका सामान दिने गरिन्छ । हाल वर्तमानमा यस्तो चलन लोप भएर गएको देखिन्छ ।

विवाह

सामान्यतया महिला पुरुषलाई पतिपत्तिको रूपमा समाजले मान्यता दिनलाई विवाह भनिन्छ । विवाहलाई सामाजिक बन्धनका रूपमा पनि लिइन्छ । तामाङ्ग समाजमा मागी विवाह, प्रेम विवाह, जारी

विवाह, विधवा विवाह, अन्तरजातिय विवाह गर्ने चलन छ । चोरी विवाह लोप भइसकेको छ भने जारी विवाहमा जारी लिने चलन छैन ।

यी मध्ये कुन विवाहलाई अपनाउने भन्ने कुरा सामान्यतया परम्परा, परिवारको सामाजिक प्रतिष्ठा र आर्थिक सम्पन्नता आदिमा भर पर्दछ । तामाङ्ग समाजमा मागी विवाह सरह नै विधवा विवाह पनि मान्यता छ । तामाङ्ग जातिमा मामाचेली फुफूचेला विवाह पद्धति पाइन्छ । पहिले पहिले त हक नै लाग्ने चलन थियो भने वर्तमानमा यो चलन विस्तारै हराउँदै गएको पाइन्छ ।

तामाङ्ग जातिहरूमा स्वाँगे (समान गोत्र) थरहरूमा विवाहवारी हुँदैन । केटाको आमाको थर र केटीको आमाको थर एउटै भएमा पनि तिनका छोराछोरीबीचमा विवाहवारी हुँदैन । लामा पुरोहितले केटा केटीको जन्म वर्ष(ल्हो) र ल्होको आधारमा खाम(स्वभाव) हेरी 'मूर्ति छ्योई' भन्ने पुस्तकबाट जोखना हेरी जुने र नजुने शुभसाइत हेरी विवाह गर्ने प्रचलन छ । तामाङ्ग जातिमा विवाह मूल आधार "हुई प्रथा" (थर प्रथा) प्रमुख मानिन्छ । उमेर पुगेपछि ताम्वा(पुख्यौली इतिहासकार) र गाम्वा(गाउँमुली) हरूले थर मिल्नेसँग केटी खोज्ने काम गर्दथे । जसलाई "ताम्हेड" भनिन्छ । तर आजकल केटाको बाबुले केटीलाई नजिकबाट चिन्नेमार्फत कुरा चलाइन्छ ।

मागी विवाह

विवाह गर्दा तामाङ्ग समाजमा रीतभात धेरै नै गर्ने चलन छ । केटाले विवाह गर्ने उमेर पुगेपछि बाबुले गाउँका गाम्वा र ताम्वाको सहयोगमा केटी खोजिन्थ्यो भने आजकल केटाकेटी आफैले रोजेर बाबुआमासँग कुरा गर्ने पनि गर्दछन् । मागी विवाह गर्दा घरको मुलीले केटी पक्षसँगका मानिससँग कुरा चलाउने गर्ने गर्दछ । केटीको घरमा १ शिशि सगुन पोड लिएर जाने गर्दछ । यदि छोरी दिने भए ठेगान पोड लाने गरिन्छ । जसमा कुखुराको मासु र एक पोड रक्सी लगिन्छ । यसरी केटी दिने भएमा मामा, काका माइती खलकले पोडको मुखमा नौनी ध्यू राखेर टोटलाको फूलले ३ पटक छ्योत गर्दछन् र माइतीले पोड समाउँछन् । यदि दोविधा भए छोडेर जान अनुरोध गर्दछन् । यदि केटी नदिने भए पोड ससम्मान फर्काइदिने गर्दछन् । पोड खाँदा केटीको स्वीकृति लिने गरिन्छ । केटीले केटा मन नपराएमा, विवाह गर्नु अगाडि नै अन्तै पोइला गएमा सो पोड माइतीले ससम्मान फर्काउने चलन छ । दोस्रो पटक ठेगान पोड लैजादा एक डालो रोटी, कुखुराको भाले, २/३ पाथी रक्सी र टीका पोड (मासु र रक्सी) स्यालार लगिन्छ । पोड खाइसकेपछि केटीको माइतीबाट फेरी अर्को विवाह गर्ने नमिल्ने हुनाले केटी

पोइला जान मात्र मिल्दछ । विवाहको लागि टुङ्गो भएपछि केटीको आमाले बाबुले रीतिरिवाज र केटीलाई चाहिने सामानको माग गरिन्छ । रीत खाने भए केटापक्षसँग १२ मोहर, १२ पाथी चामाल, १२ पाथीको छ्यांग, १२ धानीको रांगो, १२ बीसा रोटी, १२.पोड रक्सी माग गर्दछन् । मावलीको लागि १ मोहर पैसा, १ माना चामाल, १ पोड रक्सी, १ बीसा रोटी, १ भाले कुखुरा अथवा पकाएको कुखुराको मासु दिनुपर्छ । आमाको लागि (दुद्यूली डालो) १ बीसा रोटी, १ भाले कुखुराको मासु, १ ठेकी दूध, १ पोड रक्सी, १ जोर कपडा वा ओड्ने पछ्यौरा, १ पाथी चामल, १२ मोहर पैसा चाहिन्छ । कन्याले मागे बमोजिम गरगहना र लत्ताकपडाहरु लैजाने चलन छ । दिदीलाई एकभारी रक्सी, एक भारी रोटी र एउटा कुखुराको पकाएको मासु चाहिन्छ । फुपूलाई एकभारी रक्सी, एकभारी रोटी र एउटा कुखुराको पकाएको मासु लैजाने चलन छ । यस बापत आमा, मामा, दिदी, फुपूले बेहुलीलाई करुवा, गाग्री वा थाल दिने चलन छ । चारदामको लागि (साइमुन्त्री डालो) १ मोहर र ८ आना दाम, २ माना चामल, ठटेरोको बत्ति, सात पोड रक्सी, दुई भाले कुखुरा वा पोथी कुखुरा, एक बीसा रोटी, कलश (बोम्बो), धुपौरो, शिव खोला चाहिन्छ । तर हाल माथिका सामग्रीहरु दिने चलनमा निकै परिवर्तन आएको छ । विधि पुरा गर्ने तर थोरै मात्रमा सामग्रीले पुऱ्याउने थालिएको पाइएको छ ।

विवाहवारीको रीतभात मामा, माइती, दाजुभाइ जन्ति आदि विवाह तयारीकोसाथ छिनोफानो सबै दोस्रो पोडमै गरिन्छ । विवाहका दिन जन्ति सहित कलश लिएर डम्फू बाजा बजाएर दुलही लिएर आउँछन् । छेवरमा मामाको जस्तो भूमिका विवाहमा ताम्वाले खेल्दछ । विवाहको लागि शुभारम्भ गर्न केटाको बाबुले स्यालार ताम्वासमक्ष राखेर अनुरोध गरेपछि विवाह कार्य शुभारम्भ गर्दछन् । सर्वप्रथम ताम्वाले ,गाम्वा, गान्सोम, लामा, लाव्तेवा, मूलमी, चोहो, डाप्ता, दोप्ता, दौराइ आदि वृद्धा तथा मान्यजनहरुको उपस्थितिमा विवाह कार्य सफलतापूर्वक होस भनी सम्पूर्ण लोक, पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारैदिशाको देवी देवतालाई पानी चढाउँछन् । पानी र धूप चढाइसकेपछि घर र जग्गे शुद्ध भएको मानिन्छ र वरलाई सिंगार्ने काम गरिन्छ । पहिले पहिले वरले दौरा सुरुवाल, कम्मरमा पटुका र शिरमा टोपी लगाएर सेतो फेटा बाध्ने चलन थियो भने हाल वर्तमानमा सुटपैन्ट नै लगाउने चलन चलेको छ । वर वधुलाई आफन्त इष्टमित्र सबैले टीका र खादा लगाएर दक्षिणा वा उपहार दिने गर्दछन् । त्यसपछि वरको बाबुले ताम्वा र गाम्वालाई पनि फेटा बाधिदिन्छन् । दिदी बहिनीले चाहि बाटाको छेउमा सगुन लिएर बाटो छेक्दछन् । त्यस सगुन छ्योत गरी घडामा भेटी राखेर बाटो फुकाउँछन् । तामाङ्गहरु परम्परागतमा जन्ति जाँदा डम्फू बाहेक अरु बाजा बजाउँदैनथे । तर आजभोलि ठाउँ अनुसार

बाजाहरु बजाएर विहे गरेको पाइन्छ । जन्ति जाँदा चारदाम पोड, मावली पोड, आस्याड पोड, आडि पोड, दुध्यौली पोड, बाबुमाइती पोड आदि साथै लैजानुपर्छ ।

जन्ति केटीको घरमा पुननुभन्दा अगाडि जन्ति आइपुगेको जानकारी दिन जान्छन् । जसलाई 'भात कटुवा' भन्दछन् । जन्तिहरु बेहुलीको घर पुगेपछि जन्तिहरुलाई रोटी, माछाफुल, बत्ति र सगुन पोड राखेर स्वागत गर्दछन् । बेहुलापक्षले आँगन कुल्चन पोड राख्दछन् । जसलाई "खोड-ग्रा-नाडवा पोड " भनिन्छ । बेहुलीको घरमा साँभको खानपिन सकिएपछि विवाहको पूर्व स्वीकृति अनुरूप तोकिए बमोजिम बेहुलापक्षले बेहुलीपक्षको गाम्वालालाई प्रचलित विवाह रीत र कोशेलीहरु बुझाएपछि गाम्वाले तय भए बमोजिम छ छैन भनेर देखाई बुझाउने गरिन्छ । माइतीले पनि उपयुक्त मागे बमोजिमको रीतकोशेलीहरु ग्रहण गर्नु भनेर स्वीकार्दछन् र उपस्थित गणहरुले पनि देख्यौं भनेर स्वीकार्दछन् । बेहुलातर्फबाट ल्याएको चारदाम आशन वरीपरी राखेर बेहुलापक्षले ल्याएको गरगहना लुगाफाटाले बेहुली सिंगार्ने काम गर्दछन् । तामाङ्गहरुको विवाहको महत्वपूर्ण रीत चारदाम बुझाउने काम हो । बेहुला र बेहुली पक्षको ताम्वाहरुबीच विविध विषयमा दोहरी प्रश्न उत्तर रूपी वादविवाद चल्दछ । यसरी प्रश्नउत्तर खेलमा चित्त बुझ्दो उत्तर आएमा बेहुलीपक्षको ताम्वाले ढोका खोल्दछ भने चित्त बुझ्दो उत्तर नआएमा दण्ड स्वरूप बेहुलापक्षका ताम्वाले "पोड" राखेर ढोका खोल्न लगाउँछन् । यस्तो पोडलाई "म्राव ठोडवा पोड" भनिन्छ । चारदामको पोड राखेपछि दुवै पक्षका ताम्वाहरुले आ-आफ्नो पुख्यौली नालीबेली खोतल्ने गर्दछन् । "जसलाई ताम्वा दाम" भनिन्छ । ताम्वादाम शुरु गर्न अघि ताम्वाले केटालाई म्हुइम्हेन्दो(चाँदीका फूल) र केटीलाई म्हार म्हेन्दो (सुनका फूल) नाम राख्दछन् । अनि माइतीलाई दुलाहा पक्षले चारदाम पोड विभिन्न प्रक्रिया गरी घुँडा टेकी समाएर पुख्यौली रीतभात नगराएसम्म उक्त पोड बोकी रहनुपर्दछ । चारदाम गर्दा ताम्वाहरुले "हामा" गाएर सम्पन्न गर्दछन् । यस बेला बेहुला पक्षका ताम्वाहरुले बेहुली पक्षका माइती समक्ष चारदाम (एक पैसा) राखी केटी माग्ने चलन छ । यसैलाई चारदाम भनिन्छ ।

अनि बेहुलापक्षका ताम्वाले यसो भन्दछन् "माइती खलकहरु आजदेखि फलानाको छोरी फलानाको छोरालाई दिएँ भनेर चारदाम पोड समाति वचन दिनुहुनेछ भनेर बसेका छौं ।" यसपछि उक्त पोड चारदाम र सोका साथ रहेको कोशेलीहरु ग्रहण गर्दछ । यसरी ग्रहण गर्नु पूर्व बेहुली पक्षका माइतीइहरुलाई ताम्वाले यसो भन्न लगाउँछन् । "परापूर्वकालदेखिको रीमठीम अनुसार मेरी फलानी छोरी फलाना ज्वाँइलाई चढाएँ । वावुको रगत र आमाको मासु आजदेखि फरक भयो र हाम्रो चेलीको

कुल आजदेखि भिन्न भयो । तर आत्मरूपी हाड (रुइथर) हामी माइतीको गोत्रको साथमा रहनेछ, (जिम्मा दिएका छैनौं) हाम्रो चेली मरेपछि हामी दाजुभाइको उपस्थिति बेगर लास उठाउन दागबत्ति दिने र घेवामा 'मिनज्याड' पोल्ने अधिकार हामीमै सुरक्षित रहनेछ ।" माइतीले भन्दछन्, 'आजदेखि मेरी छोरी ढुङ्गोमा रगत र डोकोमा मासु गरेर फलानो ज्वाँइलाई बुझाएँ ।' केटातर्फका लाक्तावाहरुले पनि हामीले बुझ्यौं भनी स्वीकार्दछन् । यसरी छोरी जिम्मा लगाए पनि छोरीको मृत्यू भएमा लास र लास नभेटे खरानी भए पनि माइतीले आफ्नो चेली मरेको प्रमाण पाउनु पर्ने र चेलीको लागि माइती घरमा सधैं अधिकार रहिरहने कुरा परापूर्वकालमा थियो । त्यो परम्परा आज पनि जीवितै छ । चेलीको लास माइती नआइ नउठाउने चलन आज पनि रहिरहेकोछ । तर आजकल कहीं कहीं हिन्दू धर्मको प्रभावले चेलीलाई माइतीमा विवाह पश्चात अधिकार नदिने परम्परा पनि प्रचलनमा आइसकेको छ ।

बेहुलाले चारदामको लागि ल्याएको बासेको कुखुराको भाले आफ्नो घरको मूल ढोकामा एकै पटक काटेर छिनालेर वा गर्दन निमोठेर चुँडाली घरको धुरी नघाउने चलन छ । यसो गर्नुको अर्थ 'मेरी श्रीमतीलाई कसैले आँखा लगाएमा यसरी नै त्यस जात्रको घाँटी निमोठ्छु' वा काट्छु भन्ने अर्थ ल गाउँछ । त्यसपछि टीका र ढोगभेट गरेर विवाह सम्पन्न मानिन्छ । भोलिपल्ट बेहुली लैजाने बेलामा बेहुलीको बाबुआमा दाजुभाइलाई ताम्बागाम्बाले पोड राखेर बेहुलीलाई माग्दछ । दुलही आँगन आइसकेपछि माइतीका गाम्बाले नातेदारहरुको परिचय गराउँछ । यस बखत थालमा सगुन राखेर बेहुली अघि बेहुला पछि पछि लगाउँदै बेहुलीपक्षका मान्यजनहरुलाई चिनाउँदै सगुन पैसा राखी ढोगी आशीर्वाद माग्ने गरिन्छ । यसलाई 'फ्यादेन' भनिन्छ । बेहुली विदा गर्दा बेहुला पक्षका ताम्बाले 'फेवा पोड' (विदाबारी सगुन) राखेर बेहुली लग्ने आज्ञा मागेपछि दाजुभाइले बोकेर बेहुलीलाई घरदेखि अलिपरसम्म पुऱ्याउछन् । बेहुली नल्याएसम्म बेहुलाको घरमा धुमधाम नाचगान र ख्यालठट्टा गर्दछन् । घरमा बेहुलीलाई सगुन राखेर स्वागत गर्छन् । त्यसलाई छ्योत गरी दण्डिका राखी बेहुलीलाई आँगनको मण्डपमा बसाउँछन् । मण्डपमा "तिसा नाडवा रेम" बाँडिन्छ । दुलहाको आमाबाबुले विधिवत रीतभात गरी सिन्दुर हाल्ने चलन छ । बेहुलाले जग्गे राखिएको हतियारमा ३ पटक सिन्दुर हालेर मात्र बेहुलीलाई सिन्दुर हाल्दछ । भण्डै ९-१० हातको सेतो कपडा ढोकाभित्र र बाहिर पर्ने गरी बिछ्याएर त्यसमा सत बीउ छरेर त्यसमाथि बत्ति राखेर बालिएको हुन्छ । बेहुलीले घरभित्र पस्दा ढोकाको दायाँ र बायाँ राखिएको सगुनका पानीको घडाहरु मध्ये एक बेहुलीले काखीले च्यापी बत्तिलाई गोडाले निभाउदै घरको मुल ढोकाबाट भित्र पस्दछ । दुलहीको पछि पछि दुलहा पनि सगुन धूप धुपौरो बोकेर पस्दछ । दुलहा र

दुलहीले ल्याएको पानीको घडा, सगुन, धूप र धुपौरो ढुकुटीमा लगेर राख्ने गरिन्छ । त्यसपछि विवाहमा सामेल भएका पाहुना ताम्बा-गाम्बा र नातेदारहरूलाई दुलहाको मूल सदस्यले स-सम्मान सगुन र करनमरन रेम राख्दै खादा चढाई विदाबारी गर्ने गरिन्छ । तामाङ्ग जातिहरू आफ्नै घरमा बेहुली ल्याएर सिन्दुर हाल्ने चलन छ । सिन्दुर हालेपछि दुलहा र दुलहीलाई जुठोसोलोडोलो गराई सासु र नयाँ दुलही पाथीमाना गर्दछन् । पाथीमाना गर्दा सासुले एक पाथी धानमा र रु.१- डबल राखेर नाड्लोमा राखी पैसा खोज्ने चलन छ । बुहारीले पहिले पैसा भेटिएमा पहिलोपल्ट छोरा जन्मन्छ भन्ने भनाई छ । यसरी पाथीभरी धानमा रु.१- डबल राखेर नाड्लोमा खन्याई सासु र बुहारीले पैसा खोज्ने क्रम ३ पटक गर्दछन् । उक्त धान र पैसा ढुकुटीमा सासु र बुहारी भइ राख्दछन् । साथै सासुले बुहारीलाई ढुकुटी देखाउने गरिन्छ । त्यसपछि नयाँ बुहारीले सबैलाई सगुन बाँड्दछ । दुलहा दुलहीलाई मामा लगायत मान्यवर गान्वाताम्बाले सगुनका सामग्री खुवाएर टीका लगाएर शुभआशीर्वाद दिन्छन् । घरमा बेहुला अधि र बेहुली पछि पछि लगाउँदै नाता चिनाउँछन् । बेहुलीले आफ्न्त र मान्यजनहरूलाई सगुन पैसा राखी ढोग गर्दै आशीर्वाद लिने गर्दछन् । विवाह गरेको ३ दिनको दिन दुलहाले दुलही लिएर ससुराली फर्कने गरिन्छ । जसलाई 'दोवारी निवारी' भनिन्छ । दुलहा पक्षले ससुरालीमा सोली कोशेली लैजानुपर्छ । यस कोशेली ग्रहण नगरेसम्म दाइभाइले छोरीचेलीको मुख हेर्न हुँदैन भन्ने चलन छ । दाजुभाइको हातमा कोशेली बुझाएर पछि उपस्थित मान्यजनहरूलाई दुलहा दुलहीले ढोग गर्छन् । ढोग थापेपछि दाजुभाइहरूले सगुन राखेर थालीमा दक्षिणा हाल्ने गर्दछन् र मूल दाजुबाट कोशेली बाँडेर खाने गर्दछन् । कारणवस चारदाम गर्न नसकेमा ढोगभेट टीका फुर्कासम्म गरी चारदाम कुनै समयमा गर्ने शर्तमा दुलही भित्राउँने पनि चलन छ । मावली रीत नवुभेसम्म चारदाम दिन वा लिन सकिदैन । चारदाम नदिई कच्चा राखिएका छोरी वा बुहारीको अंशवण्डामा समेत अधिकार रहदैन । त्यस्ता छोरी वा बुहारीबाट जन्मिएका सन्तान मावलीकै अधिकारमा रहनु पर्ने परम्परा यस जातिमा पाईन्छ । तर आजकल यति धेरै रितभात खाने चलन पनि छैन । थोरै सगुनले पनि रितभात पुऱ्याउने गरिन्छ । त्यस्तै चारदाम छिन्दा पनि थोरै सगुनमा छिन्ने गर्दछ । अहिले सानोतिने खर्चले भ्याउने गरी सजिलैसँग रित पनि पुऱ्याउने र काम पनि सिध्याउने तरिकाले आमा, मामा, दिदी, फूपु, लाक्तावा गाम्बा सबैलाई एकै ठाउँमा जम्मा गरेर सगुन राखी चारदाम छिन्ने गरिन्छ । यसरी रितभात गर्ने एउटा परम्पराको रूपमा मात्र लिने गरेको पाईन्छ ।

चोरी विवाह/प्रेम विवाह

एक आपसमा मायाप्रीति लगाई मेला जात्रा वा हाटबजारबाट भगाई वा स्वइच्छाले भागी जाने विवाहलाई चोरी विवाह भनिन्छ । मागी विवाह भन्कटपूर्ण र खर्चिलो पनि हुने हुँदा त्यस्तो भन्कटबाट बचन तामाङ्ग युवायुवतीहरु माया प्रीति गाँसेर स्वच्छाले दाम्पत्य जीवनमा बाँधिन्छन् । कतिपय तामाङ्ग थरलाई मागी विवाह फाप्दै न भन्दछन् । त्यसैले बाबुआमाले नै चोरी विवाहलाई प्रोत्साहन गर्दछन् । तामाङ्ग समाजमा हाट, मेला, जात्रा, वनपाखा, पूजा चाडपर्वमा जुहारी खेल्ने र नाच्ने गर्दछन् । यसैबाट तामाङ्ग युवायुवतीहरु एक आपसमा मायाप्रीति गाँस्दछन् । यसरी तामाङ्ग जातिमा संस्कृति नै प्रेम विवाहलाई टेवा दिने खालको पाइन्छ । प्रेम गरेर विवाह गर्ने स्थितिमा पुगेपछि उनीहरु बाबुआमाले मानेमा केटीलाई घर ल्याइन्छ भने दुवै पक्षको मञ्जुर भएमा विवाह गर्दछन् । बाबुआमाले मञ्जुर नदिएमा केटाकेटी घर छाडेर भाग्दछन् । पछि बाबुआमाले थाहा पाएर खोजेर भित्राउँने गर्दछन् । त्यसपछि केटाको बाबुले चोरको स्वर 'पोड' भनेर रक्सी र कुखुराको स्यालार लिएर जान्छन् । तर मैले अध्ययन गरेको क्षेत्रमा भने यस्तो सगुन एउटा बाखा र रक्सी लिएर जानु पर्दछ । केटा र केटीका बाबुआमाको मन मिलेमा सामान्य टीकाटालो र ढोगभेट गरिन्छ । ठेगान पोड गाम्वाले केटीको बाबुआमालाई बुझाउँछ । उक्त सगुन पोड ग्रहण गरी उपस्थित सम्पूर्ण व्यक्तिहरु खाने गर्दछन् । अन्तमा कोशेली सहित छोरी ज्वाँइलाई चलेको रीत अनुसार घरमा भिकाइन्छ । रीतभात गर्न आउँदा चोरी कोशेली र लमीलाई पनि एक कोशेली लगनु पर्दछ । जसलाई 'ग्याम्वा ढाड' भनिन्छ । आजकल मागी विवाहभन्दा यो विवाह प्रचलनमा बढी देखिन्छ । फ्रिकीको (१९८८) अध्ययन क्षेत्रमा लगभग ६५% विवाह चोरी विवाह थियो । तामाङ्ग जातिमा माइतीलाई चोरी विवाह गरेको चित्त नबुझेमा त्यस्तो छोरीचेलीलाई खोसेर फर्काउने चलन छ । केटाले मात्र केटी मन पराएर तानेर लगेको केटीले ३ दिनसम्म पनि विवाहको लागि स्वीकार नगरेमा स-सम्मान फर्काउने गरिन्छ । यसरी फर्केर जाँदा पनि तामाङ्ग समाजमा त्यस्ती केटीमाथि कुनै किसिमको अपवित्र भएको मानिदैन । पछि उनको अर्कैसँग स-सम्मान मागी विवाह हुन कुनै अप्ठ्यारो पर्दैन ।

जारी विवाह

लोग्ने हुँदाहुँदै कुनै व्यक्तिले अर्काको स्वास्नीलाई फकाएर वैवाहिक सम्बन्ध गाँसेमा त्यसलाई जारी विवाह भनिन्छ । माइतीबाट जारी गरी भएको भएमा माइतीले जारी तिर्न सहयोग गर्दछ । घरबाट

भगाएको छ भने केटाले नै तामाङ्ग भेला गरेर तोकिए बमोजिम जारी उठाउँछ । जारीवालाले जारी तिरीरकेपछि अन्य कुनै रीत माइतीलाई बुझाइरहनु पर्दैन । पहिले पहिले यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग जातिमा विवाह स्वरूप जारी खर्च रु.५०१- र गरगहना फिर्ता लिने चलन थियो । हाल यस्तो चलन नरहेको साथै धेरै जसो आफै मन पराएर जाने हुनाले दोस्रो विवाह हुने गरेको कम पाइएको छ । यसरी जारी बुझाए पछि माइतीपट्टि ढोगभेट फुकाइन्छ । यसरी लिने जारी त्यस महिलाको विवाहमा लागेको खर्चमा भर पर्दछ । अधिल्लो पतिले दिएको गरगहना र विवाहमा खर्च जारीमा तिर्ने गर्दछ । जारी लिने दिने गर्दा केटीको चारदाम, साइमुन्त्री भैसकेको हुनु पर्दछ । चारदाम नभएकी स्वास्नीको जारी लिन पाइदैन । तर आजभोलि जारी लिने दिने चलन पनि हराइ सकेको देखिन्छ ।

विधवा विवाह

विधवा विवाहलाई पनि तामाङ्ग समाजमा मान्यता दिएको पाइन्छ । दाजुको मृत्यू भएमा भाउजुलाई देवरले बेहोर्ने चलन पनि थियो भने जेठाजुले र ज्वाँइले जेठी सासु छुन समेत बर्जित छ । साली विवाह भने गर्न सक्दछ । सालीको मञ्जुर भएमा मागी विवाहको रीत बुझाउनु पर्दछ । स्वास्नी मानिसले धेरै पटक विवाह गर्नाले सामाजिक, धार्मिक र सांस्कृतिक महत्व र स्तरमा कुनै कमी आउँदैन भन्ने यस जातिमा पाइन्छ ।

अन्तर्जातीय विवाह

तामाङ्ग समाजमा गैर तामाङ्गलाई विवाह गर्ने छुट छ तर त्यस्लाई सामाजिक, धार्मिक तथा अनौपचारिक मान्यता हुन्छ । केटाले अन्तर्जातीय विवाह गरेमा पहिले केटीलाई लामाद्वारा कर्मकाण्डसम्मत रूपमा एक समारोहवीच चल्दोमिल्दो थर प्रदान गर्दछ र थर प्रदान गरी तामाङ्ग चेली भएपछि चारदाम रीत गराउने गरिन्छ । यसरी अन्य जातको छोरीलाई पनि आफेनो जातमा मिलाउने उदार परम्परा तामाङ्ग समाजमा पाइन्छ । तर तामाङ्ग चेलीहरु अन्य जातसँग विवाह गरेमा त्यस्ता चेलीहरुको विवाह वापत रीत कोशेलीहरु स्वीकार गर्दैनन् ।

सम्बन्ध विच्छेद

तामाङ्ग यसलाई 'सिन्को पांग्रो' कसै कसैले 'व्या ख्लावा' भन्दछन् । तामाङ्गहरु विवाह सम्बन्धमा जति उदार छन् सम्बन्ध विच्छेद सम्बन्धमा पनि त्यति नै उदार दृष्टिकोण पाईन्छ । केटीलाई लोग्ने मन नपरेमा वा मन मुटाव भएमा स्वास्नी मानिसले सम्बन्ध विच्छेद गर्न सक्छन् । सम्बन्ध विच्छेद गर्दा तामाङ्ग भेला र माइतीहरु राखिन्छ । यस भेलामा केटा वा केटी कसले सम्बन्ध विच्छेद गर्न चाहेको हो पहिचान गरी सम्बन्ध विच्छेद गर्न चाहनेले पक्षले दण्ड हर्जना तिर्नु पर्दछ । बालबच्चा भएको भए केटापक्षले लिनु पर्दछ । सम्बन्ध विच्छेद गर्दा दुवै पक्ष मञ्जुरी भएमा तामाङ्ग परम्परा अनुसार पति पत्निले सिन्का र धागोको दुवै छेउ तानेर चुंडाल्ने गर्दथ्यो । कहीं कहीं पति पत्नीको कम्मरमा धागो बाँधेर त्यसलाई बीचमा छिनाइदिने चलन पनि थियो । सिन्का र धागो चुंडालेपछि पति र पत्निको सम्बन्ध विच्छेद भएको मानिन्छ । यसरी सम्बन्ध विच्छेद भएपछि दुबैलाई पुनः विवाह गर्ने स्वतन्त्रता हुन्छ । तर आजकल सम्बन्ध विच्छेद जिल्ला अदालतले नै गर्ने हुँदा यस्तो चलन हटेको देखिन्छ ।

घर जाँड

छोरी मात्र भएमा तामाङ्ग समाजमा पनि घरजाँड बस्ने चलन छ । घरजाँडले अर्को विवाह गरेमा उसले पाएको अधिल्लो ससुरालीको सम्पति स्वास्नीकै अधिकारमा रहन्छ । यदि आफ्नै छोरीले लोग्ने छोडेर अर्कैसँग विवाह गरेमा बाबुआमाले सम्पतिमा छोरीको कुनै अधिकार रहदैनथ्यो । यदि स्वास्नी मरेमा घरजाँडले ससुरालीको मञ्जुरीमा अर्की स्वास्नी ल्याएर बस्न सक्दथ्यो । तर आजकल यस्तो चलन देखिदैन ।

८. २. ३ मृत्यु/दाहसंस्कार र घेवा

दाहसंस्कार

तामाङ्गहरु जीवनको अन्तिम संस्कारलाई खूब महत्व दिएर सम्पन्न गर्दछन् । तामाङ्गहरु भूतप्रेतको दोष हटाउन बोम्बो, सिमेभुमे-कुल बिग्रे लम्बु, देवीदेवताको आराधानाबाट मानिसको जीवनको रोगव्यधी हटाउन लामा लगाउने गर्दछन् । यी तीनै उपायले नछोए मानिसको मृत्यु अवश्यभावि छ भन्ने विश्वास गर्दछन् । जूठोलाई हेय वस्तुको रूपमा पनि लिदैनन् । लासलाई २ दिनसम्म घरमा विभिन्न विधिवतः गरेर मात्र लास संस्कार गर्ने चलन छ । मृत्यु भएपछि जीवनको अन्तिम संस्कार सम्बन्धी धार्मिक कार्यहरु शुरु गरिन्छ । मृतकलाई स्वर्गमा पुऱ्याउन गरिने पहिलो संस्कार घेवा हो । जसमा मृतकको पार्थिव शरीरबाट आत्मलाई अलग पार्नु हो । यो कार्य लामाबाट गरिन्छ । पुरुष मरेमा उसका दाजुभाइ

र दिदीबहिनीलाई खबर गर्दछ भने महिला मरेको हो भने सर्वप्रथम उसका माइती खलकलाई खबर पुऱ्याउनुपर्दछ । खबर पुऱ्याउने कामको साथै लामा लिन जाने काम पनि सँगसँगै गरिन्छ । मानिस मर्ने बित्तिकै गोबरले पोतेर त्यसमाथि तितेपाति ओछ्याएर लासको टाउको ढोकातर्फ फर्काएर ठट्यौरोमा बत्ति बालेर लासको सिरानीनेर राखी कही चीजले पनि छुन नदिइ लास कुर्दछ । भात, तरकारी, अण्डा लासको टाउकोनेर राखिन्छ । लामा भोलिपल्ट आउँछ । लामा आउँने बित्तिकै पिंढीमा गुन्डी आछ्याएर पिर्का(छ्याडदुर) भिपुङ्गमा सगुन राखी कस्यौल गर्छ । त्यसपछि सगुन खाइ लामा भित्र पस्दछ । गुन्डी ओछ्याएर बसेपछि सामानहरु निकालेर रेम छेवो पूरै घरमा गर्ने कि आधि चिहानमा गर्ने भनेर सोध्दछ । पूरै घरमा गर्ने भनेमा एक दिन लास घरमा राखेर विधि गर्नुपर्दछ भने आधा चिहानमा गर्ने भनेमा चिहानमा बढी समय लाग्दछ तर घरबाट लास छिट्टै निकाल्दछ ।

दिदीबहिनीहरु नजिक छन् भने त्यसै दिन र टाढा भए भोलिपल्ट आइपुग्दछन् । लासलाई पद्मासन मुद्रामा राखिन्छ । कसै कसैले तामाको खड्कौला अथवा भाँडोमा पनि राख्दछन् । लासलाई मुख धोई सफा गरी सिँगाँदछन् । पहेलो अथवा सेतो कपडाले छोपेपछि लासको टाउकोमा पञ्चबुद्धको थाङ्गा चित्र (रिङ्गा) लगाएर लासको अगाडिपट्टि १०८ ध्यूको बत्ति (ह्मार मी) बाल्दछन् भने जीवित अवस्थामा खाने सम्पूर्ण किसिमका भोजनहरु अगाडि राख्ने चलन छ । अन्तिम संस्कारको लागि लामाले साइत निकाल्नुपर्दछ । लामाले बुम्बा (कलश) मा मन्त्र पढेर चोखो बनाएको जलले शवमा अभिषेक गरी गाउँका गाम्वाहरुले तितेपातिको शुद्ध जलले नुहाएर शारीरिक पाप पखाल्ने काम गरिन्छ । जसलाई 'खुयी ठूइसोल' भनिन्छ । यदि शरीरमा गरगहना भए फुकालेर सेतो कपडाले बाँधिन्छ । घरवालाले नयाँ कपडा लगाई मृतकलाई पद्मासनमा बसाएर धर्म कात्रो ओडाइन्छ र मृतकको गलामा भने माला, खादा, शीर र कुममा अवीर र तेल लगाई दिने गरिन्छ । मृतकको छेउमा धूप बत्ति जलाई कुखुराको उसिनेको अण्डा र बेसारले मुछिएको पहेंलो खाना राखिन्छ । लामाले भातको तोर्मो बनाउँछन् । जसलाई थुई छिम्बु च्याडरेसीको तोर्मा भनिन्छ । यसको वरीपरि ६ वटा सोल्मो बनाएर लामाहरुले धार्मिक पुस्तकहरु पढ्दै शोकधुनहरु बजाउँछन् । भित्तामा थाङ्गा टाँस्दछन् । अनि दिदीबहिनी, आफन्त छरछिमेकको प्रत्येक घरबाट मृतकको लागि चामल, काँचो तरकारी ल्याएर मरेको घरमा दिएको हुन्छ । ती सामानहरु पकाएर पाकेपछि सबैले थालमा राखी मरेको लासलाई भात, तरकारी, अण्डाको साथमा फलफूल राखेर चढाउँने गर्दछन् ।

साइत ननिस्केमा २-३ दिनसम्म पनि दाइभाइले लास कुरेर बस्दछन् । साइत निस्केपछि बाँसको खटमा लासलाई बसाएर रातो, पहेंलो, सेतो ध्वजा र अन्य सिँगारले सजाई अगाडिको पहिलो काँध मृतकको सन्तानले र अर्कोपट्टि ज्वाँइले काँध लगाएर लास उठाउँछन् । शव यात्रमा सेतो, पहेंलो, हरियो, नीलो र कालो धर्जु बाक्ने, त्यसपछि बीउविजन छर्दै ह्याङ्गो, भ्याम्टा र शङ्ख बजाउँदै अगाडि थाङ्गा र मूल लामा मन्त्र पढ्दै हिड्दछन् भने मलामी जाने लोग्ने मानिस र स्वास्नी मानिसले हातमा धूप बालेर र 'मानी मो तम' (देवताको आराधाना, प्राथना) गर्दै हिड्दछन् । शवलाई डाँडामा लगेर दाहा संस्कार गर्दछन् । ठूला लामा, अविवाहिता केटा वा केटी मरेमा गाड्ने चलन छ । ठूला लामाहरु अवतारी हुने विश्वास पनि गरिन्छ । यदि मृतक बोम्बो भएमा शवको अधिपछि बोम्बोहरु ह्याङ्गो बजाउँदै नाच्छन् । बोम्बोको शव जलाइदैन, गाडिन्छ । कतिपय मृतकको जन्म र मरणबीचको ची (साइत) हेर्दा अरुलाई पिर्ने भएमा शवको साथमा घरबाट पशुपन्छि वा जनावर जङ्गल छाड्ने वा तोर्मोको भूत बनाई दोबाटोमा मन्साउने गर्दछन् । यसरी तामाङ्ग जातिहरुका समाजमा लामाहरु विधिवतः कर्मले धार्मिक पाठपूजा गरी लास जलाउने गर्दछन् ।

यदि चारदाम नगरिएको चेली मरेमा सोको माइती राखी बुझाएर मात्र शवको दाहासंस्कार गर्ने गरिन्छ । यस्तो चारदाममा पुरुष मरेमा खुकुरी र महिला मरेमा हँसिया राख्ने चलन छ । औकात हेरी मृतकको लासलाई २-४ दिनसम्म घरमा राखी पूजा गरिन्छ । सोमबार मरेमा लासले जोडी खोज्छ, भनेर चिहानमा शव लैजाँदा नक्कली शव पनि लैजाने चलन छ । घरमा राखेको समयमा शवलाई घर परिवारले बिहान, दिउँसो र बेलुका जे खाने समय हुन्छ सो वस्तु सर्वप्रथम मृतकलाई दिइन्छ । धूप बत्ति बाल्ने गर्दछन् । मरी मराउ परेको घरमा गाउँले, नातेदार, छोरीचेली समेतले सहयोग स्वरूप अन्न र पैसा हाल्ने गर्दछन् । यसलाई 'चरी' भनिन्छ । आमा बाबु र दाजुभाइको घेवाको लागि छोरीचेलीले पनि लाग्ने आधि खर्च बेहोर्ने चलन छ । लासलाई ३ पटक घुमाएर छोरीचेली, ज्वाँइ, मलामी र शोकाकुल परिवारले सतबीउहरु र पैसा घरदेखि छर्दै जान्छन र दाहासंस्कार गर्ने स्थलमा पनि छर्ने गर्दछन् । घरबाट ल्याएको खानेकुरा राखेर लामाहरुले आसन बनाई मृतकलाई स्वर्ग पुऱ्याउन घरबाट ल्याएको तोर्मा राखी बाँकी विधिविधान गरी पुस्तक पढ्छन् । लास पोल्ने जमीन छुट्टै हुन्छ । लामाले लास पोल्ने ठाउँमा बज्रायानी चिन्ह बनाई कमलको फूल र बज्रदोर्जेको रेखा मन्त्र कोरी, अर्ध चन्द्रमाथि गोलपारी सो माथि चित्ता निर्माण गर्दछन् । लामाले विधिवतः कार्य गरी शव जलाउँछन् । हिन्दूधर्मबाट प्रभावित भएकाहरुले दाही, जुङ्गा, कपाल र आँखी भौं पनि खौरन्छन् । चिहानबाट भूतप्रेत नआवस भनेर वाटामा

काँडाहरु राख्ने गरिन्छ । लास जलाई फर्कदा छोराले एक भारी पानी लिएर आउँछ । आइमाई मानिसहरुले यस समयमा चुल्होदेखि पोतेर दैलोसम्म लैजान्छन् । फेरी दैलोबाट पोतै चुल्होसम्म लैजान्छन् । त्यसपछि कुचोले कसिँगर लगाई सफा गरेर घरको सबै सामान सफा गर्ने सुनपानी, गहुँतलाई तितेपातिको मुन्टाले छर्केर घरको सबै ठाउँ चोखो पारिन्छ । मलामीहरुको लागि खाजा स्वरूप मकै भुटेर राखेका हुन्छन् । चिहानबाट फर्केकाहरु घरभित्र पस्न पूर्व तितेपाति र धुपीको धूप (सिक्पा) लिने गर्दछन् । मलामीहरुले खाजा खुवाई लामाहरुले उनीहरुलाई चोख्याउने गर्दछन् । लामाहरुले मृतकको अस्तु तामाको पैसा सहित चोखो पातमा राखेर, काँचो धागोले बेरेर चोखो ठाउँमा राख्दछन् । तीन दिन जूठो बारिन्छ । छोराछोरी सबैलाई ३ दिनमा जूठो फुकाइन्छ । १३ दिनमा डो गर्ने चलन छ । खर्च जुटेमा भोलिपल्टै पनि १३ दिनको काम गर्न मिल्छ । छोराछोरी सबैलाई नून फुकाउँछ । त्यसपछि मात्र मृतकका परिवारले सबैसँग बोल्न पनि मिल्छ । नून नफुकाएसम्म आफ्नो जात बाहेक कसैसँग पनि बोल्न र कतै हिड्न र केही पनि छुन हुँदैन र एक छाक मात्र खानु पर्दछ । सेतो कपडा भने लामाले बरखीमा फेराउँछ । जूठो फुकाएपछि लामाले अस्तुलाई विधिविधान गरी अर्को ठाउँमा सारेर घेवा नगरेसम्म मृतकका परिवारले यसलाई साँभ विहान फलफूल र खानेकुरा चढाउने र बत्ति बालेर राख्दछन् । ४९ दिनको दिन घेवा गरिन्छ । ३ दिनमा 'डो' गर्ने प्रत्येक ७/७ दिनमा दुन्ची गर्ने र ४९ दिनमा घेवा गर्ने प्रचलन छ । घेवाको लागि निक्कै खर्च लाग्दछ । मरेको मानिसको नाममा भाँडाकुडा, लुगाफाटा आइमाई मानिस भएमा गरगहना र आइमाइले लगाउने लुगा दान गरिन्छ । यदि ४९ दिनमा खर्च जुटाउन नसकेमा ६ महिना वा एक वर्षमा पनि घेवा गर्ने चलन छ । विशेष गरेर भदौ, चैत्र र पुषमा घेवा गरेमा शुभ हुन्छ भन्ने विश्वास गरिन्छ । शुद्ध तरीकाले संस्कार गर्नुपर्छ नत्र मृतआत्माले प्रेतको रूप लिई दुःख दिन्छ भन्ने विश्वास पनि गरिन्छ । मृतकको अस्तुलाई नमोबुद्ध, बौद्ध र स्वयम्भु लगायत परम्परागत रूपमा जहाँ लग्ने गरिएको छ त्यहाँ ३ वर्षसम्म लगातार बत्ति बाल्ने गर्दछन् । जन्मेर भात नखुवाएसम्मको बच्चाहरु मर्दा यसै गाड्ने चलन छ । ११ वर्ष नपुगेको छोरी वा छेवर नगरेको छोरा मृत्यू भएमा पनि आगो नलगाई यसै गाड्ने चलन छ । अन्य उमेर पुगेका र छेवर गरेको बालबालिका मृत्यू भएमा भने अन्य बूढाबूढी सरह नै काजक्रिया गरिन्छ । बाबुआमाको मृत्यू भएमा छोराछोरीले र छोराछोरी अविवाहित भएमा बाबुआमा अथवा दाजुभाइले जुठो वार्दछन् । स्वास्नी मानिस मरेमा लोग्ने र छोराछोरीले, लोग्ने मानिस मरेमा अंशको हकदार र बाबुआमा, स्वास्नी, छोराछोरी तथा दाजुभाइले जुठो वार्दछन् । तामाङ्ग जातिहरु धेरै तरिकाले जुठो

बारेको देखिन्छ । सामान्यतया आमा मर्दा बरखी नगरेसम्म दूध नखाने र बाबु मर्दा बरखी नगरेसम्म मासु नखाने गरेको पाइन्छ । लोग्ने मानिसले बाबुआमा मर्दा बरखी नगरेसम्म एकसरो सेतो कपडा लगाउने चलन पनि छ । आइमाइ मानिसले भने श्रीमान मर्दा सेतो कपडा लगाउने चलन पनि छ । तर मेरो अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्ग महिलाहरु श्रीमानको मृत्यूपरान्त पनि पहिलेकै कपडा र गरगहना लगाएको देखिन्छ । यहाँ अरु जातका महिलाले भै सेतो कपडा लगाउँने र पोते, तिलहरी, रातो कपडा नलगाउने वा टीका र चुरा पनि नलगाएको पाइएन ।

घेवा सामान्यतया यस जातिमा निम्न प्रकारका छन् ।

(१) सो घेवा :- निःसन्तान स्त्री वा पुरुषले आफ्नो जीवनकालमै गर्ने घेवालाई सो घेवा भनिन्छ । यसमा घेवाम गरिने सम्पूर्ण प्रक्रिया गरिए तापनि मृतकको नाम पोल्ने काम चाहि गरिदैन ।

(२) निडपा घेवा :- यस घेवा बिहानदेखि शुरु भएर साँभसम्म सकिन्छ । लामाहरुले मृतकको मुक्तिको लागि पुस्तकहरु पढ्ने काम एक बिहानमै सिध्याउछन् ।

(३) घेवा

(क) एकराते घेवा :- लामा पुरोहितले मृतकको मुक्तिको लागि एक रात पुस्तक पढ्ने घेवालाई एकराते घेवा भनिन्छ । यो घेवा बिहान थालेर भोलिपल्ट बिहान सकिन्छ ।

(ख) एक रात २ दिने घेवा :- लामा पुरोहितले मृतकको मुक्तिको लागि एक दिन आधा पढ्ने काम गर्दछन् ।

(ग) २ रात २ दिन घेवा :- यसमा मृतकको नाममा मादी बाल्ने गरिन्छ । मृतकको आत्मलाई प्रेत हुनबाट बचाउँन अनिवार्य रुपमा (फोवा) कार्य गरिन्छ ।

(घ) सात दिने घेवा :- यो सबैभन्दा ठूलो घेवा हो । यस बेला ध्यूको रंगीचङ्गी म्हारमेन्दो स्योस्यो (टटेलाको फूल) सात रंग बनाएर गर्दछ । यसमा लाख, मुकुण्डो हुन्छ । तुङमुङसे गर्ने भन्दछ यो राती हुन्छ । केटा मानिस मरेको छ भने केटा मानिसको कपडाले मरेको मानिस बनाएर घोडामा चढाएर राख्दछ । यस बेला लामालाई भूत चढेको हुन्छ । ज्वाँइहरुले लामालाई जिस्काएपछि लामाले तरवारले जिस्काउनेलाई काट्न लखेट्छ । तर ज्वाँइहरु छलेर भाग्दछ । त्यसपछि कपडा फरेर ज्वाँइहरु आ-आफ्नो ठाउँमा बस्दछ । यसरी लामालाई ज्वाँइहरुले जिस्काएर भागदौड गरेमा मृतकको आत्म खुशी हुन्छ भन्ने विश्वास गरिन्छ । चेलीबेटीहरुले मृतकको नाममा भात राख्दछन् भने ज्वाँइहरु दिउँसो पनि लामाहरुसँग रातीको भै खेल खेल्दछन् ।

घेवा गर्दा प्रशस्त खर्च हुने हुँदा आर्थिक क्षमतालाई ध्यानमा राखेर माथिका उल्लेखित घेवा मध्ये कुनै पनि प्रकारको घेवा गर्न सक्दछन् । घेवालाई समय फरक पारी आर्थिक अनुकूलता मिलाई गर्ने पनि चलन छ । ४९ दिनको दिनमा पूर्ण ठूलो घेवा (साप्ला घेवा) गरिन्छ । घेवा नगरेसम्म मृतकको मृत्यू भएको मानिदैन । घेवा समाप्त भएपछि लामालाई खानपिन गराएर घरवालाले सगुन राखी खादा पहिरी दिएर दक्षिणा दिने गर्दछन् । मृतकले मरेपछि पनि स्वर्गमा समानहरु प्रयोग गर्न पाइन्छ भन्ने विश्वासमा लामालाई विभिन्न किसिमका सामानहरु दान दिने पनि गरिन्छ । विदा गर्दा घरवालाले अवीर लगाएर मनोरञ्जनपूर्वक गर्दछन् । लामाहरु विदावारी भएपछि मृतकका लता कपडा र अन्य सरसामाग्रीहरु विवाहिता छोरीचेलीहरुलाई पनि बाँडेर दिने चलन छ ।

८.२.४ चाडपर्व

लहो छार (नयाँ वर्ष)

लहो भनेको वर्ष र छार भनेको नयाँ हो । उत्तरी भेगका तामाङ्गहरु लहो छार धुमधामसँग मनाउँने गर्दछन् । दक्षिण भेगतिर बस्ने तामाङ्गहरुले यसलाई उमेर गन्ने अर्थमा मात्र लिन्छन् । आजभोलि जातिय संगठन तामाङ्ग घेदुङको सक्रियता र आन्धानमा देशभरका तामाङ्ग जातिले यो चाडका रुपमा मनाउन थालेका छन् । यो पौष शुक्ल पक्षमा र माघे संक्रान्ति हाराहारीमा पर्दछ । यो चाड ३-१५ दिनसम्म मनाइन्छ । विशेष गरेर घरहरु सजाइन्छ । लहो छारको पहिलो दिन विहान सबेरै उठेर चोखो पानी ल्याएर पानी, धूप, नैवेद्य लामा धर्म अनुसार बुद्ध र पद्ममा चढाइन्छ । घरको आँगनमा धार्मिक भण्डा फराउँछन् । भण्डा उठाउनेलाई स्यालगर दिएर ल्हासो तीन पटक भनेर पोड राख्दछन् । त्यस स्यालगरलाई छ्योत गरी प्रसादको रुपमा सबैले ग्रहण गर्दछन् । ठूलाले टीका लगाई आशीर्वाद लिने र मीठा मीठा भोजन गर्ने गर्दछ । लहोछारमा तामाङ्ग महिला र पुरुषले आफ्नो जातीय पोशक पनि लगाउँछन् । लहो छारमा ख्याप्से, बाबर, रक्सी, मासु खाने गर्दछन् भने मान्यजनका जाँदा सगुन लिएर जाने गर्दछन् । तिथीले लहो छार परेको दिन सामुहिक रुपमा समारोहमा तामाङ्गहरु नाचगान गरी मनाउँछन् । धर्जु (भण्डा) गाडिन्छ र 'व्ह ग्याल्लो बुद फामा' तीन पटक भनेर चम्पाको पीठो आकाशतिर छरेर बडा उमंगकोसाथ मनाउँछन् । तामाङ्गहरुको लहो (वर्ष) गणना जनावरको नामबाट गरिन्छ । यो पुरानो मंगोल चिनियाँ परम्परा नै हो । तिब्बतमा भने यो परम्परालाई राजकीकरण गरेको पाइन्छ भने तामाङ्गहरुको भने त्यस्तो क्यालेण्डर पनि छैन । यो जातिको लागि यो एउटा सांस्कृतिक

चाड मात्र हो । तर यस अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्गहरु ल्हो छार मनाउँदैनन । हिजोआज कोही कोहीले काठमाण्डौं नजिक भएकोले यो चाड मनाउँन यहाँ आएर सामुहिक रुपमा मनाउँने गरेको पाइन्छ ।

माघे सङ्क्रान्ति

तामाङ्ग जाति माघे संक्रान्ति चाड पनि मनाउँछन् । यस दिन बिहान सबेरै उठेर नुहाई धुवाई गरी ध्याङ गुम्बा भएको ठाउँमा गएर मनाउँछन् । नभएको ठाउँमा छेकाडमा बत्ति बालेर आफूभन्दा ठूलाबाट आशीर्वाद लिने गर्दछन् । यो चाडमा चेलीबेटी डाकेर खुवाउने चलन छ । यो चाडको मुख्य खाना फापरको फुलौरा, तरुल, माछा, मासु र रक्सी आदि हुन । पहिले पहिले तामाङ्गहरुले यस दिन १२ ल्हो १२ वटै जनावरका आकृति मुर्ति बनाएर सेलाउने पनि गर्थे ।

चैते दशैं

चैते दशैं पनि तामाङ्गहरु मनाउँने गर्दछन् । खास गरी यो चाड हिन्दूधर्मबाट प्रभावित भएकोले मनाउँने गर्दछन् । यो दिन ज्वाँड र चेलीबेटीहरुलाई बोलाएर खुवाउने चलन छ । तर यस दिन टीका भने लगाइन्न ।

वैशाख पूर्णै

वैशाख पूर्णिमा बुद्ध जयन्ती परेको हुँदा लामाहरु बुद्ध पूजा (साङगोला छो) गर्दछन् भने लाक्तावाहरु सिमेभुमेको पूजा पनि गर्दछन् । यस चतुराले गा.वि.स.का मानिसहरु भने देवीघाटमा पूजा लाने चलन छ ।

फौला ल्हासु भा (कुलदेवता पूजा)

तामाङ्गहरु जेठ, फागुन, मंसिरमा कूलदेवता पूजा गर्दछन् । यो पूजा एकल वा सामुहिक दुबै हुन सक्छ । यो पूजा तामाङ्ग जातिहरुको थर अनुसार फरक फरक महिनामा फरक फरक तरिकाले हुन्छ । आ-आफ्नो घरको आ-आफ्नो लाक्तावाहरु हुन्छन् । फुम्वा राख्ने जेठ र वैशाखमा गरिन्छ । कुल देवता पूजा गर्नाले घर परिवारको ग्रहदशा जान्छ भन्ने विश्वास गरिन्छ । यो पूजा गर्न कोदाको तोर्मा र भेडाको भुत्ला चाहिन्छ । लाक्तावाले भने अनुसार १ पाथी जाँड पहिले नै पकाएको हुन्छ । त्यसलाई

कसैले चलाउनु हुँदैन । पूजा वैशाख पुर्णदेखि असार पूर्णसम्म गर्ने चलन छ । ढीकीमा कुटेको चामल पकाउनु पर्छ । चामल कुट्नु अघि कन्ये केटी विवाहता महिलाले मात्र ढीकी पोत्नुपर्दछ । कुल देवता पूजा गर्न बुढी बाखा र एउटा कुखुराको भाले चाहिन्छ । त्यस पछि लाक्तावाहरु बोलाएर सबै सामान जम्मा गर्नुपर्दछ । रातभरी ढ्याङ्ग्रो बजाएर पूजा गर्नुपर्छ । भोलिपल्ट “रा स्या” वनमा गएर सबै मिलेर खाने चलन छ । कोदोको ३ पाथीको पिठोको ढिडो, कुखुराको भाले र बुढी बाखा काटेर त्यस बाखाको मासुमा ४ माना टिम्बुर हालेर भोल बनाइ ज्वाँइहरुले पकाउनुपर्छ । त्यस भोलसँग कोदोको ढिडो र कुखुराको भालेको मासु प्रसादको रुपमा सबै आफन्त, छरछिमेकी, चेलीबेटी आफ्ना सबै जातहरुका सबैलाई ज्वाँइहरुले नै बाँड्नुपर्दछ । यसरी वनमा गएर बाखाको मासुको भोलसँग ढिडो प्रसादको रुपमा ग्रहण गर्नुलाई ‘रा स्या’ खानु भनिन्छ । लाक्तावाहरुले बाखाको टाउको र एक सपेटा मासु पनि घरसम्म ज्वाँइले नै पुऱ्याउनुपर्दछ । ‘रा स्या’ खाइसकेपछि ठूला ठूला पकाउने भाँडाकुँडाहरु पनि ज्वाँइहरुले नै मफ्नुपर्दछ । काम सकेपछि सासू आमालाई भाँडाकुँडा र पकाउने जिम्मेवारी ज्वाँइले सुम्पेर घर जान्छन् । दोस्रो पटक घर सबै पोतेर अरु जातलाई घरभित्र पस्न दिँदैनन् । घरभित्रका सबै सामान घर बाहिर राखिन्छ । दोस्रो विवाह गरेको महिला वा पुरुषले लाक्तावाको गुन्डी छुन पनि हुँदैन । देवतालाई चढाउने अक्षेता पनि छुन हुँदैन । कार्तिक महिनामा भूत फालेको छ भने चैत्र वैशाखमा कूलदेवता पूजा गरिन्छ । ‘रा स्या’ खानुलाई भूत फाल्नु पनि भनिन्छ । कूलदेवतालाई “माम” र “मेमे” भन्दछन् । मामलाई ७ माना र मेमेलाई ९ माना चामलको जाँड पकाएर नयाँ घ्याम्पोमा राखिन्छ । यो जाँड पकाउने चामल ढीकीमा कुटेको हुनुपर्छ । त्यस ढीकीलाई पनि एक विवाह महिलाले पोतेको हुनुपर्दछ । जाँड वेद बसेको वा महिनावारी नभएको बेलामा र एक विवाहिता महिलाले पकाउनुपर्छ । यस्तो स्थिति नभएमा घरको बूढोपाको पुरुषले पकाएर जाँड राखी पूजा नभएसम्म कुर्नु पर्छ । उक्त जाँड रस नजादैमा नयाँ घ्याम्पोमा राख्ने, जसले पकायो त्यसै व्यक्तिले टिप्ने, कसैलाई छुन नदिई कुनामा छेकेर राख्नुपर्दछ । जाँड राखेको भोलिपल्ट लाक्तावाहरु आएर जाँड चाख्छन र जान्छन् । सात दिनसम्म जाँड पकाउने मानिस घरबाहिर जथाभावि हिड्नु र अरु जातसँग बोल्नु पनि हुँदैन । सात दिनपछि देवताको पूजा गर्न लाक्तावा फेरि आउँछन् । सगुन र भात खाएपछि उनीहरुको विधिबाट कुलदेवता पूजा गरिन्छ । कुलदेवता पूजा गर्न अक्षेता, टटेलोको फूल, तितपाति, जाँड चाहिन्छ । लाक्तावाले पूजाको समान विधिवत तरिकाले राखेर सबैलाई किदन्ती सुनाउँछ । रातभरी कथा भन्ने र पूजा गर्ने कार्य गरिन्छ । रातभर ढ्याङ्ग्रो सुताएर बजाउँदै पूजा गर्छन् । ढ्याङ्ग्रो बजाउँदै जाँदा त्यसमाथि मसिनो

कनिका जस्तो 'छे' आउँछ । सेतो 'छे' आएमा राम्रो र शुभ मानिन्छ भने कालो 'छे' आएमा नराम्रो र अशुभ मानिन्छ । यसरी निस्केको 'छे' अण्डाले टिपेर घरको मुली बूढाबूढीलाई खुवाउने चलन छ । देवताको जाँड चाहि प्रसादको रुपमा लिइन्छ भने खानको लागि मकै वा कोदोको जाँड बनाएको हुन्छ । त्यसैलाई सबैले खान्छन् । कूलदेवता पूजा सकिए पनि ६ दिनसम्म बार्ने चलन छ । आफ्नो घरको सामान दिने वा लिने (पैचो) नगर्ने साथै आफ्नो जातको मानिससँग मात्र बोल्ने, यताउती नजाने जस्ता कुरा बार्नु पर्दछ । ७ दिनपछि लाव्तावाहरु आएर प्रिस्याड छि गरेर मात्र सबै कुरा फुकाइन्छ ।

गोठपूजा (गैडू पूजा)

गोठपूजा जेठ वा असार महिनामा गर्ने गरिन्छ । यस पूजाले घरमा वस्तुभाउ मरिमराउ, दुःख, अशान्ति हुँदैन भन्ने विश्वास गरिन्छ । यो दिन नुहाइधुवाई घरको मुली बूढो मानिसले पूजा गरेर कुखुराको भाले काटेर भोग दिने गर्दछन् । कसै कसैले सानो चल्लादेखि नै गैडू देवताको लागि भाकेर राख्दछन् । यसलाई "पानी पार्नु" पनि भनिन्छ । गैडू पूर्णको दिन नुवाइधुवाई गरेर चोखो भई भालेको भोग गाईको गोठमा देवता स्थपना गरेर चढाउँछ । त्यस भालेको मासु प्रसादको रुपमा सबै परिवारले ग्रहण गर्दछ ।

साउने संक्रान्ति

तामाङ्गहरु साउने संक्रान्ति पनि मनाउने गर्दछन् । यो हिन्दू धर्मको प्रभावमा मान्ने गरेको पाईन्छ । यस दिन पनि छोरी चेलीलाई बोलाउने चलन छ । मासु, रक्सी जस्ता परिकार घरमा उपलब्ध हुन्छ । गहुँको छ्वालीमा बालेर घरको उडूस, उपियाँ, सबै लैजावस भनेर टाढा टाढा फाल्ने र दोबाटोमा प्रेतआत्माको लागि काँचो र पाकेको मासु, भात, आगो-पानी सालको पातको एकसरो दुना गाँसेर दुनामा यी सामानहरु राखी मन्साउने कार्य गर्दछ । यसरी मन्साएमा घरको परिवारलाई पिँदैन भन्ने विश्वास गरिन्छ ।

नारा

सावने पूर्णोलाई हिन्दूहरु जनै पूर्णमा भन्छन् भने तामाङ्ग बोम्बोहरु गुरु पूर्णो भन्दछन् । यस बेलामा बोम्बो, पशुपति, गोसाइकुण्ड र कुम्भेश्वरको दर्शन गर्न ढ्याङ्गो वजाउँदै जान्छन् । यस बेला विशेष रोटी भिरो बनाइन्छ । पूजा सकिएपछि भिरो प्रसादका रूपमा सबैलाई बाँडिन्छ । यो प्रसाद उपस्थित कोहीलाई छुटेमा घरमै पुऱ्याइदिने गरिन्छ । यो चाड सामुहिक रूपमा सबैले भाग लिई नाचगान गरी मनाईन्छ ।

दशैं

तामाङ्गहरु दशैं पनि मनाउँछन् । हिन्दू धर्मबाट प्रभावित तामाङ्गहरुले घटस्थापनामा जमरा राख्ने पूजा गर्ने र दशमीका दिन टीका लगाउने गर्दछन् । आफन्त नातेदार मान्यजनको हातबाट टीका थाप्न आउँछन् । टीका थाप्न आउँदा एक शिशि रक्सी र सितनका रूपमा एक बोता मासु लिएर आउने चलन छ । टीका लगाएर मान्यजनले छोरीचेलीहरुलाई दक्षिणा र आशीर्वाद दिन्छन् भने बुहारी-छोरा र नातिले भने टीका लगाउने मान्यजनलाई उपहार र दक्षिणा दिने चलन पनि छ । यस्तो उपहार प्राय लुगाफाटाहरु हुन्छन् । कतै कतै तामाङ्गहरुले दशैंमा सेतो टीका थाप्दछन् । बुद्ध धर्ममा सरिक हुनेहरुले काटमार पनि गर्दैनन् । मेरो अध्ययन क्षेत्रका तामाङ्गहरु भने दशैंमा मासु र चिउराका साथ जाँड र रक्सीका साथै अन्य मीठा परिकारहरु पनि खान्छन् । रांगा र भैसीका मासु बढी मात्रमा प्रचलनमा छ । यहाँ सामुहिक रूपमा मौलोमा रांगा वा भैसी केही महिना अघिदेखि पालेर मोटाउने गरेर दशैंको अष्टमी र नवमीमा काटेर पैसा अनुसार भाग लगाई खाने चलन छ । सबै तामाङ्गहरुले रांगा र भैसीको मासु खाए पनि घरभित्र चाहिँ सबै थरले पकाएर खानु हुँदैन । थीङ्ग र ब्लोन थरहरुले रांगा र भैसीको मासु घर बाहिर मात्र पकाएर खानुहुन्छ । यी थरहरुले लसुन, छ्यापी, सिस्नु आदि पनि घरभित्र पकाउनु हुँदैन । आजभोलि जातियताको पहिचानको खोज गर्ने क्रममा विभिन्न जनजाति आन्दोलन भएको पाईन्छ । जसको कारणले हिन्दू धर्मका चाडहरु वहिष्कार गर्न थालेको पनि देखिन्छ ।

तिहार

दशैं जस्तै तिहार पनि दक्षिण र मध्य पहाडी भेगतिरका तामाङ्गहरुले मनाउँछन् । दशैं र तिहार मान्नुको कारण राणाकालीन सरकारी नीति नै हो भनी 'डेभिड हमवर्ग'ले आफ्नो पुस्तक 'अडर इन प्याराडक्स'

मा बताएका छन् । तिहारमा चेलीबेटीले दाजुभाइका घरमा आएर वा दाजुभाइ दिदीबहिनीके घरमा गएर सगुन राखी टीका लगाउने चलन छ । दिदीबहिनीहरूले सगुन दिएर टीका लगाइ दाजुभाइको दीघायूको कामना गर्दछन् । दिदीबहिनीले दाजुभाइलाई टीका लगाउन आउँदा एक भारी सेल रोटी, माछा, मासु, अण्डा र रक्सी र अन्य मीठा मीठा परिकारका साथमा विभिन्न प्रकारका भाइमसला र फलफूल लिएर आउँने चलन छ । दाजुभाइले दिदीबहिनीलाई अक्षेताको टीका लगाई दक्षिणा र लुगाफाटा दिने चलन पनि छ ।

भूमिपूजा

तामाङ्गहरू अन्नबाली भित्राउने र वीउबिजन रोप्ने बेलामा पूजा गर्दछन् । यसलाई भूमिपूजा भनिन्छ । भूमिपूजा नगरेसम्म पाकेका अन्न बाली नखाने चलन छ । त्यसैले बाली पाकेपछि जाँड बनाएर चढाउने गरिन्छ । यो पूजा कार्तिक मंसिर महिनामा गर्ने गरिन्छ । भूमिपूजा र संसारी पूजामा कुखुरा तथा बाखाका पाठापाठीको भोग दिने चलन पनि छ । यो पूजा गर्न दिनभरी लाग्छ । चैतमा गहुँ पाकेपछि पनि तामाङ्गहरू परम्परागत 'फूई ताम्बा' बोम्बोले गर्दछन् । यस पूजामा महिलाहरूले पूजा गर्ने सामान जोरजाम गर्ने, तयार पार्ने गर्ने गरिन्छ । यसरी यस जातिहरूमा सबै कार्यमा महिलाहरूको सहयोग र साथ चाहिने भएको कुरा जानकार व्यक्तिहरूको सम्पर्कमा बुझ्ने मौका पाएँ ।

८.३ तीन पुस्ताका महिलाहरूमा आएको सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा कानुनी परिवर्तन

जीवन अध्ययन नं.६ : अधिल्लो पुस्ता

माइली तामाङ्ग, ७४ वर्षकी वृद्धा ग्रामीण निराक्षर महिला हुन । उनको विवाह १४ वर्षको उमेरमा भएको थियो । माइतीमा दाजुभाइ कोही नभएकोले आफूले विवाह गरेर माइतीकै घरमा बसेको थिइन । उनको श्रीमान जुवा, तास खेल्ने र जाँडरक्सी खाने खेतबारी बेचेर भएपनि खर्च गर्नु पर्ने आदत विगेका ७० वर्ष उमेरको छ । छोरा २ वटा, छोरी २ वटामा जोठो छोराको विवाह भएपनि मानसिक स्थिति ठीक नभएकोले विवाह गरेता पनि श्रीमतीले छाडेको, कान्छो छोराबाट ६ वटा सन्तानहरू भइसकेको, जेठो छोरो काठमाण्डौंमा काम गर्दै गुजारा गरिरहेकोछ भने कान्छो छोरा छुट्टिएर बसेको बाबुआमालाई गर्दैन । कान्छी छोरी विवाह गरेर एउटा छोरी जन्माइ सकेपछि दिमाग बिगेर माइतीमा नै बसिरहेको छ । जेठी छोरीबाट बच्चा नजन्मेपछि श्रीमानले अर्की विवाह गरेर जेठीलाई घरबाट निकालिदिएकोले माइतीमा नै बसेर ज्यालादारी काम गर्दै बाबुआमा पालिरहेको छ ।

माइली आफूले दाजुभाइ नभएकोले माइतीको अंशमा बसिरहेकोले आफ्नो स्थान अरु महिलाको भन्दा माथि भएको बताउँछिन् । सबै महिलाहरूले पनि माइतीको अंश पाउनुपर्छ भन्ने मान्यता

राख्छिन । महिलाको माइतीबाट अंश पाएको छ भने श्रीमानले हेप्न सक्दैन । आफू पनि दरिलो भएर खान सकिन्छ भन्ने सोच भएको बताउछिन । उमेर धेरै भएपनि महिलाको हक र अधिकार बारे चासो राख्छिन । आफूले नपढेकोले त्यति कुरा नबुझ्ने हुँदा महिलाहरूले पनि पढनुपर्छ भन्ने विचार व्यक्त गर्छिन । आफू गरीब भएकोले छोरा छोरीहरूलाई पढाउन नसकेकोले सबै छोरा छोरीहरू अशिक्षित छन् । घरको पस्थितिले गर्दा आफूलाई बढी चिन्ताले सताइरहेकोले बोल्न पनि त्यति मन नलाग्ने आफू गरीब भएकोले धेरैले हेला गर्ने र हेपेको कुरा पनि उनले बताइन् । गरीब हुनाले घरमा सञ्चारको साधन केही नभएकोले पनि आफूले राजनीति कुरा नबुझेको भएता पनि भोट माग्न आउदा आफ्नो दुःख बुझ्नेलाई दिने कसैले भनेको ठाउँमा पनि नदिने सोच भएको कुरा व्यक्त गरिन् ।

जीवन अध्ययन नं.७ : बीचको पुस्ता

माइली (चरी) तामाङ्ग ४७ वर्षकी निराक्षर महिला हुन् । उनको विवाह १४ वर्षको उमेरमा धादिङ्ग जिल्लामा भएको थियो । लोग्ने बढमास भएकोले माइतीमा नै बसेर घर नगएपछि बाबुआमाको सल्लाहमा टाढाको नातामा मामाको छोरा पर्ने माइतीभन्दा अलि माथितिर भण्डै ४० मिनेट लाग्ने माँझगाउँ भन्ने ठाउँमा दोस्रो विवाह १९ वर्षको उमेरमा गरेर घरव्यवहार गरेको पनि बताइन् । २ वटा छोरा र ४ वटी छोरीमा २ वटीको विवाह भइसकेको छ । जेठो छोरा व्यवहार नराम्रो भएकोले गाउँघर छाडेर काठमाण्डौंमा गएर काम गरी जीविका चलाइ राखेको पनि २ वर्ष जति भइसकेको छ । श्रीमान सिकर्मी, डकर्मी काम गर्ने साथै काम नभएको वेलामा ज्यालादारी काम पनि गर्ने गरेको बताइन् । घरमा रेडियो, टि.भी. पनि नभएकाले राजनीतिक, कानुनी र अधिकारका कुराहरू आफूलाई थाहा नभएको बताउँछिन ।, खेतबारी जम्मा १३ रोपनी भएको तर उक्त जग्गामा सेप लाग्नाले अन्नबाली पनि त्यति नफल्ने हुनाले जग्गाजमिनबाट उत्पादित खाद्यन्नले परिवारलाई खान नपुग्ने स्थिति छ । आफूलाई बुद्ध धर्म मान्ने बताए पनि हिन्दु धर्मका चाडपर्वहरू पनि मनाउने यी महिला प्राय आफ्नै भाषा बोल्दछिन तर नेपाली भाषा पनि बोल्न जान्दछिन । सबैभन्दा कान्छो बच्चा छोरा छ । छोरा जन्मदा ठूलो बिरामी भएको बेला छोरीले काम गरेको घरबाट रु. २००००/- रकम मागेर उपचार गरेको कुरा बताउँछिन । उक्त रकम घर मालिकले छोरीको तलबमा काटेको बताउँछिन ।

कान्छी छोरी बाहेक ३ वटी छोरीहरू काठमाण्डौंमा घरायसी काम गरेर पढेका छन् । २ वटीको विवाह पनि भइसकेको छ । मैया आफू गरीब भएर नपढे पनि आफ्ना सन्तान पढाउनुपर्छ भन्ने मान्यता राख्ने गर्दछिन । शिक्षा मानिसको लागि अनिवार्य छ भन्ने चेतना भएको मैयाले आफ्ना ३ वटी छोरीहरू काठमाण्डौंमा घरायसी काम गर्दै पढ्नको लागि घरबाट पठाइन् । गाउँलेहरूले बढेको छोरीलाई पनि अरुको घर राख्नु हुन्छ त ? भनेर सवाल गर्दा घरमा खान नपाएर गाउँ चहाउँ नराम्रोको संगत गर्नुभन्दा अरुको घरमा एक ठाउँमा बसेर काम गर्नु नै बेस हो भन्ने उत्तर दिन्छिन । नोकर गरेर भए पनि त्यहाँ उनीहरूले २-४ अक्षर जान्छन् । काठमाण्डौंमा मानिस बिग्रन सक्छ भन्ने कुरा गर्दा उनी भन्छिन् “बिग्रने मानिस यहाँ पनि बिग्रन्छ । नबिग्रने मानिस कहीं पनि बिग्रदैन । त्यसमा पनि मालिक मालिकनी विश्वाससिलो छ । जे भए पनि मत छोरीहरूलाई काठमाण्डौं पठाएर पढ्नलेख्न जान्ने बनाएर छाड्छु भनेर पठाएकी हुँ । के गर्नु आफूले पाल्न पढाउन नसक्ने भएपछि अरुको घरमा राखेर भए पनि पढाउनै पर्थ्यो । आफूले नढेर धेरै दुःख पाएँ । कानो गोरु जस्तै भएको छु । मेरो बच्चाहरू यस्तो नहोस भनेर मैले गाउँलेहरूले भन्ने गरेको कुरालाई चुपचाप सहेको छु ।” छोरीहरू काम गर्ने

घरमा बुढाबढीहरु मात्र छ उनीहरुको स्याहार र घरको काम गरे बापत पढाई दिने गरेको छ । नपढेकोले लेखपढ सम्बन्धी केही नजानेकोले जग्गाजमिन पनि श्रीमानकै नाममा छ र श्रीमानकै नाममा भएको ठीकै हो किन भने आफू नपढेकोले आफ्नो जग्गाजमिन अरुले भुक्क्याएर खाइदिन पनि के बेर ? त्यसैले पैसा र जग्गाजमिन कागजात सबै कारोवार श्रीमानलाई नै दिने कुरा उनी बताउँछिन ।

शहरमा छोरीहरु पढ्न बसेर उनीहरुले सिकाउँदा सिकाउँदै मैयामा पनि सचेतता बढेको पाइन्छ । “शुरुमा त छोरीहरुलाई घरको समस्या टार्न नोकर गर्न पठाएँ । पछि छोरीहरु पढेर राम्रा कुराहरु सिकाउँदा सिकाउँदै उनमा यस्तो विचार विकसित हुदै गएको कुरा पनि उनले बताइन । मालिकले पढाउनुपर्छ भनेपछि आफूलाई नपढेर दुःख भएको सम्भेर छोरीलाई पढाउनु पर्ने कुरा बुझे । शुरुमा मालिकले घरको काम गरे बापत एकजनाको तलव महिनाको रु. ५०० ।- दिन्थे भने पढाउन थालेपछि महिनावारी पैसा नदिए पनि दशैं तिहार जस्ता चाडवाडमा लुगाफाटा र घरमा चाहिने नुन, तेल, मसला जस्ता चीजहरु पठाउने गर्दथ्यो ।

जीवन अध्ययन नं. ८ : नयाँ पुस्ता

ठूलीमाया तामाङ्ग, उमेर २० वर्ष (अविवाहित) ग्रामीण महिला हुन । उनी हाल घरायसी र कृषि काम गर्दै घरमा नै बस्दछन् । उनले टेस्ट पास गरेर पढाई छाडेकी छिन । उनी मातृभाषा र नेपाली भाषा दुबै राम्रोसँग बोल्छिन । इन्द्रमायामा पढ्नुपर्छ भन्ने विचार भएको तर घरको कामधन्दा गरेर पढ्दा पढाई बिग्रको कारणले पढाई छाडेको कुरा बताउने इन्द्रमाया आफू फेरि मौका पाए पढ्ने इच्छा बताउँछिन । आफू प्रेम विवाह गर्ने चाहना भएकी इन्द्रमाया हरेक केटाकेटीले आफ्ना चाहना अनुसार विवाह गर्न पाउनुपर्छ भन्ने मान्यता राख्छिन । आफ्नो जीवनसाथी आफूलाई बुझ्ने, समझदारीमा हिड्ने हुनुपर्छ । बुबा अशक्त(कुष्ठरोग) भएकोले घरको सानातिना काम बाहेक केही पनि गर्न सक्तैनन । केटी मानिसले पनि सीपमूलक काम सिकेर आफ्नो पौरख खानुपर्छ । महिलाले आफ्नै पौरख खानसके कसैबाट पनि हेपिनु नपर्ने र परिवारमा बोझ पनि नहुने हुनाले उपयुक्त तालिमहरु पाएमा लिइ राख्नुपर्छ भन्ने मान्यता राख्ने यी महिला अन्य अशिक्षित महिलाभन्दा भिन्दै विचार भएको पाइन्छ । जेठी छोरी आफू भएकोले भाइ र बहिनीलाई पढ्न पठाएर आफू चाहि घरको काम गर्न परेकोले पढाई रोक्नु परेको बताइन । परिवार जम्मा ५ जनाको छ । आमा र इन्द्रमाया घर र कृषिको काम गर्दछ भने इन्द्रमायाको बाबु घरको सामान्य काम बाहेक केही गर्न सक्तैन । हातगोडामा कुष्ठ रोग लागेपछि उपचार स्वरुप दवाई खाइरहेकोछ । २ जना भाइ र बहिनी ९ कक्षामा र भाइ ५ कक्षामा पढ्दैछ । घरमा विजुली र रेडियोको सुविधा भएकोले समचार गीत र अन्य जानकारीमुलक कार्यक्रमहरु सुन्ने गरेकोले इन्द्रमायामा यति सचेतता आएको पनि बताइन । जग्गा जमिनमा ४ रोपनी बारी र १४ रोपनी खेत भएको उक्त जग्गाजमिन बाबु र आमा दुबैको नाममा भएको कुरा पनि बताइन । जग्गाजमिनबाट उत्पादित खाद्यन्नले वर्षभरी नै परिवारलाई खान पुग्दछ भन्ने इन्द्रमाया घरमा पालेको पशुमा १ बाख्रा २ वटा कुखुरा आफ्नो पेवा भएको बताउँछिन । हालसम्म कुनै गरगहना आफूसँग नभएको बताउने इन्द्रमाया घरको आम्दानी आमाले नै राख्ने कुरा पनि बताइन । साथै महिलाको हैसियत बढाउन पैत्रिक सम्पतिमा महिलाको पनि अधिकार हुनुपर्छ । “छोरीले अंश पाइने भन्ने जुन कुरा सुनिरहेकी छु । यो कुरा मलाई एकदम राम्रो लाग्यो । छोरा र छोरी एउटै बाबुका सन्तान भएर पनि जुन नदिएर छुट्याउने परम्परा थियो, यो मलाई साँच्चै नराम्रो लाग्थ्यो । अब वल्ल महिला र पुरुषले

समान अधिकार पाउने अवसर पाउने भयो” भनी खुशी भइन । महिलाको नाममा जग्गाजमिन भएमा महिलालाई पुरुषले हेप्न सक्तैन भन्ने विचार पनि राख्छन ।

विरामी पर्दा भारफूक डाक्टर दुबै देखाउने गर्छिन । सञ्चार माध्यम र पढेकोले परिवार नियोजन बारे आफूले थाहा भएको र भविष्यमा २ वटा छोरी मात्र भए पनि छोरा नपर्खने विचार भएकी इन्द्रमाया सिकर्मी काम चाहिं बलको काम पर्ने हुने हुनाले गाउँघरतिर पनि महिलाले यस्तो काम गर्ने गरेको नदेखेको र महिलाले यस्तो काम कहि कहि अलि अलि मात्र गर्दछ । त्यसैले यो काम केटाले मात्र गर्दछ, भन्ने विचार पोख्छिन भने अन्य बालबच्चा हेर्ने, घाँस दाउरा गर्ने, भात पकाउने, डाक्टर, शिक्षक, डाइभर, कपडा सिलाउने जस्ता काम केटाकेटी दुबैले गर्न सक्छन् भनी विचार राख्छिन ।

दैनिक १२ घण्टा जति काम गर्ने इन्द्रमायालाई भाइ र बहिनीले पनि घरको काममा बिहान बेलुका सघाउने गर्छन । यहाँ ज्याला पुरुषको तुलनामा महिलाको आधा दिने चलन छ । यस्तो किन भएको होला भन्ने सवाल गर्दा चलन नै त्यस्तै भएर होला भन्ने उत्तर दिन्छन् । आजसम्म कुनै कार्यलय नगएको, नागरिकता गाउँमा टोली आएपछि बनाएको बताउने इन्द्रमाय काठमाण्डौं एकलै गएर आउनु सक्ने, दैनिक रेडियो सुन्ने गर्छिन । आफ्ने समाजमा केटी पनि केटा सरह नै स्वतन्त्र हिडडूल गर्न पाउने कुरा बताउने इन्द्रमाया महिलाले पनि स्वतन्त्र हिडडूल गर्न पाउनुपर्छ भन्ने विचार गर्छिन । पुरुष र महिला दुबैलाई बराबर आदर गर्नुपर्छ भन्ने मान्यता राख्छिन । घरखर्च गर्दा सबैको सल्लाह अनुसार गर्ने कुरा पनि बताइन । बौद्ध धर्म मान्ने बताउने इन्द्रमाया तामाङ्ग समाजमा पनि छोरा र छोरी जन्मदा गर्ने रित फरक भएको बताउँछिन ।

महिलाको आफ्नो दाइजो वा पेवा आफूखशी गर्न पाउने कानुनी अधिकार बारे त्यति थाहा नभएको किनभने आफू अविवाहित भएकोले यस सम्बन्धी थाहा नभएको तर रेडियोमा छोरीले पनि छोरा सरह अंश पाउँछ, र श्रीमानले अर्की विवाह गरेमा श्रीमानसँग अंश लिएर बस्न पाउँछ, साथै पारपाचुके गरेको महिलाले पनि श्रीमानसँग अंश लिन पाउने आदि कुराहरु सबै रेडियोमा सुनेकी बताउँछिन । साथै श्रीमान र श्रीमतीको सल्लाह अनुसार नचाहेको गर्भ फ्याक्न पाउने कानुनी अधिकार पनि थाहा भएको कुरा पनि बताइन ।

आफूले पढाइ छोडेकोमा दुःख मान्ने इन्द्रमाया फेरि पढ्न पाए पढ्ने विचार राख्छिन । पढाइ जस्तो ठूलो संसारमा केही छैन । पढेर नै कति महिलाहरु ठूला मानिस बन्न सकेके कुरा पनि बताइन । आफू शिक्षित भएमा भविष्यका आफ्ना सन्तानहरु पनि शिक्षित बनाउन सक्ने कुरा हामी समक्ष व्यक्त गरिन । घरमा आमा शिक्षित भएमा परिवारमा समस्या नआउने र छोरा छोरीलाई समान व्यवहार र समान शिक्षाको अवसर पाउने कुरा पनि बताइन । आजको समयमा जुनसुकै काम गर्न पनि पढाइ चाहिने पढाइ नभएको मानिसले सानोतिनो थोरै पैसा आउने मजदुरी काम मात्र पाउने हुँदा पढाइलाई आफूले ठूलो ठानेको छु भन्ने बताउन इन्द्रमाया वाध्यताले आफूले पढाइ छाड्न परेकोमा अति नै दुःख लागेको पनि बताइन ।

यसरी तीन पुस्ताका महिलाहरुमा देखिएको आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक र कानुनी परिवर्तनका आधारमा यस ठाउँका तामाङ्ग महिलाहरुमा बिस्तारै परिवर्तन आएको बुझिन्छ ।

अध्याय ९

सारांश र निष्कर्ष

९.१ सारांश

यस अध्ययनको लागि नुवाकोट जिल्लाको चतुराले गा.वि.स., मांभगाउँ वडा नं. ६ लाई छानिएको थियो । तामाङ्ग समाजको सामाजिक संरचनामा एक पुस्ताका महिला र अर्को पुस्ताका महिला बीच देखिएका परिवर्तन तथा महिला पुरुषहरूबीचका सम्बन्ध (Gender relations) लाई यस अध्ययनमा समावेश गर्न खोजिएको छ । यस अध्ययनको मुख्य उद्देश्य नुवाकोट जिल्ला चतुराले गा.वि.स.मा रहेका तामाङ्ग समुदायको सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा लैङ्गिक सम्बन्धको अध्ययन गर्नु रहेकोछ । सामाजिक तथा आर्थिक रूपमा यस समुदाय पिछ्छिडिएको देखिन्छ भने महिलाहरूको अवस्था भने अझ पिछ्छिडिएको स्थिति रहेको छ ।

यस अध्ययनमा जम्मा ६० घरधुरी समावेश गरिएको थियो । प्राय गरेर संयुक्त परिवार तामाङ्ग परिवार प्रणालीको विशेषता हो । यस गाउँमा यसलाई कायमै गरेको पाइन्छ । तर बिस्तारै एकल परिवारमा परिणत हुने क्रम भने बढिरहेको छ । उत्तरदाताहरूमा १३-१५ वर्षभित्रमा विवाह गर्ने नयाँ पुस्ता छन भने १६-१९ वर्षमा विवाह गर्नेमा ३०-४९ वर्षभित्रका बढी प्रतिशत छ । जसमा उमेर समूह अनुसार भिन्दा भिन्दै प्रतिशत रहेको छ । कम उमेरमा विवाह गर्ने महिलाहरू नयाँ पुस्तामा बढी देखिन्छ । यहाँ निराक्षर जनसंख्या २४.८ प्रतिशत छन । जसमा पुरुष निराक्षर १४.४ प्रतिशत र महिला निराक्षर ३५.१ प्रतिशत रहेको छ । तीन पुस्ता महिलामा शैक्षिक स्तर तुलना गर्दा धेरै फरक देखिएको छ । २९ वर्षभन्दा मुनिका महिला निराक्षर ५.६ प्रतिशत, ३०-४९ वर्षभित्रका ५४.५ प्रतिशत र ५० वर्षभन्दा माथिका महिला निराक्षर ८३.३ प्रतिशत रहेको छ । यहाँ ६-१४ वर्षसम्मका सम्पूर्ण बालबालिकाहरू विद्यालय जान्छन् । १५-१९ वर्ष समूहका केटाकेटीहरूमा केटा ६५.४ प्रतिशत र केटीहरू ७८.९ प्रतिशत विद्यालय जान्छन् भने २०-२४ वर्ष उमेर समूहका केटाकेटीहरूमा केटा २५.० प्रतिशत र केटी २१.९ प्रतिशत मात्र विद्यालय जाने गरेको पाइएको छ । कम उमेर समूहमा विद्यालय जाने बालबालिकाहरूमा केटीहरूको प्रतिशत बढी छ भने उमेर समूह बढ्दै जाने क्रममा विद्यालय जाने केटीहरूको प्रतिशत घट्दै गएको पाइएको छ । यस गाउँमा सरकारी विद्यालय मात्र भएकाले बालबालिकाहरू ९५.८ प्रतिशत सरकारीमा नै जान्छन् भने अन्य ४.२ प्रतिशत काठमाण्डौं नजिक भएकोले अङ्ग्रेजी स्कूलमा पढ्छन् । त्यसमा पनि केटा र केटीको अङ्ग्रेजी स्कूल जानेको प्रतिशत खाशै फरक छैन । यहाँका मानिस विरामी

पर्दा उपचार गर्न २५.० प्रतिशत हेल्थपोष्ट जाने बताए भने ७५.० प्रतिशत महिलाहरु भारफूक र हेल्थपोष्ट दुबै प्रयोग गर्ने पाइएको छ । परिवार नियोजन बारे सबैलाई थाहा भएको भए पनि परिवार नियोजनका साधन प्रयोग गर्ने ४६.३ प्रतिशत मात्र रहेको देखिन्छ । यहाँ अस्थायी साधनमा सिंगिनी (Depo), नरप्लान्ट र पिल्स चक्की प्रयोग गरेको पाइएको छ । ३०-४९ वर्षभित्रका उमेर समूहले बढी मात्रमा परिवार नियोजनका अस्थायी प्रयोग गरेको पाइएको छ । स्थायीमा ५० वर्षभन्दा माथिका पुरुषहरुले सतप्रतिशतले पुरुषबन्ध्याकरण गरेको पाइएको छ । २९ वर्षभन्दामुनिका उमेर समूहका पुरुषहरुले भने ५०.० प्रतिशतले मात्र पुरुष बन्ध्याकरण गरेको पाइएको छ । यस उमेर समूहका महिलाहरुले भने २५.० मात्र महिला बन्ध्याकरण गरेको पाइएको छ । ४-५ सन्तान जन्मिएपछि मात्र परिवार नियोजन गर्ने हुनाले जनसंख्या वृद्धिमा भने कमि आएको देखिन्छ । यहाँ अस्थायी साधन प्राय महिलाहरुले प्रयोग गरिरहेका छन् भने पुरुषहरुले स्थायी बन्ध्याकरण नै बढी गरेको देखिन्छ । यस गाउँमा चुरोट पिउने महिलाको संख्या धेरै नै छ । चुरोट खाने महिला ५८.३ प्रतिशत छ । त्यसमा पनि ३०-४९ वर्षभित्रका उमेर समूहले ७५ प्रतिशतले नै पिउँछन् । यहाँ गाउँमै टोली आएर नागरिकता प्रदान गरेको हुनाले उमेर पुगेका सबैको नागरिकता बनिसकेको छ । काठमाण्डौं नजिक भएकोले एकलै आवत जावत गर्न सक्नेहरु ६८.३ प्रतिशत छन् । त्यसमा पनि पुराना पुस्ताका महिलाभन्दा नयाँ पुस्ताका महिला बढी सक्षम छन् । भोट दिने कार्यमा स्वनिर्णय गर्न सक्ने क्षमता भएको महिला ७५ प्रतिशत छ भने त्यसमा पनि उमेर अनुसार फरक फरक स्थिति देखिएको छ । २९ वर्षभन्दामुनिका उमेर ८५.७ प्रतिशतले स्वयं निर्णय लिन सक्छन् । ३०-४९ वर्ष उमेर समूहका ७९.२ प्रतिशत र ५० वर्षभन्दा माथिका ५३.३ प्रतिशतले भोट दिने कुरामा स्वयं निर्णय लिन सक्छन् । सञ्चारका क्षेत्रमा यहाँका महिलाको धेरै नै पहुँच भएको मान्न सकिन्छ । दैनिक रेडियो सुन्ने र टि.भि. हेर्ने ४५ प्रतिशत, कहिलेकाहि भन्नेहरुमा ५० प्रतिशत छ भने ५ प्रतिशतले मात्र यी साधनको अप्रयाप्तले एकदमै कम सुन्ने गरेको पाइएको छ । जसमा पनि उत्तरदाताहरुमध्ये २९ वर्षभन्दामुनिका ७९.४ प्रतिशत, ३०-४९ वर्षभित्रका उमेर समूहले ४९.७ प्रतिशत र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहमा १३.३ प्रतिशत रहेको छ । यसरी उमेर समूह अनुसार सञ्चार सेवा प्रयोग गर्नेको प्रतिशत पनि धेरै नै फरक रहेको पाइन्छ । छोरा पर्खनु पर्छ भन्ने मत राख्ने ४८.३ प्रतिशत रहेकोमा पुराना पुस्ताका महिलाहरुले छोरा पर्खनुपर्छ भन्ने मत राख्ने ८० प्रतिशत छन् भने नयाँ पुस्ताका महिलाहरुले ७९.४ प्रतिशतले छोरा पर्खनु पर्दैन भनेर आफ्ना मत व्यक्त गरे । यसरी मत व्यक्त गर्नेहरुमा उमेर अनुसार फरक फरक देखिएकोले नयाँ

पुस्ताका महिलाहरुमा छोराछोरीप्रतिको दृष्टिकोण धेरै नै परिवर्तन आएको छ भन्ने बुझिन्छ । यस गाउँमा महिलालाई स्वतन्त्र हिड्न दिन्छ, भन्ने महिलाहरु आधा छन् । महिलालाई स्वतन्त्र हिड्न नदिनाका कारणमा परिवारको बन्देज ३०.० प्रतिशत, समाजको डर ५६.७ प्रतिशत र चलिआएको आएको चलनमा १३.३ प्रतिशत रहेको छ । महिलास्वतन्त्र हिड्न पाउँनुपर्छ भन्ने कुरामा धेरै महिलाको सहमत भए पनि समाजको डरको कारणले यसमा रोकवट आएको छ । महिला पुरुष दुबैलाई बराबर आदर तथा सम्मान गर्ने भन्नेहरुमा ७५ प्रतिशत, महिलालाई मात्र भन्ने २० प्रतिशत र पुरुषलाई मात्र भन्ने ५ प्रतिशत रहेको छ ।

घर व्यवहार निर्णयमा महिलाको विचार लिने गरेको छ भन्ने ८० प्रतिशत रहेको छ । जसमा सबैभन्दा बढी प्रतिशत ५० वर्षभन्दामाथि महिलाको रहेको छ । किनबेच चलमा २९ वर्षभन्दामुनिका उमेर समूह र ५० वर्षभन्दा माथिका उमेर समूहको प्रतिशत बढी छ भने अचलमा किनबेच दुबैमा ३०-४९ वर्षभित्रका उमेर समूह पर्दछन् । तर ऋण सापटमा भने श्रीमानले श्रीमतीसँग सतप्रतिशतले सोध्ने गरेको पाइएको छ । नयाँ पुस्तामा कानुनी ज्ञान, महिला अधिकार, शिक्षा र स्वास्थ्य बारे सचेतता पाइएको छ भने पुराना पुस्ताका महिलामा भने एकदम कम पाइएको छ । यस समाजमा महिलाहरुको सञ्चार क्षेत्रमा पहुँच उच्च नै देखिन्छ । त्यसमा पनि नयाँ पुस्ताका महिलामहरुमा शिक्षा र सञ्चारले गर्दा उमेर अनुसार स्थिति फरक देखिन्छ । जसले गर्दा नयाँ पुस्ताहरुमा महिला अधिकार, राजनीतिक चेतना र कानुनी सचेतता आत्मविश्वास जस्ता कुराहरु पुराना पुस्ताको तुलनामा धेरै नै रहेको देखिन्छ । आफ्नो दाइजो आफूखुशी खर्च गर्न पाउँने कानुनी अधिकार बारे थाहा भएको महिला २९.७ प्रतिशत छ भने अलिअलि थाहा भएको ४५.० प्रतिशत रहेको छ भने २९ वर्षभन्दामुनिका उमेर समूह सबभन्दा बढी रहेको पाइएको छ । त्यस्तै श्रीमानले अर्की विवाह गरेमा श्रीमानको अंश लिन पाउँने कानुनी अधिकार बारे सवाल गर्दा थाहा छ भन्ने ५० प्रतिशत रहेको, नचाहेको गर्भ श्रीमान र श्रीमतीको सहमतमा फ्याक्न पाउँने कानुनी अधिकार बारे थाहा भएको ६३.३ प्रतिशत र अन्यलाई अलिअलि थाहा भएकोवाट यहाँका महिलाहरु महिला अधिकार सम्बन्धी धेरैलाई ज्ञान रहेको कुरा स्पष्ट हुन्छ । त्यस्तै श्रीमानसँग पारपाचुके गरेमा पनि महिलाले श्रीमानको अंश पाउँने अधिकार बारे सवाल गर्दा थाहा छ भन्ने महिला जम्मा १० प्रतिशत मात्र भएको अन्य अलिअलि थाहा भएको र थाहा नभएको महिलाको प्रतिशत बढी हुनाले यस अधिकार सम्बन्धी अबै पनि धेरै महिलाहरुलाई ज्ञान रहेनछ भन्ने स्पष्ट हुन्छ ।

त्यसमा पनि उमेर समूह अनुसार फरक फरक सचेतता पाइएको छ । सबभन्दा सचेतता नयाँ पुस्तामा नै देखिएको छ ।

सांस्कृतिक अवस्था अन्तर्गत रहनसहन, घरको बनाबट, भेषभूषा, खानपान, सरसफाई रहेका छन् । त्यस्तै संस्कारहरूमा जन्म संस्कार, कर्म संस्कार (भात खुवाई, छेवर, गुन्यूचोली, विवाह) र मृत्यू संस्कार (दाहा संस्कार र घेवा) रहेका छन् । चाडपर्वहरूमा ल्हो छार, माघे संक्रान्ति, चैते दशैं, वैशाख पूर्ण, कुलदेवता पूजा, गैडू पूजा, साउने संक्रान्ति, दशैं, तिहार, भूमि पूजा आदि यहाँका मुख्य मुख्य चाडपर्वहरू हुन । यी चाडपर्वहरू आफ्नै किसिमले मनाउँछन् ।

यहाँका मानिसहरू बढी कृषि पेशामा संलग्न छन् । त्यसमा पनि महिलाहरूको कृषिमा बढी सहभागिता पाइन्छ । कृषिमा ५५ प्रतिशत, गैर कृषिमा १६.४ प्रतिशत, विद्यार्थीमा २७.७ प्रतिशत र अशक्तमा ०.९ प्रतिशत रहेको छ । गैर कृषिमा सिकर्मी, नीजि जागिर, व्यापार, विदेश गएको, सिलाई, ड्राइभर आदि रहेको छ । जसमा पनि नीजि जागिरमा ६.६ प्रतिशत, ड्राइभर ४.४ प्रतिशत र विदेश गएको २.८ प्रतिशत रहेकोबाट स्पष्ट हुन्छ कि यहाँका पुरुष मानिसहरू कृषि बाहेक अन्य पेशामा पनि आकर्षण भएको देखिन्छ । महिलाको गरगहनाको सवाल गर्दा यहाँ ७८ प्रतिशत महिलाहरूसँग गरगहना भएको पाइएकोछ । जसमा नयाँ पुस्ताका महिलाको तुलनामा पुराना पुस्ताका महिलाको गरगहना बढी देखिएको छ । गरगहना रु.६००००/- देखि रु.२०००००/- सम्म गरगहना हुने ४० प्रतिशत छन् भने रु. ४१००००/- देखि रु.५०००००/- सम्मको गरगहना हुन महिला ६.४ प्रतिशत मात्र रहेको छ । पेवापात महिलाहरूको विशेष गरी पशुधनमा बाखाखसी, कुखुरा र भैसी देखिएकोबाट यो स्पष्ट हुन्छ कि महिलाहरू प्राय धेरै रकम आउने र सजिलै पाल्न सक्ने जस्ता पशुधन पाल्दरहेछन् । यहाँ ६० घरधुरीमा जम्मा ४ जना महिलाले मात्र बैंक खाता खोलेको पाइएको छ । साथै ६० जना उत्तरदाता महिलाहरूमा जम्मा १० जना महिला मात्र आम्दानीमुलक कार्यमा संलग्नता पाइएको छ । तर परिवारको आम्दानी भने महिलाहरूले ५१.७ प्रतिशत र पुरुषले ४०.० प्रतिशत र दुबैले ८.३ प्रतिशतले राख्ने गरेको पाइएको छ । यसरी यस जातिमा परिवारको आम्दानी भने पुरुषको तुलनामा महिलाहरूले बढी राख्ने गरेकोबाट यो थाहा हुन्छ कि महिलाहरूलाई पुरुषहरूले बढी नै विश्वास गरेको पाइन्छ । यहाँ जग्गाजमिन पुरुषको तुलनामा महिलाहरूको नाममा एकदम न्यून देखिन्छ । अपुताली परेर र पुरुष विदेश जाने क्रम बढ्दै जाँदा पैसा कमाएर श्रीमानले आफ्नो श्रीमतीको नाममा जग्गाजमिन राख्न थालेकोले महिलाहरूको नाममा पनि जमिन देख्न थालिएको छ । यहाँ ८० प्रतिशत जमिन पुरुषको नाममा छ भने जम्मा ११.७

प्रतिशत महिलाका नाममा र दुबैमा ८.३ प्रतिशत रहेको छ । यहाँ वर्षभरी खान नपुग्ने परिवारले विभिन्न सहायक पेशा गरेर जीवन निर्वाह गरेको पाइन्छ । यहाँ महिला पुरुषको कामको ज्याला समान छ कि छैन भन्ने सवाल गर्दा कुल उत्तरदातामध्ये सतप्रतिशतले समान ज्याला नपाउने कुरा बताए । समान ज्याला नपाउनुको कारण चलन नै पहिले देखि त्यस्तै चलेर होला भन्ने ६६.७ प्रतिशत रहेको छ भने पुरुषले जति काम गर्न नसकेर भन्नेहरु २८.३ प्रतिशत रहेको छ । महिलाहरुको अवमूल्यन गरेर भन्ने मत सबैभन्दा थोरै रहेको छ । त्यसमा पनि भिन्दा भिन्दै उमेर समूह अनुसार भिन्दा भिन्दै मत रहेकोछ । चलन नै त्यस्तै चलेर होला भन्ने २९ वर्षमुनिका उमेर समूह छन भने पुरुषले जति काम गर्न नसकेर भन्नेहरुमा ३०-४९ वर्षभित्रका र ५० वर्षभन्दामाथिका उमेर समूह बढी पर्दछन् । यो समाजमा पुरुष र महिलाको कार्य विभाजन छुट्टिएको देखिन्छ । भाउजु, बुहारी, नन्द र आमाजुका कार्य समान देखिन्छ । यहाँ महिला र पुरुषको काम गर्ने समय ९.६४ घण्टा र महिलाको १०.५५ घण्टा रहेको छ । बेलुका बाहेक अन्य समयमा महिला र पुरुष बराबरी काम गर्ने हुनाले महिला र पुरुषको कामको घण्टा खाशै फरक देखिएको छैन ।

९.२ निष्कर्ष

भेषभूषा, खानपान, भाषा, शिक्षा, स्वास्थ्य, सोच, चेतना, संस्कारगत कार्यहरुमा समेत पुराना पुस्ताको तुलनामा नयाँ पुस्तामा ठूलो अन्तर आएको देखिन्छ । पुराना पुस्ताका महिलाहरु आफ्नो मातृभाषा मात्र बोल्ने र तामाङ्ग जातिका भेषभूषा, खानपान, रहनसहनमा देखिन्छन् भने शिक्षा क्षेत्रमा निरक्षरताको पकड छ । यस पुस्ताका महिलामा सरसफाई र स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान, महिला अधिकार, कानुनी सचेतता, आत्मविश्वास र नयाँ नयाँ सोच एकदम कम देखिन्छ भने नयाँ पुस्तामा भने यी सम्पूर्ण पक्षमा धेरै परिवर्तन आएको देखिन्छ ।

सञ्चारका साधनमा तेस्रो पुस्ताका महिलाहरुको पहुँच पुराना पुस्ताका महिलाको तुलनामा तीव्र पाइएको छ । जसको कारण उनीहरुमा ठूलो परिवर्तन आएको पाइन्छ । नयाँ पुस्ताहरुमा रेडियो सुन्ने, टि.भि. हेर्नेको संख्या धेरै छ भने पुराना पुस्ताका महिलाहरु यसमा कम चाख दिन्छन र उनीहरु यसबाट खाशै सिक्न पनि चाहदैनन् । बाटो, शिक्षा, सञ्चारको उपलब्धताले नयाँ पुस्ताहरुमा विस्तारै सरसफाई बढी ध्यान, आधुनिक रहनसहन, खानपान, आधुनिक गरगहना र कपडाहरुको प्रयोग गर्ने हुनाले पुराना पुस्ताका महिलाको तुलनामा बिल्कुलै अलग देखिन्छ । नयाँ पुस्ताका महिलामा तालिम लिएर आयमुलक

कार्यहरुमा सहभागिता भई स्वबलम्बी हुनुपर्छ भन्ने मान्यता रहेकोले समाजिक रुपमा संगठित हुने, विभिन्न समूहमा भाग लिने, शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकार सम्बन्धी ज्ञान लिन खोज्ने, बाहिरी मानिससँग सम्पर्क बढाउने गरेको पाइन्छ । पहिले पहिले जाँड-रक्सी तामाङ्गहरुले आफ्नो प्रयोजनको लागि प्रयोग गरिन्थ्यो भने हाल नयाँ पुस्ताका महिलाहरुले रक्सी पारेर बेचबिखन गरी आफ्नो पेवापात बनाउने र गरगहना जोड्न थालेका छन् । यस गाउँमा सडक पुगेकोले सडकछेउका घरमा सानातिना चिया तथा किराना पसल थापेर महिलाहरुले आम्दानीको स्रोत बढाउन थालेको देखिन्छ, भने काठमाण्डौं नजिक भएकोले काठमाण्डौंमा काम गर्ने, सिलाई बुनाई जस्ता सिपहरु सिक्ने, नीजि जागिर खाने गरेको पनि पाइन्छ । यसरी नयाँ पुस्ताका महिलाहरु कृषि र घरायसी पेशाबाट आयमुलक पेशातर्फ उन्मुख भएको देखिन्छ । पेशागत रुपमा तामाङ्ग पुरुषहरु शहर र विदेशमा रोजगारीको लागि जाने क्रम पनि बढेको देखिन्छ । जसले गर्दा श्रीमतीको नाममा जग्गाजमिन किन्न थालेकोले नयाँ पुस्ताका महिलाहरुको नाममा जग्गाजमिन देखिन थालिएको छ । यी कारणहरुले गर्दा अबका महिलाहरु पुरुष सरह नै सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रमा ज्ञान, पहुँच राख्न सक्छन् भन्ने संकेत देखिएको छ ।

नयाँ पुस्ताहरु प्राय सबै साक्षरता छन् भने पुराना पुस्ताका महिलाहरु प्राय सबै जसो नै निराक्षर छन् । तर हाल आएर यहाँका मानिसहरुमा बालबालिकाको शिक्षाप्रति जागरुक भएको देखिन्छ । शिक्षाका कारणले नयाँ पुस्ताहरुमा ठूलो परिवर्तन आएको देखिन्छ । पुराना पुस्ताहरुका महिला सहजातीय विवाह र मामाचेली र फुपूचेला विवाहलाई बढी जोड दिन्थे भने नयाँ पुस्ताका महिलाहरुले अन्तरजातीय विवाहलाई पनि सामान्य मान्न थालेका छन् भने मामाचेली फुपूचेला विवाहलाई नयाँ तरिकाले परिभाषित गर्न थालिएको छ । पुराना पुस्ताका महिलाहरुले बढी उमेर भएपछि आफूभन्दा कान्छो पुरुषसँग विवाह गर्ने र दोस्रो वा तेस्रो विवाह भइसकेको महिलालाई कुमार केटा पुरुषले विवाह गर्न कुनै हिचिचाहट हुँदैनथ्यो । यस किसिमको विवाहलाई सामान्य ठानिन्थ्यो भने वर्तमानमा यस किसिमको विवाहलाई त्यति राम्रो मान्दैनन र विवाह भएर घर बिग्रेको महिलालाई कुमार केटाले प्राय विवाह गर्दैनन । नयाँ पुस्ताका महिलाहरुले थोरै उमेरमा आफूभन्दा जेठोसँग विवाह गरेको देखिन्छ । यहाँ मागी विवाह नै बढी हुने गरेको पाइए तापनि नयाँ पुस्ताहरुले प्रेम विवाहलाई नै पूर्ण रुपले सर्म्थन गरेको पाइन्छ । महिनावारी, सुत्केरी र मृत्यू हुँदा बार्ने चलन यी जातिमा कम भएता पनि अन्य जातिको सरसंगतले नयाँ पुस्ताका महिलाहरुले अन्य जातिले भै बार्न थालेको पाइन्छ । तामाङ्ग जातिका संस्कारगत कार्यहरुमा बहिनी तथा छोरी ज्वाँइहरुले गरिने काम र श्रमदान कम भएको देखिन्छ ।

उनीहरूले आफ्नो सम्मान अन्य जातिको जवाँइले भैं खोज्न थालेको देखिन्छ । पुराना पुस्ताका महिलाहरूको घरायसी कामकाजमा निर्णय गर्ने क्षमता बढी थियो । यसर्थ पुराना पुस्ताका महिलाहरूको पुरुषभन्दा माथि स्थान थियो भन्न सकिन्छ भने नयाँ पुस्तामा महिला र पुरुषहरूको प्राय समान सहभागिता रहेको पाइन्छ । यसबाट के भन्न सकिन्छ भने तामाङ्ग जातिका महिलाहरूले पनि विस्तारै उच्च जातिय संस्कारहरूलाई आत्मसाथ गरेको पाइन्छ ।

हेल्थपोष्ट नजिक भएता पनि विरामी पर्दा पहिले फारफुक गरेपछि मात्र उपचारको लागि हेल्थपोष्ट जाने गर्दछन् । तर नयाँ पुस्तामा भने हेल्थपोष्ट जाने क्रम बढिरहेको देखिन्छ । भोट दिदा आफ्नो स्वविवेक प्रयोग गर्ने पुराना पुस्ताका महिलाको तुलनामा तेस्रो पुस्ताका महिलाको प्रतिशत धेरै नै भएको देखिन्छ । तर यस गाउँका महिलाहरू पुरुषको तुलनामा राजनीतिक रूपले सक्रिय र जागरुकता भएको त्यति पाइन्न । छोराछोरीलाई समान देख्ने महिलाहरू नयाँ पुस्तामा सतप्रतिशत छ । अझै पनि पुरानापुस्तामा छोराप्रतिको मोह रहेको देखिन्छ । केटाकेटीले आफ्नो रोजाईमा विवाह गर्न पाउँनुपर्छ भन्ने मान्यता सबैमा भए तापनि नयाँ पुस्तामा यसको प्रतिशत धेरै नै बढी देखिन्छ । दाइजो प्रथालाई सकारात्मक दृष्टिले हेर्नेहरूमा पुराना पुस्ताहरू छन् भने नयाँ पुस्ताले भने यसलाई नकारात्मक दृष्टिले हेरिएको पाइएको छ । पुरुषले महिलालेभन्दा गह्रो र अफ्ठ्यारो काम गर्ने हुँदा महिलाको तुलनामा उनीहरूको कामको बोझ कम देखिएको हो भन्ने मान्यता राख्ने पुराना पुस्ताहरू छन् । महिला स्वतन्त्र हिड्न पाउँनुपर्छ भन्ने मान्यता धेरैमा भए तापनि समाजको डर र घर परिवारको बन्देजको कारणले महिलाहरू पुरुष जस्तै हिड्न नसकेको स्थिति अझै रहेको देखिन्छ । परिवारको आम्दानी प्राय सबैको सरसल्लाहमा खर्च गरिएको पाइएको छ । विशेष गरी श्रीमानले श्रीमतीलाई सरसल्लाह नगरी ऋण लिने र अचल सम्पति किनबेच गरेको पाइएन । चल र अचल दुवै सम्पति किनबेचमा प्राय सबै पुरुषले महिलाको विचार लिने गरेको पाइएकोबाट यी जातिमा महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति (Decision making power of women) प्रचुर मात्रमा रहेको छ भन्न सकिन्छ ।

सन्दर्भ सूची

- नेपाल राजपत्र, (२०५८ सं.) *आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान ऐन २०५८* को दफा २ को खण्ड (क) : नेपाल राजपत्र, नेपाल सरकार ।
- विष्ट, डोर बहादुर, (२०५४ सं.) *सबै जातको फुलबारी*, काठमाण्डौ : साभा प्रकाशन ।
- तामाङ्ग, परशुराम, (२०५१ सं.) *तामाङ्ग जाति*, काठमाण्डौ : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।
- तामाङ्ग, रविन्द्र (२०५४ सं.) *तामाङ्ग रीमठीम*, काठमाण्डौ : प्रतिभा समूह ।
- नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान (२०५२ सं) *नेपाल वृहत शब्दकोष*, काठमाण्डौ : साभा प्रकाशन ।
- शर्मा, जनकलाल (२०३९ सं.) *हाम्रो समाज एक अध्ययन*, काठमाण्डौ : साभा प्रकाशन ।
- योगी नरहरिनाथ (२०३८ सं.) *देवभूमि भारत एवं आध्यात्मिक नेपाल*, जुगरात, भारत ।
- Central Bureau of Statistics (2003), *Population Census 2001 Data File* (Kathamandu: Central Bureau of Statistics).
- Central Bureau of Statistics (1995), *Population Monograph of Nepal*, (Kathamandu: Central Bureau of Statistics).
- Central Bureau of Statistics and United Nations Population Fund (2003), *Population Census 2001 National Report* (Kathamadu: CBS and UNFPA).
- Dahal, Dilli Ram (2003), 'Social Composition of the Population: Caste/Ethnicity and Religion in Nepal', *Population Monograph of Nepal*, Volume I (Kathamdu: Central Bureau of Statistics)
- Frick, Tom E.; (1986), *Himalayan Households: Tamang Demography and Domestic Process* (Ann Arbor, Michigan: UMI Research Press).
- Holmberg, David H. (1989), *Oder in Paradox: Myth, Ritual and Exchange Among Nepal's Tamang* (London: Cornell University Press).

- March, Khathryan S. (1979), *The Intermedicity of Women: Female Gender Symbolism and the Social Postion of Women the Tamangs and Sherpas of Highland Nepal*, PhD Dissertation Cornell University.
- March, Khathryan S. (1983), *Weaving, Writing and Gender* Man(NS), 18(4).
- Nepal Gazzett, 2058 B.S, *The Law for the Management of National Foundation for Indigenous Nationalities* published on 2058.10.25 listed 59 IPs.
- Salter Jan and Harka Gurung, (1999), *Faces of Nepal* (Lalitpur: Himal Associasion, Nepal).
- Subedi, Govind (2007), *Institutions, Gender Relations and Poverty: A Sociological Study of Two Villages in Nepal*, a PhD Thesis Submitted to Jawaharlal Nehru Univrsity, New Delhi, India.
- Yadav, Yogendra Prasad (2003), 'Language', *Population Monagraph of Nepal, Volume I* (Kathamdu: Central Bureau of Statistics).

अनुसूची १ प्रश्नावली

१. वडा नं..... २. टोल.....
 ३. घरमूलीको नाम..... ४. घरमूलीको लिङ्ग.....
 ५. कूल परिवार संख्या.....
 ६. एकल परिवार..... संयुक्त परिवार..... वृहत परिवार.....
 ७. उत्तरदाताको नाम र थर ८. उमेर.....
 ९. पेशा..... १०. शिक्षा..... ११. व्यवसायिक शिक्षा वा तालिम

जनसांख्यिक स्थिति बारे

१२. पारिवारिक जनसंख्या विवरण

| क्र.स | नाम | लिङ्ग पुरुष...१ महिला. २ | उमेर | घरमूली संगको नाता | वैवाहिक स्थिति | शैक्षिक स्थिति | हाल स्कूल गएको वा नगएको | पेशा |
|-------|-----|--------------------------------|------|-------------------------|-------------------|-------------------|-------------------------------|------|
| १ | | | | | | | | |
| २ | | | | | | | | |
| ३ | | | | | | | | |
| ४ | | | | | | | | |
| ५ | | | | | | | | |
| ६ | | | | | | | | |
| ७ | | | | | | | | |
| ८ | | | | | | | | |
| ९ | | | | | | | | |
| १० | | | | | | | | |
| ११ | | | | | | | | |
| १२ | | | | | | | | |

१३. खानेपानीको स्रोत के हो ?.....

१४. निम्न लिखित सुविधाहरु तपाईंको घरमा छन् कि छैनन् ?

| सुविधाहरु | छ | छैन |
|-----------|---|-----|
| विजुली | | |
| रेडियो | | |
| टि.भी. | | |
| टवाइलेट | | |

१५. खाना पकाउने स्रोत के हो ?.....

खण्ड १ आर्थिक स्थिति बारे

- १.१ तपाईंको परिवारको जग्गा कति छ ?
 बारी रोपनी..... खेत रोपनी.....
 १.२ तपाईंको जग्गा जमिन कसको नाममा छ ?

१. महिला
 २. पुरुष
 ३. दुवै
- १.३ तपाईंको नाममा पनि छ कि ?
१. छ
 २. छैन
- १.४ यदि भए कति छ ?
- बारी रोपनी.....खेत रोपनी.....
- १.५ महिलाको नाममा जग्गाजमिन हुनुपर्छ जस्तो लाग्छ कि लाग्दैन ?
१. लाग्छ
 २. लाग्दैन
- १.६ तपाईंको जग्गाजमिनबाट उत्पादित खाद्यन्नले तपाईंको परिवारलाई वर्षभरी खान पुग्छ ?
१. पुग्छ
 २. पुग्दैन
- १.७ यदि पुग्दैन भने कसरी पुऱ्याउनु हुन्छ ?.....
- १.८ पशुपालन गर्नु भएको छ ?
१. छ
 २. छैन
- १.९ यदि छ भने घरको हो कि महिलाको पेवापात हो ?
१. घरको परिवारको बाखा.... खसी.....गाई.....गोरु..... पाडापाडी.... कुखुरा.....
 २. महिलाको पेवापात बाखा.... खसी.....गाई.....गोरु..... पाडापाडी.... कुखुरा.....
- १.१० तपाईंको आफ्नै गरगहना छ कि छैन ?
१. छ.....(कति छ रुपैयामा लेख्ने)
 २. छैन
- १.११. तपाईंको आफ्नै नाममा बैंक खाता खोल्नुभएको छ ?
१. छ
 २. छैन
- १.११ तपाईंको परिवारमा आम्दानी कसले राख्ने गर्छ ?
१. पुरुष
 २. महिला
- १.१२ तपाईं कुनै आम्दानी हुने काममा हाल संलग्न हुनुहुन्छ?
- छु.....(कामको प्रकार) छैन...

२. सामाजिक स्थिति बारे

वैवाहिक स्थितिको बारे

- २.१ वैवाहिक अवस्था
- (१) अविवाहित
 - (२) विवाहित
 - (३) सम्बन्ध विच्छेद
 - (४) छुट्टिएर बसेको
- २.२ तपाईंको विवाह गर्दा उमेर कति थियो ?.....
- २.३ विवाह कसरी भएको हो ?
१. मागी.....

२. रोजेर.....
- २.४ राजेर भएको भए अभिभावकको मञ्जुरी थियो ? अविवाहित भए के तपाईं अभिभावकको मञ्जुरी लिनुहुन्छ ?
१. थियो/लिन्छु
 २. थिएन/लिन्न
 ३. भन्न सक्तिन/निश्चित छैन
- २.५ यदि मागी विवाह भएको भए के तपाईंको अभिभावकले तपाईंसँग सहमति लिनु भएको थियो ? यदि अविवाहित भए तपाईंको विवाह अभिभावको मञ्जुरीमा हुनेछ जस्तो लाग्छ ?
१. थियो/लाग्छ
 २. थिएन/लागदैन
- २.६ तपाईं कुन विवाहलाई प्राथमिकता दिनुहुन्छ ?
१. मागी विवाह
 २. प्रेम विवाह
 ३. भागी विवाह
- २.७ तपाईंको परिवारमा छोरीको विवाह गर्दा उसको भावना बुझिन्छ कि बुझिदैन ?
१. बुझिन्छ.
 २. बुझिदैन
- २.८ यदि बुझिदैन भने किन?.....

बालबच्चाको शिक्षा वारेको अवस्था र धारणा

- २.९ तपाईंको घरमा बच्चाहरु कहाँ पढ्छन् ?
१. छोरा सरकारी..... नीजि.....
 २. छोरी सरकारी..... नीजि.....
- २.१० यदि बच्चा विद्यालय पढाउँनु भएको छैन भने बच्चा किन पढाउँनु भएको छैन ?
.....
- २.११ तपाईंको घरमा बच्चाहरु पढ्दा पढ्दै पढ्न छाडेको छ ?
१. छ
 २. छैन
- यदि छ भने
१. केटा
 २. केटी
- किन छाडेको हो ?.....
- २.१२ केटा र केटीमा फरक देख्नु हुन्छ ?
- यदि देख्नु हुन्छ भने किन ?.....
- २.१३ के छोरीलाई शिक्षा दिनु महत्वपूर्ण हो ?
१. सहमत
 २. असहमत
 ३. अत्यन्तै सहमत
- २.१४ तपाईंले आफ्नो छोराछोरी कतिसम्म पढाउँने विचार गर्नुभएकोछ ?
१. छोरा.....
 २. छोरी.....
- २.१५ तपाईंको विचारमा आदर्श बच्चाको संख्या कति हो ?
१. छोरा.....
 २. छोरी.....
 ३. जे भए पनि २ जना
- २.१६ आफ्नो चाहना अनुसार केटाकेटीले विवाह गर्न पाउँनु उनीहरुको अधिकार हो ?

१. सहमत
 २. असहमत
 ३. अत्यन्तै सहमत
- २.१७ हाम्रो समाजमा भएको दाइजो प्रथा तपाईंलाई कस्तो लाग्छ ?.....
- २.१८ एउटा आदर्श श्रीमान कस्तो हुनुपर्छ जस्तो लाग्छ ?
१. धनी
 २. हेर्दा राम्रो
 ३. शिक्षित
 ४. श्रीमतीलाई माया गर्ने
 ५. प्रतिष्ठित
 ६. परिश्रमी
 ७. बाबुआमालाई माया गर्ने
 ८. अन्य(खुलाउने).....
- २.१९ एउटी आदर्श श्रीमती कस्तो हुनुपर्छ जस्तो लाग्छ ?
१. धनीकी छोरी
 २. हेर्दा राम्री
 ३. शिक्षित
 ४. श्रीमानलाई माया गर्ने
 ५. कूलघरानकी छोरी
 ६. परिश्रमी
 ७. सासुससुरालाई आदर गर्ने
 ८. अन्य(खुलाउने).....

परिवार नियोजनको प्रयोग र धारणा बारे

- २.२० परिवार नियोजन बारे थाहा छ ?
१. थाहा छ
 २. छैन
 ३. थोरै थाहा छ
- २.२१ परिवार नियोजनको साधन प्रयोग गरी राख्नुभएको छ ?
१. छ.
 २. छैन
- २.२२ यदि गर्नु भएको छ भने के साधन प्रयोग गर्नु भएको छ ?
साधनको नाम.....
- २.२३ मानौं तपाईंका २ वटा छोरी मात्र छन् भने तपाईं अझै छोराको लागि पर्खनु हुन्छ वा पर्खनुहुन्न ?
१. पर्खन्छु
 २. पर्खिन्न
 ३. थाहा छैन
- २.२४ तपाईं बिरामी भएमा कसरी उपचार गर्नु हुन्छ ?
१. अस्पताल.....
 २. फारफूक.....
 ३. दुबै.....

पुरुष र महिलाको श्रम विभाजन बारे

२.२५ निम्न काम पुरुष वा महिला कस कसले गर्न सक्छन्?

| कामहरु | पुरुष | महिला | दुबै |
|--------------------------|-------|-------|------|
| कपडा सिलाउन | | | |
| सिकर्मी..... | | | |
| ड्राइभर..... | | | |
| डाक्टर..... | | | |
| शिक्षक | | | |
| बालबच्चा हेर्ने.. | | | |
| भात पकाउने, पानी ल्याउने | | | |
| दाउरा घांस गर्ने | | | |

२.२६ तपाईं परिवारका सदस्यहरुले दैनिक कति घण्टा काम गर्नुहुन्छ ? (१० वर्षमाथिकालाई मात्र सोध्ने)

| क्र.सं. | नाम | उत्तरदाताको नाता | लिंग पुरुष...१ महिला...२ | उमेर | दैनिक काम गर्ने समय |
|---------|-----|------------------|--------------------------------|------|---------------------|
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

२.२७ तपाईंको श्रीमान दैनिक के काम गर्नुहुन्छ ?.....

बिहान घण्टा.....

दिउँसो घण्टा.....

बेलुका घण्टा.....

२.२८ तपाईंले गर्ने दैनिक काम

बिहान घण्टा.....

दिउँसो घण्टा.....

बेलुका घण्टा.....

२.२९ यदि महिला र पुरुष काम गरेको समय फरक देखिएमा किन फरक भएको होला?.....

२.३०. तपाईंको घरको कामकाजमा (खाना बनाउने,पानी ल्याउने,भकारो सोर्ने, घांस दाउरा गर्ने आदि)

तपाईंलाई श्रीमानले कतिको सहयोग गर्नुहुन्छ ?

१. गर्नु हुन्छ

२. गर्नु हुदैन

३. अलिअलि गर्नुहुन्छ

४. यदि हुदैन भने किन?.....

२.३१. तपाईंको घरको कामकाजमा (खाना बनाउने,पानी ल्याउने,भकारो सोर्ने, घांस दाउरा गर्ने आदि)

तपाईंलाई परिवारका अन्य सदस्यहरुले कतिको सहयोग गर्नुहुन्छ?

१ . गर्नु हुन्छ.

२. गर्नु हुदैन

३. अलिअलि गर्नुहुन्छ

४. यदि गर्नु हुदैन भने किन?.....

२.३२ पुरुषले जतिकै महिलाको परिश्रमिक ज्याला पाउँछ ?

१. पाउँछ
 २. पाउँदैन
- २.३३ यदि पाउँदैन भने किन ?
१. पुरुषले जति काम गर्न नसकेर
 २. महिलाको अवमूल्यन गरेर.
 ३. चलन नै त्यस्तो भएर

खण्ड ३. राजनीतिक चेतना बारे

- ३.१. तपाईंले नागरिकता बनाउनु भएको छ ?
१. छ.....
 २. छैन.....
 ३. यदि छैन भने किन ?
- ३.२ तपाईंले कसले भनेको ठाउँ भोट दिनुहुन्छ ?
१. श्रीमान.
 २. आफन्त
 ३. नेता
 ४. आफ्नो इच्छा
- ३.३ तपाईं आफ्नो काम गराउन कार्यालय जाँदा आफै प्रमुखसँग सम्पर्क गर्नुहुन्छ कि अरुको सहयोग लिनु हुन्छ ?
१. आफै गर्छु
 २. अरुको सहयोग लिन्छु
 ३. आजसम्म कतै नगएको
- ३.४ लिनुहुन्छ भने किन?.....
- ३.५ तपाईं काठमाण्डौं एकलै गएर आउनु भएको छ ?
१. छ
 २. छैन
- ३.६ तपाईं पत्रपत्रिका, रेडियो ,टि.भी., समाचार कत्तिको पढ्न वा सुन्नु हुन्छ ?
१. हरेकदिन
 २. कहिलेकाहिं
 ३. छैन
- ३.७ यदि छैन भने किन ?
१. उपलब्ध नभएर.
 २. फर्सद नभएर
 ३. महत्व नबुझेर
- ३.८ तपाईंको समाजमा महिलाले पनि पुरुष जस्तै स्वतन्त्र हिडडुल गर्न पाउँछन् कि पाउँदैनन् ?
१. पाउँछन्
 २. पाउँदैनन्
- ३.९ यदि पाउँदैनन् भने किन ?
१. परिवारको बन्देज
 २. समाजको डर
 ३. चलिआएको चलन
- ३.१० महिलाहरु स्वतन्त्रपूर्वक हिडडुल गर्न पाउनुपर्छ भन्ने कुरामा सहमत हुनुहुन्छ वा हुनुहुन्न ?
१. सहमत
 २. असहमत.

- ३.११ महिला वा पुरुष मध्ये कसलाई बढी सम्मान वा आदर गर्नुहुन्छ ?

१. महिला
२. पुरुष
३. दुवै

खण्ड ४. महिलाको निर्णय गर्ने शक्ति बारे

४.१ घरायसी व्यवहार निर्णयहरुमा तपाईंको विचार लिने गरिएको छ कि छैन ?

१. छ
२. छैन

४.२ छ भने कुन कुन प्रक्रियामा ?

१. किनमेल: चल..... अचल.....
२. बेचबिखन चल..... अचल.....
३. ऋण सापट.....

४.३ यदि छैन भने किन ?

१. महिला भएकोले
२. जान्दैन भनेर
३. अशिक्षित भएकोले
४. अन्य(खुलाउने).....

४.४ विभिन्न स्रोतबाट आएको पैसा सबैको सल्लाह अनुसार खर्च गरिन्छ कि गरिदैन ?

१. गरिन्छ.....
२. गरिदैन.....

४.५ यदि गरिदैन भने किन ?.....

४.६ गाउँमा विवाह, वर्तबन्ध जस्ता रमाइलो हुदाँ त्यस्ता ठाउँमा जान श्रीमानलाई सोध्न पर्छ कि पर्दैन ?

१. पर्छ
२. पर्दैन
३. सल्लाह गरेर जान्छु

४.७ कतै रमाइलो भइरहेको ठाउँमा जान, बजार जान, घुम्न जान श्रीमानले तपाईंलाई भनेर जानुहुन्छ कि नभनीकन जानुहुन्छ ?

१. भनेर जानुहुन्छ
२. नभनीकन जानुहुन्छ
३. सल्लाह गरेर जानुहुन्छ

४.८ तपाईंको परिवारमा निम्न लिखित निर्णयहरु मुख्यतः कसले गर्छन् ?

| क्र.सं. | प्रश्नहरु | पुरुष | महिला | दुवै |
|---------|--|-------|-------|------|
| | कृषि सम्बन्धी | | | |
| १. | कृषि बाली लगाउने सम्बन्धी कसले निर्णय गर्छ ? | | | |
| २ | मल विउ किन्ने सम्बन्धमा कसले निर्णय गर्छ? | | | |
| ३ | घरका कुखुरा बाखा बेच्न वा किन्न कसले निर्णय गर्छ ? | | | |
| ४ | परिवारमा प्रत्येक दिनको दैनिक काम देखि अन्य काम कस कसले के के गर्ने भन्ने सन्दर्भमा कसले निर्णय गर्छ ? | | | |
| | घरायसी सामान किनमेल सम्बन्धी | | | |
| ५ | लगाफाटा किन्न कसले निर्णय गर्छ र कसले किन्छ ? | | | |
| ६ | नून, तेल, मसला, चिनी चियापत्ति जस्ता सामान किन्न कसले पहिले कुरा गर्छ र कसले किनेर ल्याउँछ ? | | | |
| ७ | मिठो खाना पकाउन सम्बन्धमा कसले निर्णय गर्छ ? | | | |

| | | | | |
|----|---|--|--|--|
| | बालबच्चा पढाउने सम्बन्धी | | | |
| ८ | बच्चाहरु स्कूल पठाउन वा भर्ना गर्न पहिले कसले कुरा गर्छ र अन्तिम निर्णय कसले दिन्छ ? | | | |
| ९ | बच्चाहरुको किताब कापी किन्न बारे कसले निर्णय कसले गर्छ ? | | | |
| १० | बच्चा वा घरका परिवारका सदस्यहरु विरामी परेमा कहाँ लगेर उपचार गर्ने भन्ने विषयमा कसले कुरा उठाउँछ अन्तिम निर्णय कसले दिन्छ ? | | | |
| | बालबच्चा जन्माउने र परिवार नियोजन सम्बन्धी | | | |
| ११ | कति बच्चा जन्माउने भन्ने जस्ता विषयमा कसले कुरा पहिले उठाउँछ र निर्णय कसले गर्छ ? | | | |
| १२ | परिवार नियोजनका साधनहरु कसले प्रयोग गर्ने र कहिलेदेखि प्रयोग गर्ने भन्ने विषयमा कसले पहिले कुरा उठाउँछ र अन्तिम निर्णय कसले दिन्छ ? | | | |
| १३ | छोरा र छोरीको विवाह गर्ने सम्बन्धमा कसले निर्णय गर्छ : | | | |

खण्ड ५. सांस्कृतिक अवस्था बारे

५.१ तपाईं कुन धर्म मान्नु हुन्छ ?.....

५.२ छोरा वा छोरी जन्मदा गर्ने संस्कार एउटै छ कि फरक छ ?

१. एउटै छ

२. फरक छ

५.३ सासू-ससुरा र आमाबाबु मर्दा जूठो बार्ने चलन छ कि छैन ? यदि छ भने कति दिन ?

| लिङ्ग | सासु-ससुरा | आमा -बाबु |
|-------|------------|-----------|
| महिला | | |
| पुरुष | | |

खण्ड ६. कानूनी चेतना बारे

६.१ महिलाको चाहना अनुसार उनको दाइजोपेवा खर्च गर्न पाउने कानूनी अधिकार बारे थाहा छ ?

१. थाहा छ २. थाहा छैन ३. अलिअलि थाहा छ

६.२ के छोरीले पनि छोरा सरह अंश पाउने कानूनी अधिकार बारे थाहा छ ?

१. थाहा छ

२. थाहा छैन

३. अलिअलि थाहा छ

६.३ यदि श्रीमानले दोस्रो विवाह गरेमा श्रीमतीले श्रीमानसँग अंश माग्न पाउने कानूनी अधिकार बारे थाहा छ ?

१. थाहा छ २. थाहा छैन ३. अलिअलि थाहा छ

६.४ यदि कुनै महिला श्रीमानसँग पारपाचुके गरेमा पनि अंश पाउँछ भन्ने बारे कानूनी अधिकार थाहा छ ?

१. थाहा छ २. थाहा छैन ३. अलिअलि थाहा छ

६.५ श्रीमान श्रीमतीको सल्लाह अनुसार नचाहेको गर्भ फयाक्न पाउने कानूनी अधिकार बारे थाहा छ ?

१. थाहा छ २. थाहा छैन ३. अलिअलि थाहा छ

६.६ तपाईंको विचारमा महिलाले परिवारमा आफ्नो

बढाउन उनलाई के कुराको आवश्यकता पर्छ जस्तो

लाग्छ ?

१. पैत्रिक सम्पत्तिमा अधिकार (अंश)
२. आम्दानीमुलक काम भएमा
 ३. प्रशस्त दाइजो ल्याएमा
 ४. पढेलेखेको भएमा
 ५. माइती खान्दानी भएमा
 ६. आत्मबल भएमा
 ७. छोराछोरी थोरै भएमा
- ६.७ तपाईंको मुख्य मुख्य आवश्यकता के के हुन ?

१. प्रयाप्त परिवारको लागि खाना
२. आफैलाई रोजगारी
३. श्रीमानको रोजगारी
४. आफैलाई शिक्षा
५. आम्दानी मूलक तालिम
६. आफैलाई स्वास्थ्य उपचार
७. बालबच्चालाई स्वास्थ्य उपचार
८. बालबच्चालाई शिक्षा
९. कानूनी उपचार

समुदायका जानकार व्यक्तिहरूसंग लिईने प्रश्नावली

जन्म संस्कार

न्वारान.....भात खुवाई.....छेवर.....गून्यूचोलो.....

विवाह संस्कार बारे :

- कति प्रकारको विवाह हुन्छ ?.....
- विवाह संस्कारमा महिला र पुरुषको के भूमिका हुन्छन् ?
- केटी माग्न जाँदा को आउँछन् ?
- कसले अन्तिम निर्णय दिन्छ ?.....
- बुवा आमाले के के गर्छन् ?
- छोरीको विवाहमा र छोराको विवाहमा के फरक छ ?

मृत्यू संस्कार बारे:

- बूढाबूढी, बच्चा, महिला र पुरुष मृत्यू संस्कारमा फरक छ ?
- छ, भने के के कुरामा फरक छ ?
- बूढाबूढी मृत्यू भएमा.....
- बच्चाहरु मृत्यू भएमा
- महिला मृत्यू भएमा
- पुरुष मृत्यू भएमा
- मृत्यू संस्कारमा महिला र पुरुषको भूमिका के के हुन्छन् ?

कूलदेवता पूजा, चाडपर्व बारे :

- कुन कुन चाडपर्व कुन कुन महिनामा पर्छ ?
- कुन कुन चाडपर्व कसरी मनाइन्छ ?
- चाडपर्वमा महिला र पुरुषको कस्तो भूमिका रहन्छ ?
- कूलदेवता पूजा कुन महिनामा गरिन्छ ?
- प्राय सबै घरको एकै किसिमको हुन्छ कि फरक हुन्छ ?
- कसरी गरिन्छ ? के के चाहिन्छ ?
- पुरुष र महिलाको कस्तो भूमिका रहन्छ ?